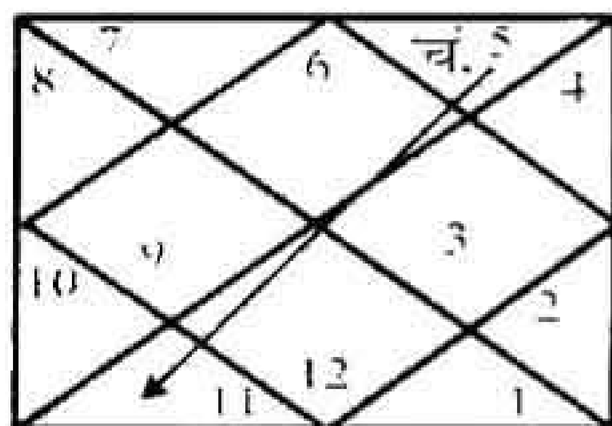
7. **चंद्र+राहु**–विद्या में रुकावट।

8. **चंद्र+केतु**–लाभ में रुकावट।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में



कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां द्वादश भाव में चंद्रमा सिंह राशि (मित्र राशि) में है। चंद्रमा की यह स्थिति 'लाभभंग योग' की सृष्टि करती है। इसमें बालारिष्ट योग एवं बचपन में स्वास्थ्य खराब होने का संकेत मिलता है। जातक एकान्त में निराशावादी चिंतन करता है। जातक जल्दी हताश होता है। जातक यात्राएं अधिक करता है। विदेश यात्रा से विशेष लाभ है। जातक माता-पिता व गुरु की सेवा करने में रुचि रखता है। जातक खर्चीले स्वभाव का होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ चंद्रमा की दृष्टि छठे भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु जरूर होंगे। गुप्त रोग की सभावना भी रहेगी।

निशानी–जातक के किसी अंग में असमानता होगी। उसकी बाईं आंख (Left eye) कमजोर होगी। जातक की विद्या अधूरी छूट जाती है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में यात्राएं सार्थक रहेंगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

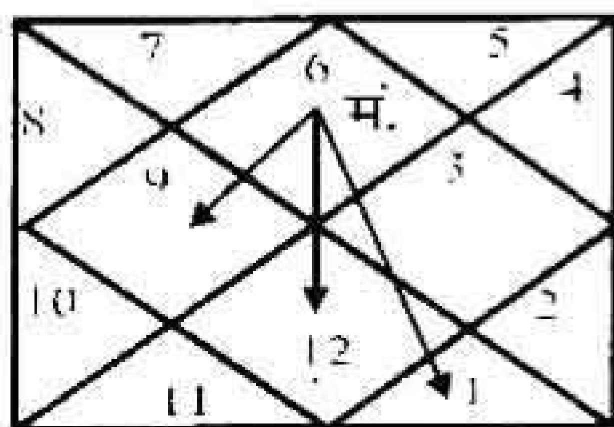
1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 बजे के आस पास होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा। व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। चंद्रमा बारहवें होने से 'लाभभंग योग' बना। फलत: व्यापार में लाभ की कमी महसूस होगी। जातक को नेत्र पीड़ा (बाईं आंख) में रहेगी। पर जातक का कोई काम रुका नहीं रहेगा। दोनों ग्रह की दृष्टि छठे स्थान कुंभ राशि पर होने से जातक ऋण-रोग व शत्रुओं के नाश करने में सक्षम होगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वादश भाव में सिंह राशि होगी। मंगल की यहां उपस्थिति से पराक्रमभंग योग बनेगा तथा चंद्रमा की उपस्थिति से 'लाभभंग योग' बना। परन्तु अष्टमेश मंगल के द्वादश स्थान में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि), छठे स्थान (कुंभ राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक धनी एवं महान पराक्रमी होगा। परन्तु आर्थिक संपन्नता विवाह के बाद आयेगी।
3. **चंद्र+बुध**–लग्नभंग योग के कारण जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–यहां दोनों ग्रहों की इस स्थिति के कारण सुखभंग योग, विवाहभंग योग एवं लाभभंग योग बनेगा। फलत: विवाह में विलम्ब का संकेत है। जातक की माता बीमार रहेगी। वाहन सुख में भी तकलीफ आयेगी। जातक के जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी। फिर भी इस गजकेसरी योग के कारण सभी कार्यों में अंतिम सफलता मिलेगी। कोई भी काम साधन के अभाव में रुका नहीं रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–
6. **चंद्र+शनि**–यात्रा में नुकसान होगा।
7. **चंद्र+राहु**–ऐसे जातक को नींद कम आयेगी।
8. **चंद्र+केतु**–सपने खराब आयेंगे।

❑❑❑

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां प्रथम स्थान में मंगल कन्या (शत्रु) राशि में है। जातक के चेहरे पर फोड़ा-फुन्सी चेंचक के दाग इत्यादि हो सकते हैं। जातक की उन्नति भाईयों के सहयोग से होगी। परन्तु जातक हठी, ईर्ष्यालु एवं कलहकारी स्वभाव का होगा। जातक की विध्वसंक कार्यों में रुचि होगी तथा जातक कामक्रीड़ा में स्त्री को परास्त करेगा। जातक व्यभिचारी होते हुए प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।

दृष्टि–कन्या राशिगत लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक को वाहन का सुख, गृहस्थ का सुख मिलेगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

निशानी–जातक की किस्मत 28 वर्ष की आयु के बाद चमकेगी। ऐसे जातक को माता-पिता के सुख में कमी रहेगी।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक को विभिन्न प्रकार के लाभों की प्राप्ति होगी। जातक को वाहन सुख मिलेगा एवं गृहस्थ सुख की प्राप्ति होती है।

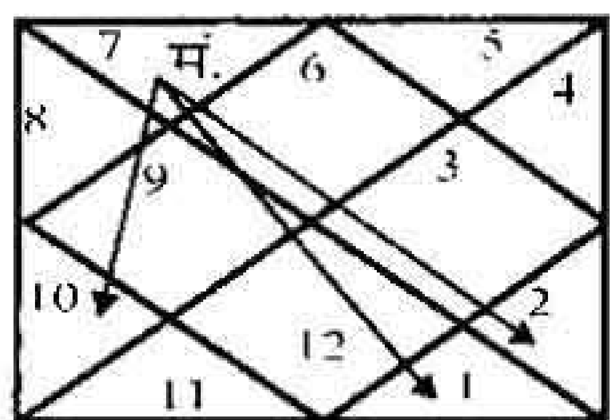
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक क्रोधी किन्तु पराक्रमी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–प्रथम स्थान में कन्या राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ स्थान (धनु राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक दीर्घजीवी तो होगा पर भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति

हेतु सदैव संघर्षशील रहेगा। जातक धनी तो होगा पर धन की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन शुक्र ग्रह की स्थिति से होगा।

3. **मंगल+बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का गृहस्थ जीवन उत्तम होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक अपने पुरुषार्थ से खूब धन कमायेगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा पर उसका व्यक्तित्व विवादास्पद होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक पराक्रमी किन्तु लड़ाकू होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक का गृहस्थ जीवन विवादास्पद होगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां तुला राशिगत द्वितीयस्थ मंगल समराशि में है। ऐसा जातक कामी होता है। जातक की वाणी कटु होती है। धन कमाने की प्रबल उत्कण्ठा में जातक कुछ भी कर सकता है। जातक पराये धन व पराये माल पर बुरी नीयत रखता है। जातक का भाग्योदय जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों में प्राय: विदेश में होता है। जातक की संतान प्राय: उसका कहना नहीं मानती और जातक जीवनसाथी से असंतुष्ट रहता है। जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के पहले संभव नहीं।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि), अष्टम भाव (मेष राशि) एवं नवम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय विलम्ब से होगा। संतान उत्पत्ति भी विलम्ब से होगी। गर्भपात होंगे पर जातक दीर्घजीवी होगा।

निशानी–ऐसा जातक झगड़ालू स्वभाव का होता है।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

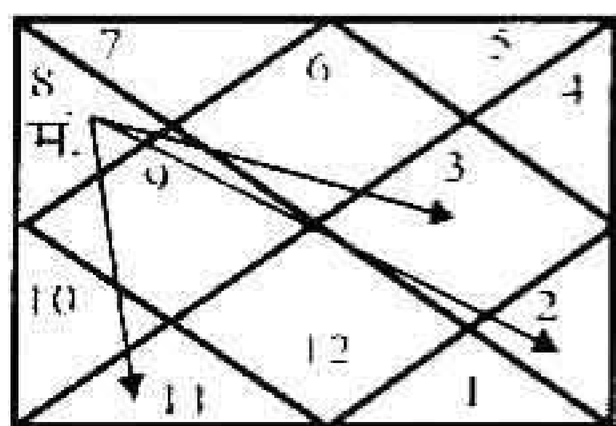
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक की वाणी तेजस्वी होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में तुला राशिगत मंगल एवं चंद्रमा दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम

भाव जो कि मंगल का स्वयं का घर है (मेष राशि) पर होगी। फलत: लक्ष्मी योग के साथ जातक दीर्घजीवी होगा। इस योग में जन्मा जातक दो चरणों में धनाढ्य होने की दिशा में आगे बढ़ेगा। प्रथम विवाह के बाद, द्वितीय प्रथम संतति के पश्चात् जातक आर्थिक सफलता को प्राप्त होगा।

3. **मंगल+बुध**–जातक वाक्पटु होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक की वाणी धार्मिक होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक महाधनी एवं भाग्यशाली होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक महाधनी होगा पर उसे धनहरण (चोरी) का भय रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक को धन की तकलीफ रहेगी।
8. **मंगल+केतु**–जातक को धन संग्रह में बाधा महसूस होगी।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां वृश्चिक राशिगत तृतीयस्थ मंगल स्वगृही है। मंगल तीसरे स्थान का कारक ग्रह भी है। फलत: ऐसा जातक महान पराक्रमी, साहसी, युद्ध में विजयश्री का वरण करने वाला, शत्रुहन्ता एवं तेजस्वी होता है। जातक अपने कुटुम्ब एवं भुजाओं के बल पर जरूरत से ज्यादा विश्वास करता है। पंचमेश शनि की स्थिति यदि खराब हो तो जातक को संतान का अभाव रहेगा। जातक कुटुम्ब का पालक एवं मित्रों का रक्षक होगा। जातक जबान का सच्चा एवं वायदे का पक्का होगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि षष्टम भाव (कुम्भ राशि), भाग्य भाव (वृष राशि) एवं दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। 28 वर्ष की आयु के बाद जातक का भाग्योदय तत्काल होगा।

निशानी–जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।

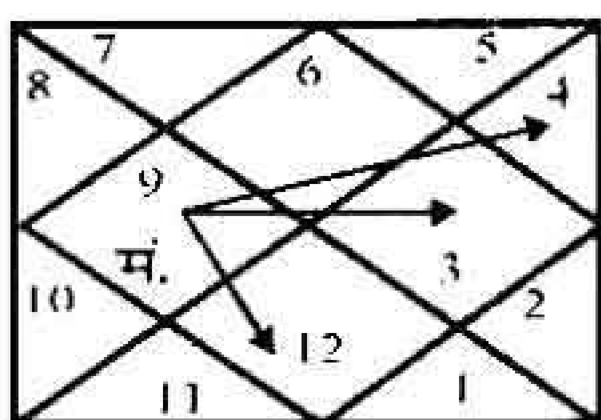
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। उसका भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के अनेक चचेरे भाई होंगे। जातक के छोटा भाई जरूर होगा।

2. **मंगल+चंद्र**—यहां तृतीय स्थान में मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (कुंभ राशि), भाग्य भाव (वृष राशि) एवं दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। यहां महालक्ष्मी योग बनेगा। ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम, धनी, मानी एवं महान पराक्रमी होता है।
3. **मंगल+बुध**—जातक का सरकार में दबदबा रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**—जातक का बड़ा भाई जरुर होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—जातक की बहनें जरूर होंगी।
6. **मंगल+शनि**—जातक को संतति सुख होगा।
7. **मंगल+राहु**—जातक के भाइयों में विवाद होगा।
8. **मंगल+केतु**—मित्र धोखा देंगे।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां मंगल दिक्बली व केन्द्रस्थ है तथा अपनी मित्र धनु राशि में स्थित है। ऐसे जातक का राजनैतिक जीवन सफल होता है। जातक का खुद का मकान एवं वाहन होगा। मंगल चतुर्थ भाव में होने से यह कुण्डली मांगलिक होगी। फलत: जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण हो सकता है। माता-पिता के साथ तथा अपने से उच्च अफसरों के साथ जातक की कम बनेगी। वैचारिक मतभेद रहेंगे। ऐसा जातक दूसरों के बहकावे में शीघ्र आ जायेगा।

दृष्टि—चतुर्थस्थ मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं एकादश भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर विचार कम मिलेंगे। पिता की सम्पत्ति के प्रति जातक उदासीन रहेगा।

निशानी—जातक क्रोधी, हठी व दम्भी स्वभाव का होगा।

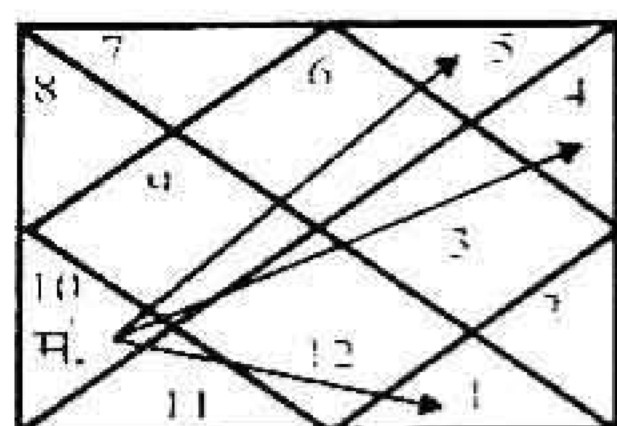
दशा—मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक का चहुंमुखी विकास होगा। जीवनसाथी मिलेगा। नौकरी लगेगी किंवा भूमि लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक की मां बीमार रहेगी।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान में धनु राशिगत चंद्र, मंगल केन्द्रवर्ती होंगे। मंगल यहां दिक्बली होगा एवं चंद्रमा के कारण यामिनीनाथ योग बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (मीन राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं एकादश भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। फलत: इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक की आर्थिक स्थिति में सम्पन्नता विवाह के बाद आयेगी। जातक व्यापार व्यवसाय एवं राजनीति में भी प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी।
4. **मंगल+गुरु**–गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक के पास श्रेष्ठ वाहन होंगे।
6. **मंगल+शनि**–जातक की मामा से कम बनेगी।
7. **मंगल+राहु**–जातक क्रोधावेश में आत्महत्या कर सकता है।
8. **मंगल+केतु**–जातक की मनोवृत्ति उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित कर सकती है।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां पंचमस्थ मंगल अपनी उच्च राशि मकर में है, जहां 28 अंशों में यह परमोच्च का हो जाता है। लालकिताब वालों ने इस मंगल को 'रईसों का बाप-दादा' कहा है। ऐसा जातक बहुप्रपंची होता है तथा एक समय में बहुत से कार्य एक साथ करने का सामर्थ्य रखता है। जातक की कृतत्व शक्ति विलक्षण होती है। जातक का दिमाग कम्प्यूटर की तरह तेज काम करेगा। ऐसा जातक सेक्स के आनन्द में मस्त रहता है। अति सेक्स से जातक का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। उसे गुप्त बीमारी भी लग सकती है।

दृष्टि–पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि), एकादश भाव (कर्क राशि) एवं द्वादश भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसे व्यक्ति की आयु दीर्घ होती है। जातक का राजनीति में वर्चस्व होता है। जातक देशाटन करने वाला एवं खर्चीले स्वभाव का होता है।

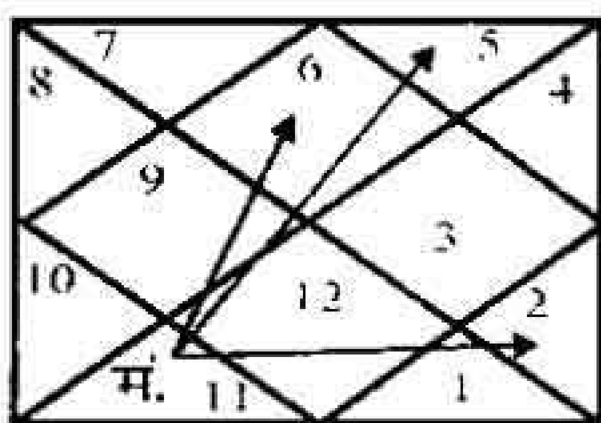
निशानी–जातक के प्राय: तीन पुत्र होते हैं। ऐसे जातक की स्त्री को प्रथम संतति कष्टपूर्ण (सिजेरियन) होने की भविष्यवाणी की जा सकती है।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक का विकास चरमावस्था में होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक को पुत्र सुख होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां पंचम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मेष राशि), लाभ भाव (कर्क राशि) एवं व्यय भाव (सिंह राशि) को देखेंगे। यहां 'लक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा तथा व्यापार-व्यवसाय में यथेष्ट धन अर्जित करेगा। परंतु जातक उदार मनोवृत्ति (खर्चीली प्रवृत्ति) का होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक के यहां पुत्र-पुत्री दोनों होंगे।
4. **मंगल+गुरु**–यहां नीचभंग राजयोग होने के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक प्रबल भाग्यशाली एवं धनी होगा।
6. **मंगल+शनि**–यहां 'किम्बहुना नामक' राजयोग बना। जातक महान ऐश्वर्यशाली होगा। जातक का पुत्र उससे बड़ा नाम कमायेगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक के पुत्र बीमार रहेंगे।
8. **मंगल+केतु**–जातक की संतति पर संकट आयेंगे।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां मंगल कुंभ राशि अपनी शत्रु राशि में है परन्तु अष्टमेश के षष्टम भाव में होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनता है, साथ में पराक्रम भंगयोग भी बना। ऐसा जातक शौर्यवान, पराक्रमी व शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होता है परन्तु उसे जीवन में बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। ऐसे जातक को कुशल राजनीतिज्ञ एवं शासक के रूप में सफलता मिलती है।

दृष्टि–यहां षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भवन (वृष राशि), व्यय भाव (सिंह राशि) एवं लग्न भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय विलम्ब से होगा। देशाटन या शुभ कार्यों में धन खर्च होगा पर अंतिम सफलता निश्चित है।

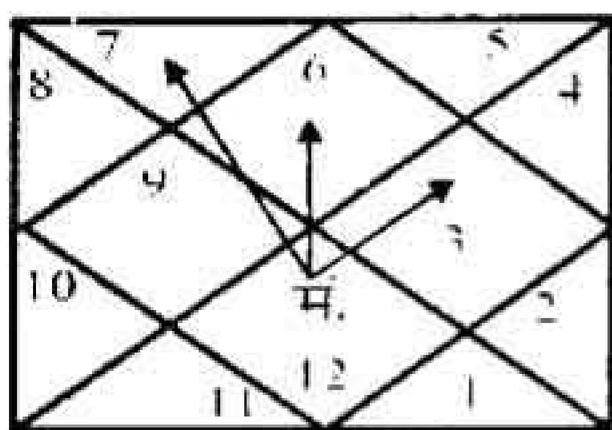
निशानी–जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के पहले नहीं होता। जातक को शत्रु पीड़ा पहुचायेंगे। कोर्ट-केस में धन खर्च होगा।

दशा–मंगल की दशा अन्तर्दशा में रोग, ऋण व दुर्घटना का भय रहेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–यहां विपरीत राजयोग के कारण जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां छठे स्थान में कुंभ राशिगत मंगल के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। चंद्रमा के कारण 'लाभभंग योग' भी बनेगा, परन्तु षष्टमेश मंगल के छठे स्थान में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि), व्यय भाव (सिंह राशि) एवं लग्न भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा पर 'लक्ष्मी योग' के कारण धन की आवक बनी रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा। उसे धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**–लग्नभंग योग के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक को मधुमेह या डायबीटिज होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–विपरीत राजयोग जातक को धनी बनायेगा, पर संघर्ष बना रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक महापराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–ऐसे जातक की मृत्यु प्राय: आत्महत्या के कारण होगी। परन्तु जातक को राजनैतिक उपलब्धि जरूर मिलेगी।
8. **मंगल+केतु**–ऐसा जातक प्राय: जहर खाकर मरेगा अथवा अति नशे से जातक की जान चली जायेगी।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां सप्तमस्थ मीन (मित्र) राशि में व केन्द्र में है। वृश्चिक राशि में पंचम स्थान पर होने के कारण यहां मंगल शुभ फलकारी है। जातक को जीवन में नौकरी-व्यापार, उद्योग एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज में होगी। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। जातक अति कामुक होगा, जिससे उसकी पत्नी परेशान रहेगी। जहां विनम्रता असफल रहेगी। वहां ऐसा जातक अपना काम डांट-डपट से निकाल लेगा। जातक का पुरुषार्थ कभी विफल नहीं जायेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि), लग्न भाव (कन्या राशि) एवं धन भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक उद्यमी होगा। जातक राजपक्ष में प्रभावशाली एवं धनी होगा।

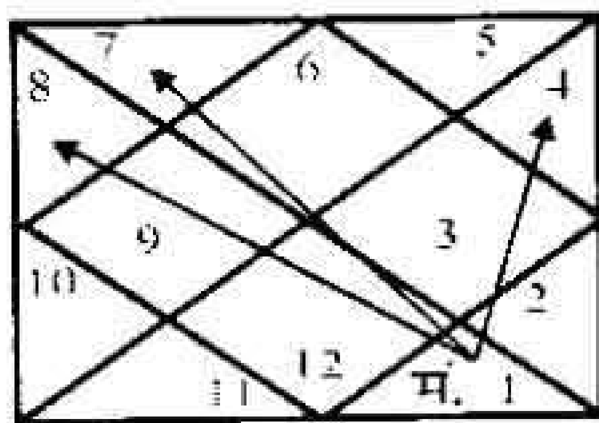
निशानी–जातक का अन्य स्त्रियों के साथ भी शारीरिक सम्पर्क रहेगा। गृहस्थ सुख में कलह या असंतोष रहेगा।

दशा–मंगल की दशा-अन्तंदशा में जातक का चहुंमुखी विकास होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–विवाह में विच्छंद की संभावना है अथवा एक-दो सगाई होकर छूटने की संभावना है।।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में केन्द्रस्थ होंगे। चंद्रमा के कारण 'यामिनीनाथ योग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक धनी होगा। उसे जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक का राज्य सरकार व राजनीति में दबदबा होगा। जातक समाज का धनी, मानी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का ससुराल धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मालव्य योग के कारण जातक महाधनी होगा।
6. **मंगल+शनि**–विवाह सुख में बाधा रहेगी।
7. **मंगल+राहु**–जातक व्यभिचारी होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक व्यभिचार में भटक जायेगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां अष्टमस्थ मंगल मेष राशि में है और स्वगृही है। अष्टमेश के अष्टम में होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। साथ में पराक्रमभंग योग भी बना। ऐसा जातक महान पराक्रमी, लम्बी उम्र वाला एवं शत्रुओं का समूल नाश करने में समर्थ होता है। ऐसे जातक में कार्य करने की विलक्षण प्रतिभा होती है। जिसमें जातक की कीर्ति, पराक्रम एवं

वैभव बढ़ता है। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को प्रबल मांगलिक बनाती है। ऐसे जातक का गृहस्थ जीवन प्राय: कलह कारक रहता है, तथा बच्चे कम होते हैं।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि), धन स्थान (तुला राशि) एवं पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक को बड़े भाई के सुख में कमी रहेगी। जातक का छोटा भाई जरुर होगा। जातक की विद्या में रुकावट जरूर आयेगी।

निशानी–जातक के जीवन साथी की मृत्यु उसके सामने होगी। जातक को बवासीर, मस्सा या खून की बीमारी होगी।

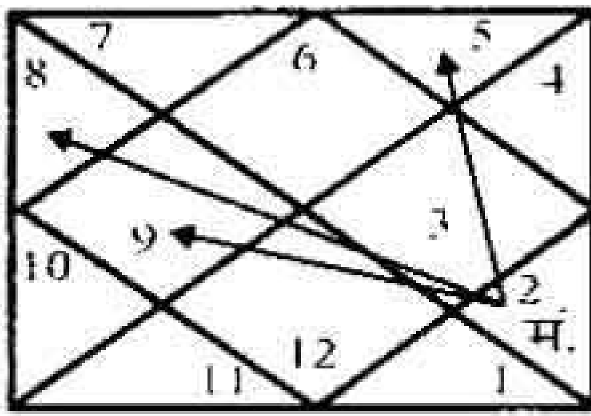
दशा–मंगल की दशा-अंर्तदशा में जातक राजयोग को भोगेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक का रुपया बीमारी में खर्च होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। जहां मंगल स्वगृही होगा। मंगल के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा तथा चंद्रमा के कारण 'लाभ भंग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश के अष्टम भाव में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ भवन (कर्क राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक व्यापार-व्यवसाय के द्वारा यथेष्ट धन कमायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा एवं अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।
3. **मंगल+बुध**–लग्नभंग योग के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–विवाह सुख में बाधा होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–भाग्यभग योग के कारण धन की कमी रहेगी।
6. **मगल+शनि**–विपरीत राजयोग धन-वैभव बढ़ायेगा।
7. **मंगल+राहु**–यहां राहु होने से जातक को अस्त्र-शस्त्र का भय रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–यहां केतु होने से स्नायु रोग, बवासीर, दुर्घटना, रक्त-स्राव का भय रहेगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में

कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां नवमस्थ मंगल वृष (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक अधिकार सम्पन्न धनी व्यक्ति होगा। जातक के स्वयं के पुत्र अवश्य



कीर्तिवान होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा एवं प्राय: स्त्री-मित्र की मदद से आगे बढ़ेगा। विदेश यात्रा भी संभव है। जातक की समाज में बहुत प्रतिष्ठा होगी। भाईयों का सुख भी होगा तथा मित्र-मण्डली भी विस्तृत होगी।

दृष्टि–नवमस्थ मंगल की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं सुख स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे में जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक भाईयों व कुटुम्बी जनों का समर्थक होगा। जातक सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा।

निशानी–ऐसे जातक के पिता की प्रतिष्ठा, स्वास्थ्य व धन की हानि अवश्य होती है। जातक प्राय: पिता का वफादार पुत्र नहीं होता।

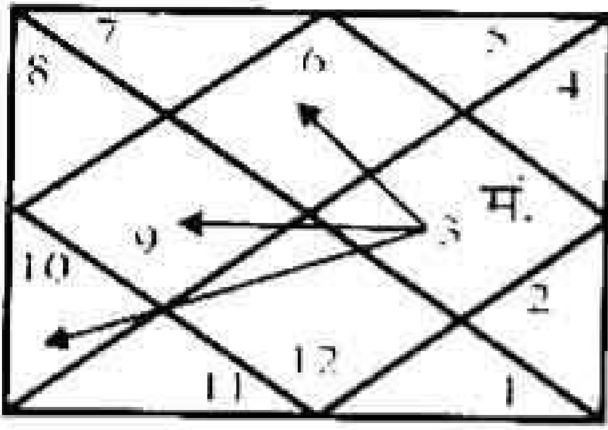
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के भाई व मित्र पराक्रमी होंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। जहां चंद्रमा उच्च का होगा। फलत: महालक्ष्मीयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलत: जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक धनी एवं पराक्रमी होगा एवं उदार मनोवृत्ति (खर्चीले स्वभाव) का व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**–राज्यपक्ष से लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–विवाह के बाद जातक का भाग्योदय निश्चित है।
5. **मंगल+शुक्र**–यदि शुक्र मंगल के साथ हो तो जातक की दो पत्नियां होती हैं। जातक प्राय: विदेश में रहता है।
6. **मंगल+शनि**–जातक का अन्य स्त्री से रहस्यमय संबंध होता है।
7. **मंगल+राहु**–भाग्य में संघर्ष पर भविष्य उज्जवल है।
8. **मंगल+केतु**–थोड़े संघर्ष के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में

कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां दशमस्थ मंगल दिक्बली है। मिथुन (सम)



राशि में है एवं केन्द्रस्थ है तथा कुलदीपक योग बना रहा है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, धनी व्यक्ति होगा परन्तु अपनी प्रशंसा व स्तुति सुनने का शौकीन होगा। जातक प्राय: अपने कार्य-क्षेत्र में साहसी कदम उठायेगा एवं खूब धनी होगा। 'लाल किताब' वालों ने ऐसे मंगल को चींटी के घर भगवान की संज्ञा दी है। ऐसा जातक अपने पूरे खानदान कुटुम्बीजनों का कल्याण करता हुआ परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि), सुख स्थान (धनु राशि) एवं पंचम स्थान (मकर राशि) पर होगी। फलत: ऐसे जातक को आर्थिक, राजनैतिक व भौतिक उन्नति के अवसर प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते रहेंगे। जातक को प्रयत्नों में बराबर सफलता मिलती रहेगी।

निशानी–ऐसा जातक स्वपराक्रम से धन कमाता है। और खुले दिल से खर्च करता है।

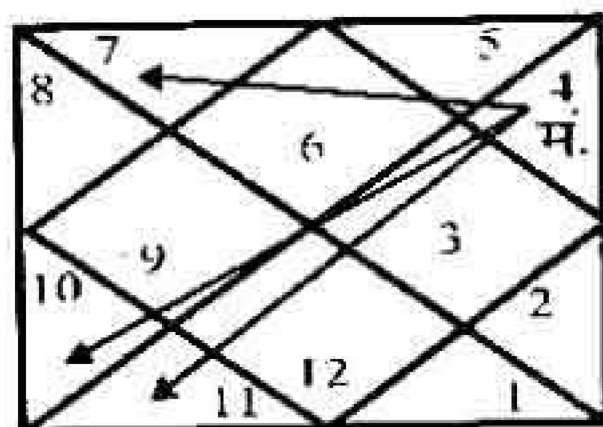
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक राजा तुल्य वैभव एवं उत्कर्ष प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक प्रशासनिक अधिकारी होगा अथवा प्रशासन कार्यों में कुशल होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होकर लग्न स्थान (कन्या राशि), चतुर्थ स्थान (धनु राशि) एवं पंचम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। मंगल यहा दिक्बल को प्राप्त करके अपनी उच्च राशि को देखेगा। चंद्रमा यहा 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। फलत: 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ। ऐसा जातक धनवान होगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक अच्छी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। ऐसे जातक की सही अर्थों में आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होती है।
3. **मंगल+बुध**–जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ यदि बृहस्पति हो तो जातक निम्न वर्ग या मजदूरों का नेता होता है।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक के पास अनेक मकान होंगे।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि हो तो जातक विदेश में व्यापार करेगा और साहसी होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक राजकाज में बाधा महसूस करेगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां एकादश स्थान में मंगल अपनी नीच कर्क राशि में है तथा 28 अंशों में यह परम नीच का हो जाता है। ऐसे जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं का लाभ सहज में प्राप्त होता रहता है। ऐसा जातक स्वाभिमनी होता है पर उसे ज्येष्ठ भ्राता का सुख नहीं होता। जातक होशियार व अमीर होता है तथा प्राय: उद्योगपति होता है तथा उच्च वर्ग में अपनी प्रतिष्ठा व प्रभाव का दबदबा बनाये रखता है।

दृष्टि–एकादशस्थ मंगल की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं षष्टम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक को धन संग्रह में कठिनाई, विद्याध्ययन में कठिनाई एवं शत्रु नाश में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

निशानी–जातक पुत्रवान होगा। उसे पुरुष एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी।

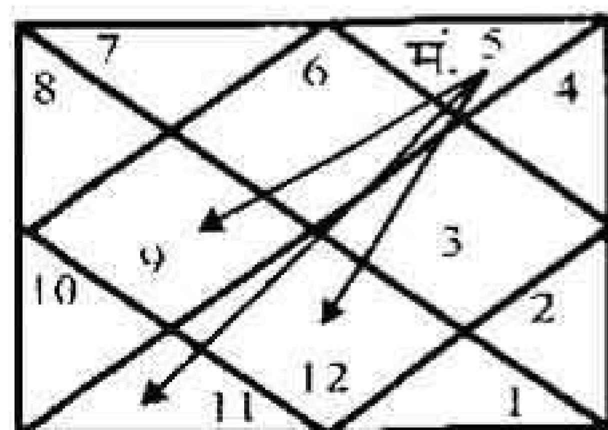
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। जातक धनवान होगा। जातक प्रजावान होगा एवं उसका पराक्रम बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के उद्योग बीमार रहेंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। कर्क में जहां चंद्रमा स्वगृही होगा वहीं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। फलत: यहां 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (तुला राशि) पंचम भाव (मकर राशि) एवं छठे भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। अपने शत्रुओं का मान भंग करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद ही होगी।

3. **मंगल+बुध**–लाभांश विवादास्पद रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–नीचभंग राजयोग के कारण जातक करोड़पति होगा।
5. **मंगल+शनि**–जातक महाधनी होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक संतानवान होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक झगड़ालू प्रवृत्ति का होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक की उन्नति में लगातार बाधाएं आयेगी।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में



कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां द्वादश भावस्थ मंगल सिंह (मित्र) राशि में है। अष्टमेश के द्वादश में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होती है, साथ ही पराक्रमभंग योग भी बनता है। ऐसा जातक अत्यधिक पराक्रमी, साहसी व क्रोधी होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को मांगलिक बनाती है। फलत: ऐसे जातक में धैर्य की कमी रहेगी। जिसके कारण वह प्राय: अपने भाई-बहन व पत्नी से उलझता रहेगा। प्राय: जाति व समाज में प्रतिष्ठा का हानि के अवसर उपस्थित होते रहेंगे।

दृष्टि–द्वादशस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि), षष्टम भाव (कुम्भ राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) पर रहेगी, फलत: जातक मकान-वाहन सुखों से युक्त होगा पर शत्रु जरुर रहेंगे। गृहस्थ जीवन विवादास्पद रहेगा।

निशानी–जातक के पुनर्विवाह की संभावना प्रबल रहती है। जातक के जीवनसाथी की मृत्य उसके सामने हो जायेगी। यदि सातवें या आठवें भाव में अन्य पाप ग्रह हों तो पहली पत्नी के होते हुए भी जातक की दूसरी पत्नी होगी।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक को मिश्रित परिणाम मिलेंगे। धन खर्च होगा। शत्रु बढ़ेंगे। सुख की प्राप्ति होगी पर दु:ख भी साथ में मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–नेत्र-पीड़ा अवश्य होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वादश भाव में सिंह राशि होगी। मंगल की यहां उपस्थिति से पराक्रमभंग योग बनेगा तथा चंद्रमा की उपस्थिति से 'लांभभंग योग' बना। परंतु

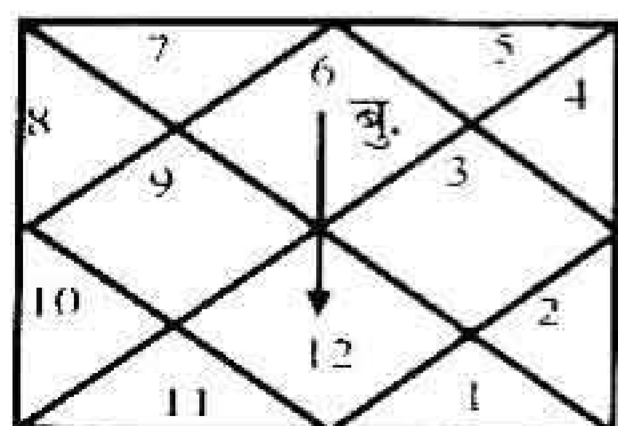
अष्टमेश मंगल के द्वादश स्थान में जाने से विमल नाम विपरीत राजयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि), छठे स्थान (कुंभ राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक धनी तथा महान पराक्रमी होगा। परन्तु आर्थिक संपन्नता विवाह के बाद आयेगी।

3. **मंगल+बुध**–सरकार से दण्डित होने का योग है।
4. **मंगल+गुरु**–जातक धार्मिक आचरण वाला होगा।
5. **मंगल+शनि**–जातक विलासी तथा लापरवाह होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक जेल जायेगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक विदेश यात्रा में कष्ठ उठायेगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक की यात्राएं मुसीबत का कारण बनेंगी।

❑❑❑

कन्यालग्न में बुध की स्थिति

कन्यालग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां लग्नस्थ बुध कन्या राशि में होगा जो कि उसकी उच्च राशि है। बुध यहां 15 अंशों तक परमोच्च एवं 16 से 20 अंशों तक मूलत्रिकोण का कहलाता है। बुध की इस स्थिति के कारण क्रमश: कुलदीपक योग, भद्रयोग एवं पद्मसिहांसन नामक योग बनता है। बुध यहां 'दिग्बली' भी है। ऐसा जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं धनवान होता है। ऐसा जातक विद्या व्यवसनी, विद्वान एवं राजनीति में कुशल होकर उच्च पद को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। ऐसा जातक जिस क्षेत्र में भी कार्य करेगा, उस क्षेत्र में शीर्ष पद प्राप्त करेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक की पत्नी आज्ञकारी, धर्मभीरु व पतिव्रता होगी।

निशानी–इनके व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण होता है, जिसके कारण अंजान से अंजान व्यक्ति भी इनकीओर आकृष्ट हो जाता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी। उसका भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। प्रथम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध

के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां उच्च का होकर 'भंगयोग व कुलदीपक योग' की सृष्टि करेगा। यहां पर यह युति उत्तम फल (राजयोग) को देने वाली होगी। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होगा तथा राजातुल्य ऐश्वय, पराक्रम एवं वैभव को भोगेगा। जातक धनवान होगा। बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। अपने कुल-परिवार जाति का मुखिया एवं अग्रगण्य व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक प्रखर बुद्धिमान होगा पर अपने निर्णय बदलते रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक का पराक्रम अत्यन्त तेजस्वी होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक मर्यादित व्यवहार वाला और धार्मिक होगा।
5. **बुध + शुक्र**–जातक महाभाग्यशाली एवं धनी होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक की संतति उत्तम होगी।
7. **बुध + राहु**–जातक प्रत्युत्पन्न मति वाला, हठी व्यक्ति होगा।
8. **बुध + केतु**–जातक कीर्तिवान् एवं तेजस्वी होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में

कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। द्वितीय स्थान में बुध तुला राशि का होगा। ऐसा जातक सबको तारने वाला, हाजिर जबाब, प्रत्युत्पन्न मति वाला, धनवान एवं सुखी होता है। ऐसा जातक जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख व ऐश्वर्य को सहज ही प्राप्त करता है। ऐसा जातक धन कमाने में होशियार, सावधान एवं मितव्ययी होता है।

दृष्टि–द्वितीय भावगत बुध की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक की उम्र लम्बी होगी।

निशानी–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा। स्वास्थ्य लाभ भी ठीक रहेगा।

दशा–

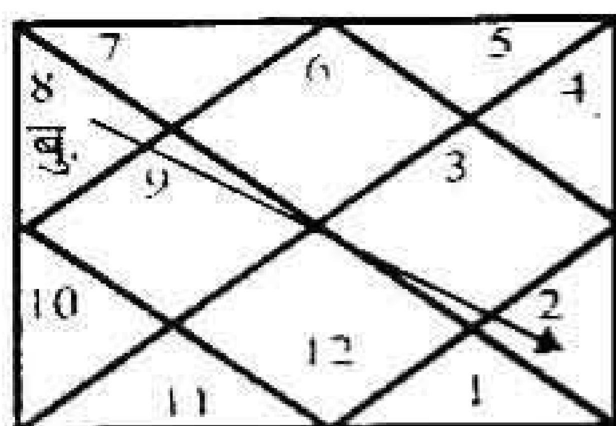
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। द्वितीय स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध

के साथ युति होगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा एवं धनवान भी होगा। जातक अपने स्वयं के पराक्रम एवं पुरुषार्थ से धन कमाता हुआ आगे बढ़ता है। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा रोग (बीमारी) से लड़ने की क्षमता रखता हुआ दीर्घजीवी होगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक की वाणी विनम्र होगी।
3. **बुध + मंगल**–जातक अन्तकपटी होगा। जातक की वाणी कपटपूर्ण होगी।
4. **बुध + गुरु**–जातक धार्मिक-दार्शनिक व आध्यात्म प्रेमी होगा।
5. **बुध + शुक्र**–जातक महाधनी होग।
6. **बुध + शनि**–जातक महाधनी होगा जातक की संतति भी धनवान होगी।
7. **बुध + राहु**–धन के धड़े में छेद होने पर भी रुपया आता रहेगा।
8. **बुध + केतु**–धन संग्रह में बाधा महसूस होगी पर अंतिम रुप से धनसंग्रह विवेकपूर्ण कार्यों में होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में



कन्यालग्न मे बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। तृतीय स्थान में स्थित बुध वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक तेज बुद्धि वाला होगा। जातक लिखन-पढ़ने का शौकीन होगा। ऐसा जातक जो कार्य-प्रारम्भ करता है, उसे समाप्त करके ही दम लेता है। ऐसे जातक को पिता, सहोदर (भाई-बहनों) का सुख मिलता है। जातक को नौकरी-व्यापार-व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता रहेगा। जातक बुद्धि बल एवं मित्रों के सहयोग से धन कमायेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ बुध की दृष्टि भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। इससे भाग्य व धर्म का उन्नयन होगा। जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु तक होता है।

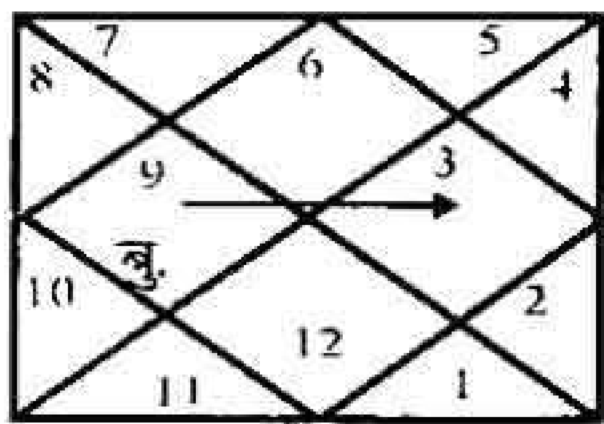
निशानी–जातक को भाई-बहन का पूर्ण सुख मिलेगा।

दशा–बुध की दशा अन्तरदशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा व नौकरी लगेगी। व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। तृतीय स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान व पराक्रमी होगा। जातक को मित्र एवं परिजनों से लाभ होगा। जातक अपने बुद्धिबल से 24 वर्ष की आयु तक अपना उन्नति कार्य निश्चित कर लेगा। जातक धनी व्यक्ति होगा तथा समाज में अपने कार्यों से अपनी पहचान अलग से बनायेगा।
2. **बुध + चंद्र**–चंद्रमा नीच का होने से कुटम्बीजनों में वैमनस्य रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–मंगल स्वगृही होने से भाई-बहनों का सुख होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक के मित्र युवा एवं वृद्ध दोनों होंगे।
5. **बुध + शुक्र**–जातक भाग्यशाली होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक की संतति उत्तम होगी।
7. **बुध + राहु**–भाईयों में विवाद रहेगा।
8. **बुध + केतु**–जातक का पराक्रम-यश तेज रहेगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कन्यालग्न मे बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। चतुर्थ भावस्थ बुध धनु (सम) राशि में है। बुध की यह स्थिति कुलदीपक योग, पद्मसिंहासन योग की सृष्टि करती है। जातक शिक्षा शास्त्री या राजनीतिज्ञ होगा। जातक अपने कर्मो से पुरुषार्थ और परिश्रम से महानता के पद पर पहुंचेगा। जातक में शिष्टाचार, अध्यात्म एवं दार्शनिक तत्त्व की प्रबलता होगी। जातक गणक रुप में ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त करेगा। अपने कुटुम्बी-परिवार का नाम दीपक के सामन रोशन करेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावस्थ बुध की दृष्टि अपने ही घर दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक को पैतृक सम्पत्ति, जमीन-जायदाद मिलेगी।

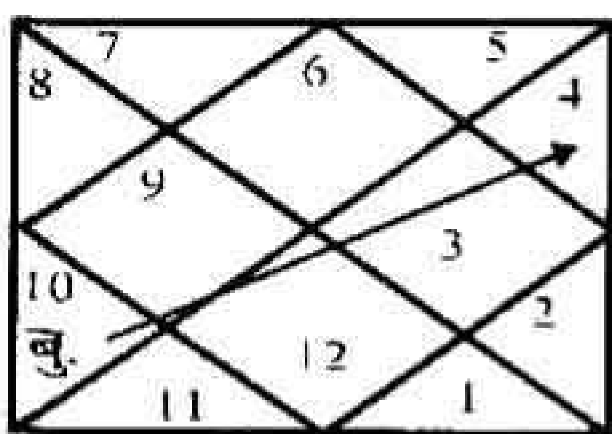
निशानी–जातक के वाहन और फोन जरुर होगा।

दशा–बुध की दशा-अंर्तदशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। उसे सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं प्राप्त होंगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। चतुर्थ स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध के केन्द्रवर्ती होने के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक बुद्धिमान होगा। जातक ज्योतिष, तंत्र व आध्यात्मिक विद्या का जानकार होगा। जातक उत्तम-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक के पास एकाधिक वाहन रहेंगे व उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक व्यापार-व्यवसाय में कमायेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक को माता-बहन का सुख होगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक को वाहन सुख मिलेगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक के पास एकाधिक वाहन होंगे। जातक महान ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **बुध+ शुक्र**–जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक की संतति उत्तम होगी।
7. **बुध + राहु**–जातक की मां बीमारी होगी।
8. **बुध + केतु**–वाहन दुर्घटना, विस्फोट, अग्निकाण्ड का भय रहेगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



कन्यालग्न मे बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। पंचमस्थ बुध यहां मकर (सम) राशि में है। लालकिताब वालों ने इस बुध को 'पीर का आशीर्वाद' कहा है। पंचम भाव विद्या व बुद्धि का कारक भाव है। यहां बुद्धि प्रदाता बुध की उपस्थिति से जातक विद्यावान, बुद्धिमान होगा। उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि (Educational Degree) मिलेगी। वह प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता है। जातक प्रजावान होगा। उसे संतान सुख भी उत्तम मिलेगा। जातक मेडिकल लाईन, कम्प्यूटर लाईन में ज्यादा सफल होगा। ऐसा जातक सलाहकार मंत्री के रुप में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक को बड़े भाई, माता-पिता, धन-दौलत का पूर्ण सुख मिलेगा।

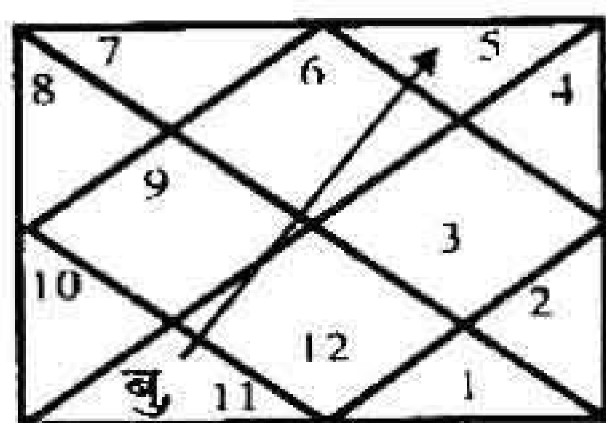
निशानी–जातक को प्रथम कन्या होगी। जातक के अनेक बच्चे होंगे।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का चहुमुखी विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। पंचम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में स्थित 'कर्क राशि' को उत्पीड़ित करेगा, जो बुध का शत्रु राशि है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक के कन्या संतति अधिक होगी।
3. **बुध + मंगल**–जातक की संतति पराक्रमी होगी।
4. **बुध + गुरु**–जातक को पुत्र रत्न की प्राप्ति अवश्य होगी। कन्या योग भी है।
5. **बुध + शुक्र**–कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**–दो कन्या एवं पांच पुत्रों का योग है यदि परिवार नियोजन न हुआ तो।
7. **बुध + राहु**–पुत्र प्राप्ति में रुकावट संभव।
8. **बुध + केतु**–संतति में बाधा एकाध गर्भपात संभव।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में



कन्यालग्न मे बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां छठे स्थान में बुध कुम्भ (सम) राशि का होगा। बुध के छठे जाने से 'लग्नभंग योग' तथा 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक व्याधि ग्रस्त रहता है। शिक्षा प्राप्ति के समय बीच-बीच में रुकावट संभव है। लालकिताब वालों ने इस

जातक को 'दिल का राजा' कहा है। ऐसा व्यक्ति दिल का साफ होता है। मन में कुछ नहीं रखता।

दृष्टि–षष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक का धन ऋण, रोग व शुत्र का मुकाबला करने में खर्च होता रहेगा।

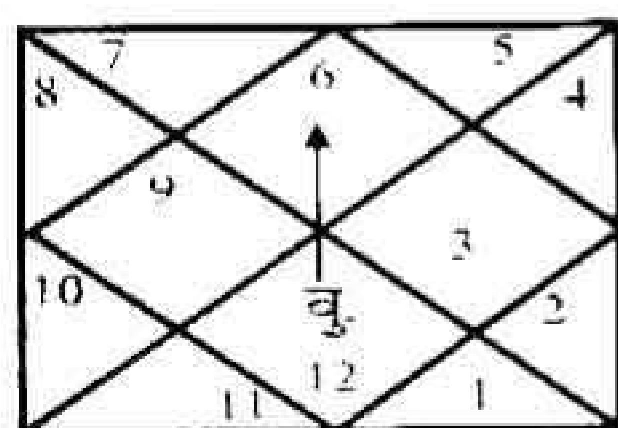
निशानी–ऐसा जातक कलह प्रिय एवं निष्ठुर भाषी होता है। जातक मानसिक श्रम में खोया रहता है। शारीरिक श्रम इसके वश की बात नहीं होती।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। छठे स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः व्ययेश सूर्य की लग्नेश+धनेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होकर व्यय स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बुध छठे स्थान पर जाने से 'लग्नभंग योग', 'राजभंग योग' बना। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक बुद्धिमान होगा। जातक धनवान होगा पर परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। सरकार में रुपया अटक जायेगा।
2. **बुध + चंद्र**–लाभ में रुकावट, परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
3. **बुध + मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **बुध + गुरु**–विवाह से विलम्ब या गृहस्थ सुख में बाधा होगी।
5. **बुध + शुक्र**–भाग्य में लगातार रुकावट आयेगी।
6. **बुध + शनि**–यदि शनि साथ हो तो उत्तेजना से पागलपन का खतरा रहता है।
7. **बुध + राहु**–यहां पर राहु के कारण जातक उन्मादी या पागल हो सकता है।
8. **बुध + केतु**–जातक का दिमाग अस्थिर होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में



कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। सप्तम भव में बुध मीन (नीच) राशि का होगा। यहां 16 से 20 अंशों तक बुध परम नीच का हो जाता है। बुध की यह स्थिति 'कुलदीपक योग' एवं 'पद्मसिंहासन योग' की सृष्टि करती है। ऐसा जातक

एवं उसका जीवनसाथी दोनों ही सुन्दर व आकर्षक होंगे। जातक का विवाह अमीर स्त्री से होगा। जातक कानून, ज्योतिष, मंत्र-तंत्र का जानकार होते हुए भी सदाचारी एवं मिलनसार होगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ बुध लग्न स्थान अपने घर कन्या राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। लग्नेश लग्न को देखेगा फलत: लग्नाधिपति योग बनेगा। यह एक राजयोग है। जो जातक के परिश्रम को सार्थक कर, उसे ऊंचा नाम देगा।

निशानी—जातक का जीवन साथी वफादार होगा एवं विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।

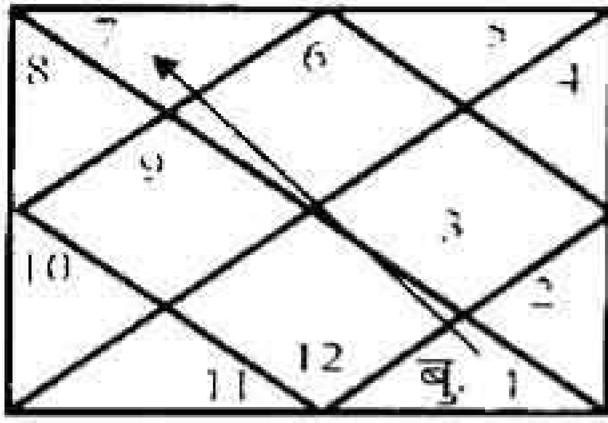
दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। जातक का चहुमुखी विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। सप्तम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बुध नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा एवं 'लग्नाधिपति योग' भी बनेगा। फलत: जातक बुद्धिमान तथा धनवान होगा। जातक जिस कार्य में हाथ डालेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित एवं धनी व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—जातक की पत्नी अति सुंदर होगी।
3. **बुध + मंगल**—जातक की पत्नी कुछ झगड़ालू होगी।
4. **बुध + गुरु**—नीचभंग राजयोग के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **बुध + शुक्र**—नीचभंग राजयोग के कारण जातक राजा के समान विलासी जीवन जीयेगा।
6. **बुध + शनि**—जातक महाधनी होगा। जातक की संतान उत्तम होगी।
7. **बुध + राहु**—विवाह सुख में बाधा।
8. **बुध + केतु**—पत्नी से मनमुटाव रहेगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में

कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल



योगकारक ग्रह है। अष्टमस्थ बुध यहां मेष राशि में होगा। फलत: लग्नभंग योग एवं राजभंग योग की सृष्टि होगी। जातक को अपने जीवन में अनेक कष्टों व दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। जातक के व्यक्तित्व, दैहिक सौन्दर्य, नौकरी-व्यापार में हानि होगी। फिर भी जातक विद्वान होगा एवं अनेक विषयों का जानकार होगा। जातक के विचार क्रियात्मक शक्ति से मुक्त होंगे। जातक बुद्धिबल से शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक का धन रोगोपचार व शत्रुनाश में खर्च होगा। परन्तु कुटुम्ब के प्रति आकर्षण बना रहेगा।

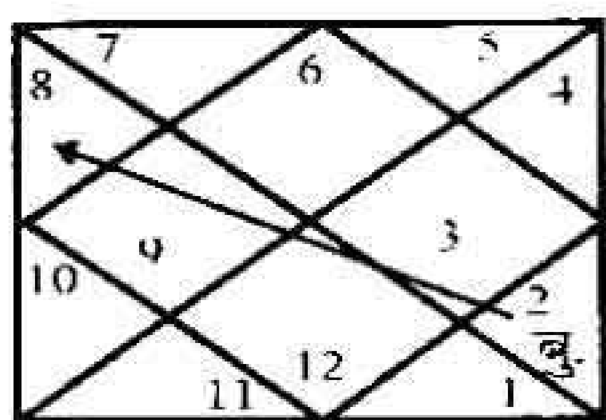
निशानी–जातक षड्यंत्रकारी एवं अदूरदर्शी होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को परेशानी उठानी पड़ेगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। अष्टम् भाव में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य का लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। दोनों ग्रह धन भाव को देखेंगे। फलत: यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। बुध के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनेगा। फलत: जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। मेहनत का फल नहीं मिलेगा फिर भी जातक बुद्धिमान होगा, व्ययेश सूर्य बारहवें जाने से 'विमल योग' बना, ऐसा जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक का मानसिक चिंतन अवरुद्ध रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
4. **बुध + गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा। द्विभार्या योग।
5. **बुध + शुक्र**–भाग्य में रुकावट होगी।
6. **बुध + शनि**–संतान में रुकावट होगी।
7. **बुध + राहु**–दुर्घटना योग।
8. **बुध + केतु**–शल्य चिकित्सा की प्रबल संभावना बनी रहेगी।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में



कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों की अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां नवमस्थ बुध वृष राशि में होगा। लग्नेश बुध का भाग्य स्थान होने से जातक भाग्यशाली होता है। जातक की रुचि संगीत-साहित्य एवं वैज्ञानिक अन्वेषण में होती है। जातक अपने कार्यक्षेत्र में लोकप्रिय होता है तथा बड़ा भारी नाम कमाता है। जातक माता-पिता, गुरु का भक्त, आज्ञाकारी, स्त्री संतान, भाई-बहन के सुखों से युक्त व्यापार प्रिय व्यक्ति होता है। जातक समाज का अग्रपूज्य धनी व्यक्ति होता है।

दृष्टि–नवमस्थ बुध्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा तथा इष्ट-मित्रों, कुटम्बीजनों का शुभचिंतक होगा।

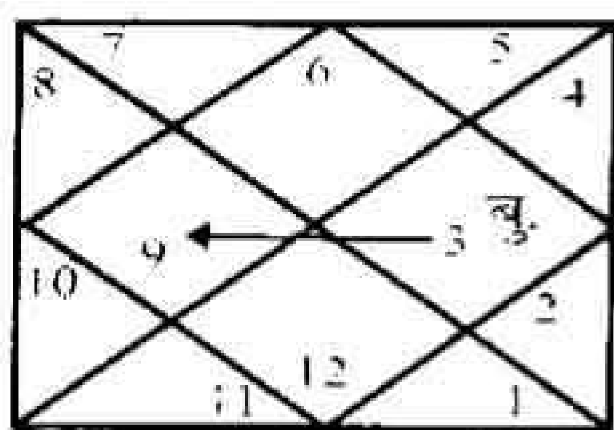
निशानी–ऐसा व्यक्ति राजनीति में प्रभावशाली होगा। उसकी जबान से निकला हुआ शब्द प्राय: सच होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। नवम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। दोनों ग्रह यहां बैठकर पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली तथा पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति भी मिलेगी। जातक को मित्रों, परिजनों का सहयोग मिलता रहेगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक महाभाग्यशाली होगा।
3. **बुध + मंगल**–भाग्योदय 28 वर्ष बाद होगा।
4. **बुध + गुरु**–विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।
5. **बुध + शुक्र**–यदि यहां शुक्र हो तो जातक अत्यधिक धनी होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक महाधनी होगा।
7. **बुध + राहु**–जातक का भाग्य तेजस्वी होगा।
8. **बुध + केतु**–संघर्ष के साथ भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में



कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां दशमस्थ बुध स्वगृही होगा। बुध की यह स्थिति क्रमश: कुलदीपक योग, पद्मसिंहासन योग एवं भद्रयोग की सृष्टि करती है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली, पुरुषों में प्रधान व श्रेष्ठ पद को प्राप्त करने वाला महत्वकांक्षी व्यक्ति होगा। ऐसा जातक अपने से बड़े व्यक्ति के प्रति वफादार एवं विनम्र होता है। जातक गुणग्राही प्रवृत्ति का होता है। जातक गुणवान एवं विद्वानों का आदर करता हुआ मेहमान प्रिय व्यक्ति होता है।

दृष्टि–दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को मकान एवं वाहन का पूर्ण सुख तथा पिता की सम्पत्ति भी मिलेगी।

निशानी–जातक मीठी एवं विनम्र वाणी का अधिपति होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को ऊंचा पद एवं धन-वैभव की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

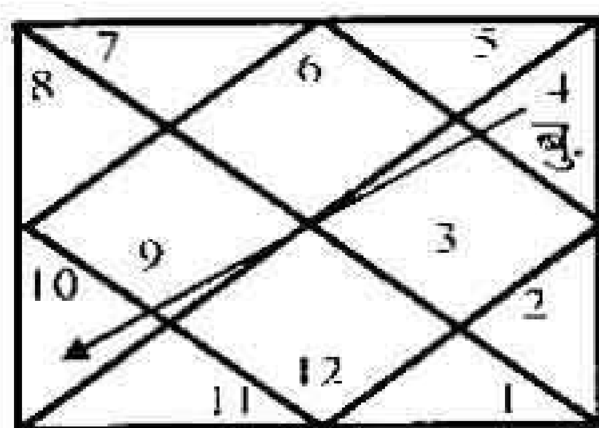
1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। दशम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश-दशमेश के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा। फलत: 'भद्रयोग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि हो रही है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां यह युति ज्यादा खिलेगी। जातक बुद्धिमान तथा राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। राज्य में उसका वर्चस्व होगा। खुद की गाड़ी बंगला होगा। जातक कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक राजा के समान पराक्रमी एवं बुद्धिमान होगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
4. **बुध + गुरु**–यहां बृहस्पति जातक को सरकार व राजा के पास प्रधान पद पर नियुक्त करायेगा पर संतति की चिंता बनी रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**–यदि यहां शुक्र हो तो जातक की पत्नी अत्यधिक सुन्दर एवं धनवान होगी।

6. **बुध + शनि**–यदि यहां शनि साथ हो तो जातक परिश्रमशील. रीडर. सम्पादक एवं लिपिक होगा।

7. **बुध + राहु**–जातक राजा के समान हठी व जिद्दी होगा।

8. **बुध + केतु**–जातक का प्रत्येक कार्य कुछ रुकावट के साथ होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में



कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। एकादश स्थान में बुध कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक अनेक विद्याओं का जानकार बहुधंधी होता है। जातक प्राय: टैक्नीकल व इंजीनियरिंग कार्यों में ज्यादा रुचि रखता है। जातक जलीय कार्य, विदेश से लाभ कमाता है। जातक प्राय: उद्योगपति होता है तथा अनेक विश्वासनीय नौकरों से युक्त होता है। ऐसा जातक राजनीति में भी सफलता प्राप्त करता है। जातक उदारवादी, मिलनसार एवं सहिष्णु होता है।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित बुध की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक विद्यावान होता है। प्राय: कन्या संतति अधिक होती है।

निशानी–ऐसा व्यक्ति प्रजावान होता है। प्राय: भाग्योदय 34 वर्ष की आयु के बाद होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। एकादश स्थान में कर्क राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान तथा शिक्षित होगा। उसकी संतान भी शिक्षित होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जातक व्यापारी होगा। उसकी रुचि व्यापार में होगी। जातक को व्यापार से धन की प्राप्ति होगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक महाधनी होगा।

3. **बुध + मंगल**–जातक पराक्रमी होगा।

4. **बुध + गुरु**–जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।

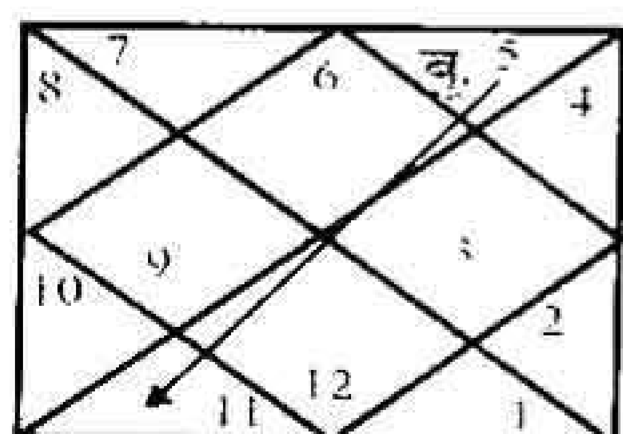
5. **बुध + शुक्र**–जातक उद्योगपति होगा।

6. **बुध + शनि**–जातक महाधनी होगा। फैक्ट्री उद्योग का स्वामी होगा।

7. **बुध + राहु**–जातक के कार्य में, लाभ में दिक्कतें आयेंगी।

8. **बुध + केतु**–जातक के कार्य में संघर्ष रहेगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में



कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां द्वादशस्थ बुध सिंह (मित्र) राशि में होगा। बुध की यह स्थिति 'लग्नभंग योग' व 'राजभंग योग' की सृष्टि करती है। जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला एवं थका हुआ सा रहेगा। जातक को परिश्रम का फल कम मिलेगा। लालकिताब वालों ने इस बुध को नेक स्वभाव मगर किस्मत का मारा कहा है। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। नेक कार्य, धार्मिक कार्य व सामाजिक कार्य पर रुपया खर्च करता रहेगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत बुध की दृष्टि षष्टम् स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक को गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग परेशान करते रहेंगे।

निशानी–जातक के बच्चे कम होंगे।

दशा–बुध की दशा- अंतर्दशा में जातक को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। द्वादश भाव में सिंह राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य स्वगृही होगा। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। बलवान खर्चेश की लग्नेश के साथ युति जातक को खर्चीले स्वभाव का बनायेगी। जातक राज्य क्षेत्र में उच्च पद तथा प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा। जातक धार्मिक यात्राएं, तीर्थाटन, देशाटन

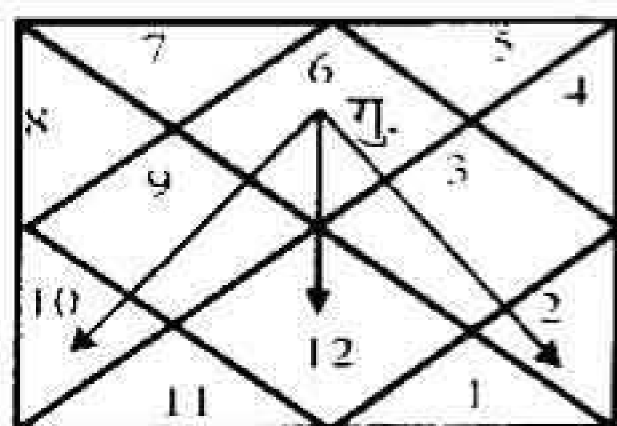
करेगा। व्ययेश सूर्य के बारहवें जाने से 'विमल योग' बना, ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक का पराक्रम भंग होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक के विवाह में बाधा, विलम्ब विवाह योग भी है।
5. **बुध + शुक्र**–जातक के भाग्योदय में बाधा आयेगी।
6. **बुध + शनि**–संतति में बाधा संभव है।
7. **बुध + राहु**–यात्राकाल में चोरी होगी।
8. **बुध + केतु**–यात्राएं अप्रिय अनुभवों से परिपूर्ण होंगी।

❑❑❑

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां लग्नस्थ बृहस्पति कन्या राशि में होकर 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' बनायेगा। ऐसा जातक बुद्धिमान, क्षमाशील, धैर्यवान होते हुए धनी होता है। जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उसे जीवन में सभी भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख मिलेंगे। प्रथम भाव में बलवान सुखेश दैहिक सौन्दर्य, स्त्री-संतान का पूर्ण सुख, उत्तम घर एवं वाहन सुख देगा। जातक उपदेशक होगा।

दृष्टि—लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक की संतति उत्तम होगी। जातक की पत्नी वफादार व सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

निशानी—जातक अध्ययन व अध्यापन के कार्यों में रुचि लेगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

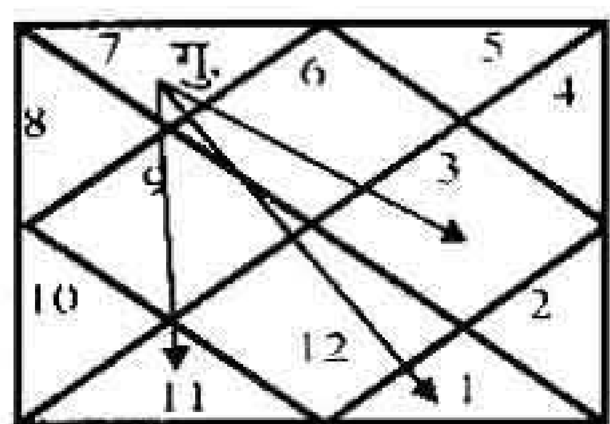
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक धार्मिक किन्तु क्रोधी होगा।
2. **गुरु + चंद्र**—कन्यालग्न में यह युति शुभ फलदायक है। भले ही चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। इस गजकेसरी योग का प्रभाव पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक को उत्तम संतति सुख मिलेगा।

जातक की पत्नी सुन्दर व संस्कार युक्त होगी। जातक का भाग्य बलवान होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा।

3. **गुरु + मंगल**–जातक 'भद्रयोग' के कारण राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक धार्मिक किन्तु घमण्डी होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक धनवान एवं भाग्यशाली होगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक धनवान एवं विद्यावान होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह प्रथम स्थान कन्या राशि में होंगे। राहु अपनी मित्र राशि एवं बृहस्पति शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। इस योग के कारण जातक हठी, आध्यात्मिक होते हुए भी कुटिल स्वभाव का होगा। ऐसा जातक प्राय: धार्मिक आडम्बर करेगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक थोड़ा चिडचिड़े स्वभाव का होगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां गुरु तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को उच्च शिक्षा, दूरदर्शिता एवं प्रतिष्ठित पद की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक लड़ाकू नहीं होता। जातक कवि, लेखक, ज्योतिष किंवा वैज्ञानिक होगा तथा इन कार्यों में धन व यश की प्राप्ति करेगा। लाल किताब वालों ने इस बृहस्पति को सभी को तारने वाला जगत् गुरु कहा है। ऐसा जातक सभी का भला चाहने वाला परोपकारी संत-स्वभाव का होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्ठि छठे भाव (कुम्भ राशि), अष्टम भाव (मेष राशि) एवं दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेगा। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

निशानी–जातक धार्मिक वक्ता किंवा उपदेशक होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनी होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–सूर्य यहां नीच का होगा। धन प्राप्ति में बाधा आयेगी। एक हजार राजयोग नष्ट होंगे।

2. **गुरु + चंद्र**–यहां ग्रह युति शुभ है। इस 'गजकेसरी योग' का प्रभाव छठे स्थान, आठवें स्थान एवं कुण्डली के दशम स्थान (राज्य भाव) पर पड़ेगा। फलत: जातक की आयु दीर्घ होगी। जातक के शत्रु नाश होंगे। जातक में ऋण, रोग व शत्रु को नष्ट करने का पूर्ण सामर्थ्य होगा। कोर्ट-कचहरी में जातक का दबदबा रहेगा।

3. **गुरु + मंगल**–जातक मेहनती व धनी होगा।

4. **गुरु + बुध**–जातक की वाणी गंभीर होगी तथा वह घमण्डी होगा।

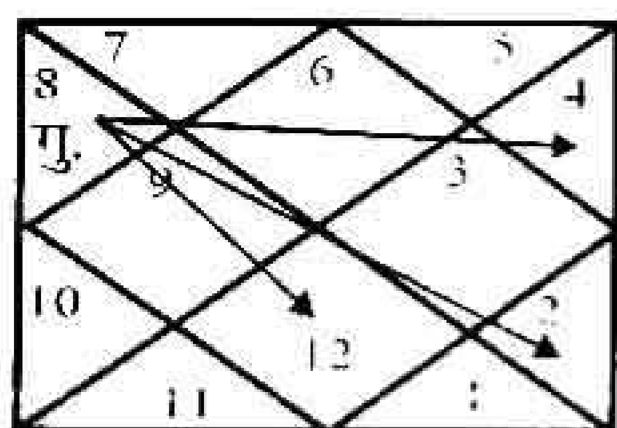
5. **गुरु + शुक्र**–जातक धनी एवं विनम्र होगा। जातक की वाणी शीतल होगी।

6. **गुरु + शनि**–जातक महाधनी होगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह द्वितीय स्थान में तुला राशि के होंगे। राहु यहां मित्र राशि में एवं बृहस्पति शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। इस योग के कारण जातक दार्शनिक होगा। जातक सच्चाई का साथ देने वाला परोपकारी व्यक्ति होगा।

8. **गुरु + केतु**–जातक को धन संग्रह में लगातार बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां तृतीयस्थ बृहस्पति वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसा व्यक्ति आस्तिक विचारों वाला एवं दार्शनिक होता है। उसके कई भाई होंगे। ऐसे जातक को उच्च श्रेणी की विद्या मिलती है। जातक को माता-पिता, मकान, जमीन-जायदाद का पूरा सुख मिलता है। ऐसा जातक बहुत हिम्मत वाला होता है। लाल किताब वालों ने इस बृहस्पति को 'गरजते शेर' की संज्ञा दी है। जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपना धैर्य नहीं खोता।

दृष्टि–तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), भाग्य भवन (वृष राशि) एवं लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक को समर्पित भावनाओं वाला जीवन साथी मिलेगा। जातक भाग्यशूर होगा तथा व्यापार-व्यवसाय में भारी धन अर्जित करेगा।

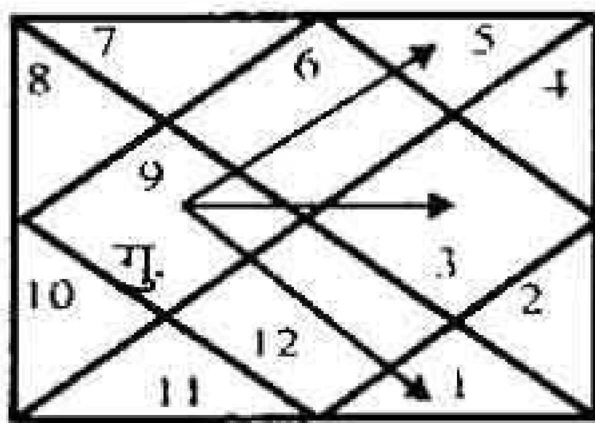
निशानी–जातक के बड़ा भाई होना चाहिए अथवा अपने से बड़ी उम्र के लोगों से जातक को लाभ होगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा तथा सौभाग्य में वृद्धि होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**—जातक के छोटे-बड़े दोनों भाई होंगे।
2. **गुरु + चंद्र**—तृतीय स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। पर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव, भाग्य भाव एवं लाभ भाव पर होगी। ऐसे जातक का जीवन साथी सुन्दर होगा एवं उसका भाग्योदय छोटी उम्र में होगा। जातक को कोर्ट-कचहरी, राजदरबार में सदैव विजय मिलेगी।
3. **गुरु + मंगल**—जातक को भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक की सगे व चचेरे भाईयों की कमी नहीं रहेगी।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक के बड़े भाई एवं बहनें भी होंगी।
6. **गुरु + शनि**—जातक की संतति पराक्रमी होगी।
7. **गुरु + राहु**—यहां बृहस्पति मित्र राशि में होगा तो राहु अपनी नीच (वृश्चिक) राशि में होगा। फलत: 'चाण्डाल योग' बनेगा। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोता। जातक को परिजनों व मित्रों से कभी सहयोग, कभी असहयोग मिलता रहेगा।
8. **गुरु + केतु**—भाईयों से वृद्ध कुटुम्बियों से जातक का मनमुटाव रहेगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां चतुर्थस्थ बृहस्पति स्वगृही होगा। फलत: कुलदीपक योग, केसरी योग एवं 'हंस योग' बना। ऐसा जातक राजा के समान महान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। जातक 'नेकराह का मुसाफिर' होता है व अच्छी सलाह देता है, अच्छे लोगों की संगत करता है। जातक दार्शनिक एवं स्वयं विद्वान होता है तथा विद्वानों का सम्मान करता है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहता है।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (मेष राशि), राज्य स्थान (मिथुन राशि) एवं व्यय स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक को

शत्रुओं का भय रहेगा। जातक को राजनीति में ऊंचा पद मिलेगा एवं जातक धार्मिक कार्यों, परोपकार व सामाजिक कार्यों पर रुपया खर्च करेगा।

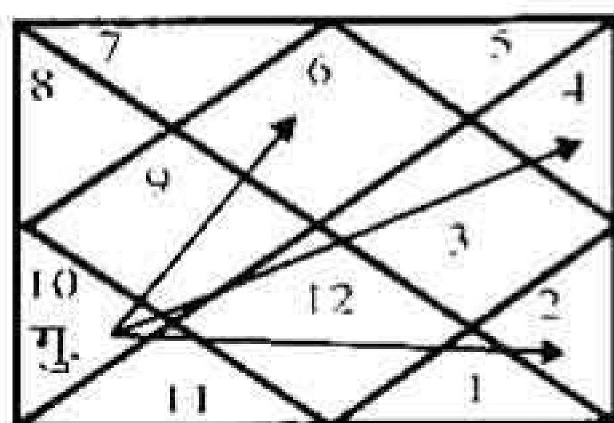
निशानी—जातक मितव्ययी होते हुए भी बड़े-बड़े खर्च करने में नहीं हिचकिचायेगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक को उच्च पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**—जातक राजा के समान तेजस्वी होगा। वाहन का सुख, मकान का सुख श्रेष्ठ होगा। पर इन दोनों को लेकर रुपये खर्च होंगे।
2. **गुरु + चंद्र**—यहां गुरु+चंद्र की युति हंसयोग, कुलदीपक योग, केसरी योग एवं यामिनीनाथ योग की सृष्टि करेंगे। यह गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह अष्टम भाव, राज्य भाव एवं द्वादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक की आयु बढ़ेगी। कोर्ट-कचहरी में जातक का दबदबा रहेगा। यात्राओं से लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल**—मकान को लेकर पैसा खर्च होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक बुद्धिमत्ता से धन कमायेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक के पास एकाधिक वाहन होंगे।
6. **गुरु + शनि**—जातक स्वयं पढ़ा-लिखा एवं उसकी संतति भी पढ़ी-लिखी होगी।
7. **गुरु + राहु**—यहां गुरु के कारण हंस योग, केसरी योग, कुलदीपक योग बना। राहु यहां शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होते हुए भी माता का सुख प्राप्त नहीं कर पायेगा।
8. **गुरु + केतु**—जातक की माता बीमार रहेगी।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां पंचमस्थ गुरु मकर राशि में नीच का होगा। बृहस्पति पांच अंशों में परम नीच का होगा। लाल किताब वालों ने इस गुरु को 'ब्रह्मज्ञानी' की संज्ञा दी है। ऐसा जातक तर्कशास्त्र, ज्योतिष, मंत्रशास्त्र, अध्यात्म वगैरह का उपदेशक होगा। जातक किसी

राजा या राजतुल्य का प्रमुख सलाहकार होगा। जातक के अनेक बच्चे और मित्र होंगे, जिससे जातक सुखी व्यक्तियां श्रेणी में अग्रगण्य होगा।

दृष्टि—पंचम भावगत बृहस्पति की दृष्टि भाग्य स्थान (वृष राशि), लाभ स्थान (कर्क राशि) एवं लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्यशूर, धनवान एवं अपने परिश्रम का पूरा- पूरा लाभ उठाने वाला परिश्रमी जातक होगा।

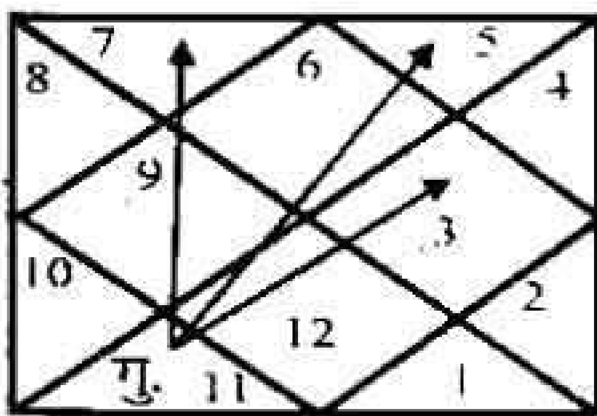
निशानी—जातक के पास सब कुछ होते हुए भी वह व्यापार, नौकरी व संतान पक्ष से असंतुष्ट रहेगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दश में जातक की उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**—सूर्य शत्रुक्षेत्री होने से संतान में बाधा रहेगी।
2. **गुरु + चंद्र**—पंचम स्थान में नीचस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होगा। व्यापार-व्यवसाय में उन्नति, जीवन में सर्वांगीण विकास होगा।
3. **गुरु + मंगल**—मंगल उच्च का, गुरु नीच का होने से नीचभंग राजयोग बना। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा एवं उसकी संतति धनवान होगी।
4. **गुरु + बुध**—जातक को पुत्र व कन्या दोनों की प्राप्ति होगी।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक भाग्यशाली तथा धनी होगा।
6. **गुरु + शनि**—शनि के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा।
7. **गुरु + राहु**—बृहस्पति यहां नीच राशि में तथा राहु अपनी मित्र (मकर राशि) में होने से यहां 'चाण्डाल योग' बना। जातक को उच्च विद्या एवं पुत्र संतति की प्राप्ति में रुकावट संभव है। जातक ब्रह्मज्ञानी होगा।
8. **गुरु + केतु**—गर्भस्राव एवं गर्भपात के अवसर ज्यादा हैं।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति षष्टम स्थान में



कन्यालग्न में गुरू चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां छठे स्थान में गुरु कुम्भ (शत्रु) राशि में है। यहां सुखभंग योग तथा विवाह भंग योग बनता है। ऐसे जातक के गृहस्थ सुख में बाधा आती है। जातक

का विवाह विलम्ब से होता है। प्राय: जातक असम्मानित व्यक्ति होता है। जातक काला जादू, रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है पर अपनी योग्यता का दुरुपयोग करने से नहीं चूकता। जातक के अपनी पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव है।

दृष्टि–छठे स्थान में स्थित बृहस्पति की दृष्टि राज्य स्थान (मिथुन राशि), व्यय स्थान (सिंह राशि) एवं धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक मितव्ययी होगा व धन संग्रह करेगा। जातक का रोजी-रोजगार भी ठीक होगा।

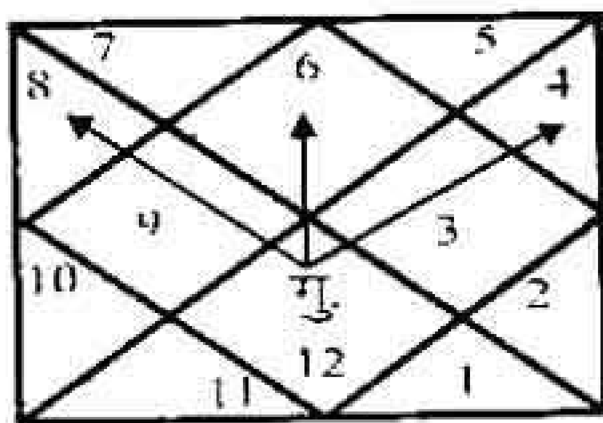
निशानी–ऐसा जातक शत्रुओं से भयभीत रहता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–सूर्य छठे गुरु के साथ होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। ऐसा जातक धनवान एवं पराक्रमी होगा।
2. **गुरु + चंद्र**–यहां चंद्रमा व बृहस्पति के कारण 'सुखभंग योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'लाभभंग योग' बनेगा, फलत: पराक्रम में कमी आयेगी। खर्चे बढ़-चढ़ कर होंगे। राज्यपक्ष से धोखा होगा। जातक को विवाह सुख में बाधा आयेगी। फिर भी कोई काम इस योग के कारण रुका हुआ नहीं रहेगा पर संघर्ष के बाद अंतिम सफलता निश्चित है।
3. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश मंगल के छठे जाने से 'विमल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + बुध**–बुध छठे जाने से लग्नभंग योग बना। जातक के प्रत्येक कार्य में रुकावटें आयेंगी। परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–शुक्र छठे जाने से धनहीन योग एवं भाग्यभंग योग बनेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्टेश शनि छठे होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। जातक धनी होगा।
7. **गुरु + राहु**–बृहस्पति कुम्भ (शत्रु) राशि एवं राहु मित्र राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है। जातक के अपनी पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव हैं। जातक अपनी योग्यता का दुरुपयोग करने में नहीं चूकेगा।
8. **गुरु + केतु**–केतु छठे ज्यादा अशुभ नहीं होता। जातक धनी होगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। सप्तम भावस्थ बृहस्पति मीन राशि में स्वगृही होगा। फलत: कुलदीपक योग, केसरी योग, हंस योग की क्रमश: सृष्टि होगी। यहां गुरु सर्वोत्तम स्थिति में है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य, पराक्रम को भोगता है। जातक की पत्नी सुन्दर एवं समर्पित भाव वाली महिला होगी। जातक अपने कार्यक्षेत्र में कीर्तिवान होगा। जातक प्राय: उच्च बनने का नाटक करेगा पर अन्दर की चेष्टा मलीन होगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ गुरु की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: आवक अच्छी होगी। परिश्रम का फल मिलेगा। जातक को भाईयों से लाभ होगा।

निशानी–जातक का विवाह प्राय: विलम्ब से होता है तथा जातक की संतति पिता से अधिक विद्यावान होती है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मे दुर्घटना का भय रहेगा क्योंकि यहा बृहस्पति मारक का काम करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–व्ययेश सूर्य सातवें होने से विवाह सुख मे विलम्ब का योग बनता है।
2. **गुरु + चंद्र**–दोनों ग्रह केन्द्रस्थ होने के कारण कुलदीपक योग, हंस योग, केसरी योग एवं यामिनीनाथ योग की सृष्टि करेंगे। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का जीवन साथी सुयोग्य व सुन्दर होगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक का पराक्रम राजातुल्य होगा।
3. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश मंगल के सातवें होने से जीवन साथी के साथ खटपट, भागीदारों से अनबन रहेगी।
4. **गुरु + बुध**–बुध यहां होने से नीचभंग राजयोग बनता है। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। विवाह के बाद तरक्की होगी।
5. **गुरु + शुक्र**–शुक्र यहां होने से 'किम्बहुना नामक' सफल राजयोग बनेगा।

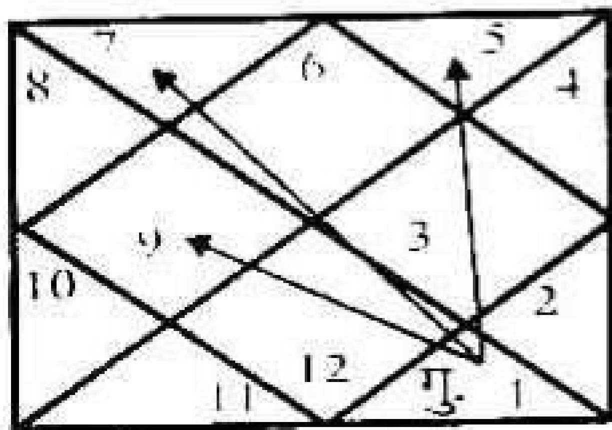
अर्थात् इससे अधिक और क्या ? जातक करोड़पति होगा तथा जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा।

6. **गुरु + शनि**–पंचमेश शनि के सप्तमेश के साथ होने से संतान के जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

7. **गुरु + राहु**–गुरु स्वगृही होने के कारण कुलदीपक योग, केसरी योग, हंस योग बनायेगा। राहु शत्रुक्षेत्री होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होते हुए भी निम्न हरकत करने वाला, अपने से बड़ी उम्र वाली एवं विधवा स्त्री से सहवास करता है, सम्पर्क रखता है।

8. **गुरु + केतु**–सप्तम स्थान में केतु गृहस्थ जीवन में कलह करायेगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। अष्टमस्थ बृहस्पति यहां मेष (मित्र) राशि में होगा। बृहस्पति यहां सुखभंग योग एवं विवाहभंग योग की सृष्टि कर रहा है। फलत: विलम्ब विवाह की स्थिति रहती है। जातक के पत्नी में वैचारिक मतभेद संभव हैं। यह गुरु राजगुरु या सम्मानित पद पाने में बाधक का काम करेगा। जातक राजनीति में रुचि लेगा पर सफलता संदिग्ध है। जातक दानी होगा पर उसे दान का वांछित यशोगान प्राप्त नहीं होगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ गुरु की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं अपने स्वयं के घर सुख भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक दीर्घायु वाला होगा पर अत्यधिक खर्च के कारण ऋणी रहेगा।

निशानी–गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए जातक को पीले रंग का रुमाल जेब में रखना चाहिए तथा पीले पुष्प मंदिर में चढ़ाने चाहिए। बृहस्पति वार का उपवास रखना चाहिए।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक को कई परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–द्वादशेश सूर्य आठवें उच्च का होने से 'सरल नामक' विपरीत

राजयोग बना। ऐसा जातक महाधनी होगा एवं पराक्रमी होगा। जीवन में सफल होगा।

2. **गुरु + चंद्र**–यहां गुरु+चंद्र की इस स्थिति के कारण 'सुखभंग योग, विवाहभंग योग एवं लाभभंग योग' बनेगा। फलत: जातक के जीवन में धन की बचत नहीं होगी। गृहस्थ जीवन में कलह होगी। फिर भी जीवन की गाड़ी पार लग जायेगी। जातक का कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।

3. **गुरु + बुध**–बुध अष्टम में होने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा।

4. **गुरु + बुध**–मंगल अष्टम स्थान में, अष्टमेश अष्टम भाव में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा।

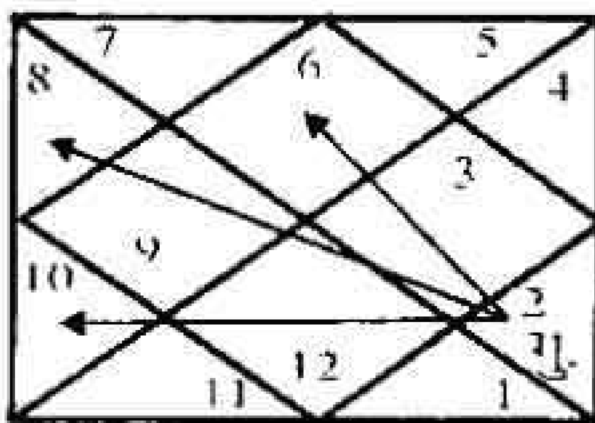
5. **गुरु + शुक्र**–भाग्येश धनेश यहां अष्टम स्थान में भाग्यभंग योग एवं धनहीन योग बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।

6. **गुरु + शनि**–शनि षष्ठेश होकर अष्टम में जाने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। जातक धनी व पराक्रमी होगा।

7. **गुरु + राहु**–गुरु के कारण विवाहभंग योग, सुखभंग योग बनेगा, परंतु राहु यहां शत्रुक्षेत्री होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक के गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी। प्रत्येक भौतिक उपलब्धि कुछ मुसीबत लेकर आयेगी।

8. **गुरु + केतु**–केतु आठवें स्थान में होने से शल्य चिकित्सा करायेगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां बृहस्पति नवम स्थान में वृषभ (शत्रु) राशि में होगा। जातक अनेक समारोहों का आयोजन करने वाला, सफल संयोजक व नेता होता है। जातक पिता को काफी सुख देता है। जातक महत्वाकांक्षी होते हुए भी विनम्र व सभ्य व्यक्ति होगा। लाल किताब वालों ने इस गुरु को 'दहकता हुआ सोना' कहा है फलत: जातक का राजनीति, कोर्ट-कचहरी एवं समाज में दबदबा रहेगा।

दृष्टि–नवमस्थ गुरु की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि), पराक्रम स्थान

(वृश्चिक राशि) एवं पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक का परिश्रम सार्थक रहेगा। भाईयों-मित्रों एवं संतान पक्ष में जातक भाग्यशाली होगा।

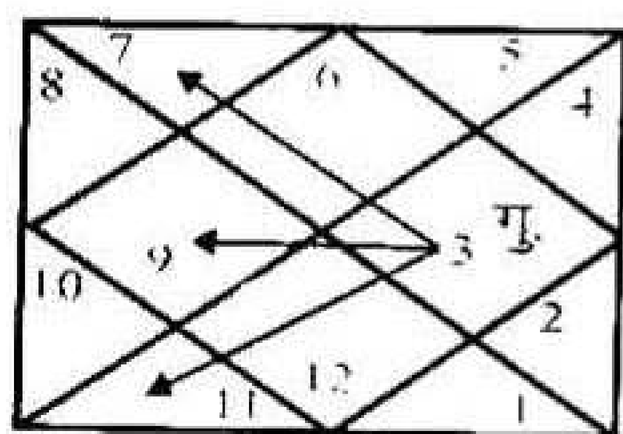
निशानी–जातक को सफलता अत्यधिक परिश्रम के बाद मिलती है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय होकर सम्पूर्ण विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–व्ययेश सूर्य भाग्य स्थान में गुरु के साथ होने से जातक का भाग्योदय रुकावट के साथ धीमी गति से होगा।
2. **गुरु + चंद्र**–चंद्रमा यहां उच्च का होकर, गुरु के साथ लग्न स्थान, पराक्रम भाव एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को पिता की सम्पत्ति एवं परिजनों का प्रेम मिलेगा। जातक की संतान पढ़ी-लिखी व सुशील होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
3. **गुरु + बुध**–गुरु के साथ बुध होने से जातक भाग्यशाली तथा पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश मंगल भाग्य स्थान में धीमी गति से भाग्योदय करायेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–शुक्र धनेश होकर, स्वगृही होकर गुरु के साथ होने से व्यक्ति परम सौभाग्यशाली होगा।
6. **गुरु + शनि**–पंचमेश, षष्टेश शनि भाग्य में व्यापार द्वारा धनार्जन करायेगा।
7. **गुरु + राहु**–गुरु यहां शत्रु राशि में जबकि राहु यहां उच्च (वृष) का होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक को पिता पक्ष, राज्य पक्ष से धोखा होगा।
8. **गुरु + केतु**–केतु भाग्य स्थान में गुरु के साथ संघर्ष के साथ 34 वर्ष की आयु के बाद भाग्योदय करायेगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां दशम स्थान में गुरु मिथुन (शत्रु) राशि का होगा। बृहस्पति के कारण यहां 'कुलदीपक योग' एवं 'केसरी योग' बना। ऐसा जातक राजनीति में रुचि रखता है तथा लेबर यूनियन अथवा सामाजिक संगठनों में नेता पद को प्राप्त करता है। जातक को माता-पिता, पत्नी एवं

संतान का पूर्ण सुख मिलता है। जातक सिद्धान्तवादी होगा। ऐसे जातक को अध्ययन-अध्यापन के कार्यों में रुचि होती है।

दृष्टि–दशमस्थ गुरु की दृष्टि धन भाव (तुला राशि), सुख स्थान (धनु राशि) एवं छठे भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक धनी एवं सुखी होगा तथा शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–ऐसे जातक को प्राय: भौतिक सुखों के प्रति लगाव नहीं होगा।

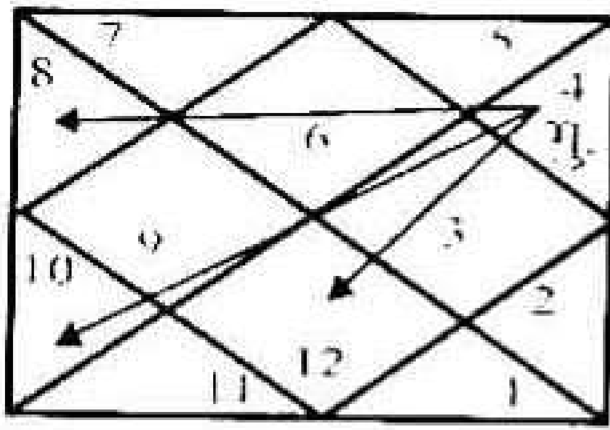
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–व्ययेश दशम स्थान में होने से राज्य सरकार, कोर्ट कचहरी में दिक्कतें आयेंगी।
2. **गुरु + चंद्र**–दशम भाव में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां पर केसरी योग, कुलदीपक योग एवं यामिनीनाथ योग बनेगा। दोनों ग्रह धन स्थान, सुख स्थान एवं अष्टम भाव को देखेंगे। फलत: राज्यपक्ष, कोर्ट-कचहरी में जातक का दबदबा रहेगा। धन प्राप्ति निर्बाध गति से होती रहेगी। सुख प्राप्ति के संसाधन मिलते रहेंगे। जातक को वाहन की प्राप्ति 24 व 32 वर्ष की आयु में होगी।
3. **गुरु + बुध**–बुध के कारण 'भद्रयोग' बनेगा। जातक राजा का मंत्री या राजगुरु होगा।
4. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश के दशम स्थान मे होने से सरकारी अधिकारी धोखा देंगे।
5. **गुरु + शुक्र**–धनेश, भाग्येश, शुक्र केन्द्र में बृहस्पति के साथ होने से व्यक्ति धार्मिक माध्यमों से आगे बढ़ेगा।
6. **गुरु + शनि**–
7. **गुरु + राहु**–गुरु यहां शत्रु राशि में होगा जबकि राहु स्वगृही (मिथुन राशि में) होगा। फलत: 'चाण्डाल योग' बना। जातक नेता, निम्न मनोवृत्ति वाला तथा स्वार्थ प्रवृत्ति वाला होगा।
8. **गुरु + केतु**–

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में

कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। एकादश स्थान में गुरु यहां कर्क राशि में उच्च का होगा। जहां



अंशों में गुरु परमोच्च का कहलाता है। ऐसे जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। उसका जीवनसाथी भी आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। ऐसा जातक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कीर्ति अर्जित करता है। जातक को वाहन सुख, भवन सुख, नौकर-चाकर का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि–एकादश बृहस्पति की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक को भाई-बहनों का सुख, जीवन साथी का सुख एवं संतति का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है।

निशानी–जातक के अनेक मित्र होंगे पर पुत्र कम होंगे।

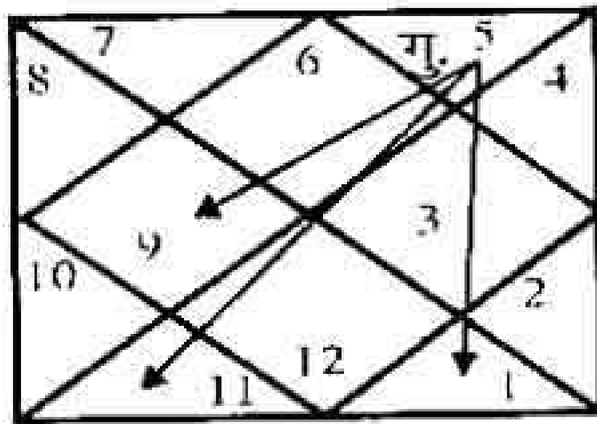
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा। जातक की उन्नति चारों ओर से होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–व्ययेश सूर्य लाभ स्थान में होने से लाभ में बाधा होगी परन्तु जातक धनी होगा। सरकारी बाधा, आपत्ति महसूस होगी।
2. **गुरु + चंद्र**–बृहस्पति यहां उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होगा। किम्बहुना योग के साथ ये दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को देखेंगे। फलतः जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक छोटे भाई बहनों, पुत्र पुत्रियों पर धन खर्च करेगा एवं परिजनों से प्रेम करेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा।
3. **गुरु + बुध**–बुध शत्रुक्षेत्री होगा। फिर भी जातक बुद्धिबल से धन कमायेगा।
4. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश मंगल यहां नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। जातक वाहन बंगला, नौकर चाकर से युक्त होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–भाग्येश शुक्र बृहस्पति के साथ होने से जातक का भाग्य पग-पग पर जातक का साथ देगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्टेश शनि लाभ स्थान में गुरु के साथ होने से वास्तविक लाभ में रोक लगाता है।
7. **गुरु + राहु**–गुरु यहां उच्च का होगा परन्तु राहु शत्रु (कर्क राशि) का होगा। यहां दोनों की युति से 'चाण्डाल योग' बना। जातक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कीर्ति अर्जित करता हुआ भी बदनाम होगा। जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी।

8. **गुरु + केतु**–केतु यहां शत्रुक्षेत्री गुरु के साथ होने से लाभ में रुकावट आयेगी।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में



कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। द्वादशस्थ बृहस्पति यहां सिंह राशि में होगा। गुरु के कारण यहां 'सुखहीन योग' एवं 'विवाहभंग योग' बना। जातक का विवाह विलम्ब से होता है। जातक को राजनीति से धोखा मिलता है। ऐसा जातक लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है एवं धार्मिक कार्यों में, परोपकार के कार्यों में धन खर्च करता है। जातक तीर्थ यात्रा-देशाटन का शौकीन होता है। ऐसे जातक का आचरण एवं व्यवहार कई बार संदिग्ध होता है।

दृष्टि–द्वादश भावगत गुरु की दृष्टि सुख भाव (धनु राशि), षष्टम भाव कुम्भ राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रु से परेशान रहेगा।

निशानी–जातक हमेशा अपने वाहनों, आभूषणों-कपड़ों, (नौकरों के प्रति चिंतित रहेगा।

दशा–

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही गुरु के साथ होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महाधनी एवं महादानी होगा।
2. **गुरु + चंद्र**–यहां दोनों ग्रहों की इस स्थिति के कारण सुखभंग योग, विवाहभंग योग एवं लाभभंग योग बनेगा। फलत: विवाह में विलम्ब का संकेत है। जातक की माता बीमार रहेगी। वाहन सुख में भी तकलीफ आयेगी। जातक के जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी। फिर भी इस गजकेसरी योग के कारण सभी कार्यों में अंतिम सफलता मिलेगी। कोई भी काम साधन के अभाव में रुका नहीं रहेगा।
3. **गुरु + बुध**–बुध व्यय स्थान में लग्नभंग योग बनायेगा। जातक को परिश्रम का सही लाभ नहीं मिलेगा।

4. **गुरु + बुध**–अष्टमेश के व्यय भाव में होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनवान एवं पराक्रमी होगा। जातक की संतान उत्तम होगी।

5. **गुरु + शुक्र**–भाग्येश, धनेश, शुक्र बारहवें होने से जातक को भाग्य में रुकावट के साथ आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।

6. **गुरु + शनि**–षष्टेश शनि बारहवें होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। जातक करोड़पति होगा।

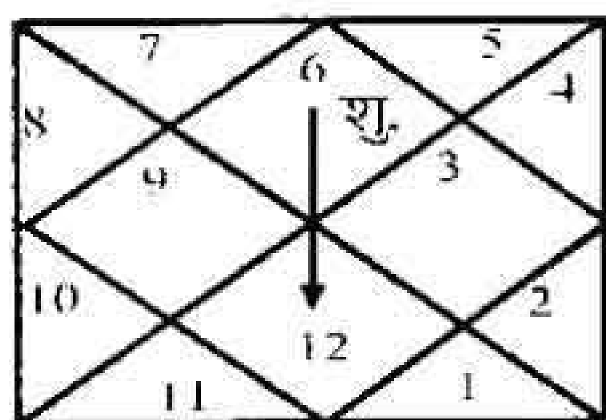
7. **गुरु + राहु**–गुरु यहां मित्र राशि में परन्तु राहु शत्रु राशि (सिंह) में होगा। फलत: यहां 'चाण्डाल योग' बना। जातक घुमक्कड़, परोपकारी एवं शठ होगा। वह तीर्थ स्थलों में भी गड़बड़ी करने से नहीं चूकेगा।

8. **गुरु + केतु**–केतु बारहवें होने से यात्राओं से हानि करायेगा।

❑❑❑

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फलप्रदाता है। यहां प्रथम स्थान में शुक्र अपनी नीच राशि कन्या में होगा। जहां यह 27 अंशों में परम नीच का होता है। शुक्र की इस स्थिति में 'कुलदीपक योग' बनता है। यदि अन्य ग्रह बाधक न हों तो जातक का विवाह शीघ्र होता है। लाल किताब वालों ने इस ग्रह का नाम 'रंग बिरंगा मामा' दिया है। ऐसे जातक संगीत-कला, सौन्दर्य, नाटक, सेंट, इत्र-फुलेल लगाने के शौकीन होते हैं। विपरीत सेक्स वाले ऐसे जातक के प्रशंसक होते हैं। जातक को धन, विद्या, भवन, वाहन, गृहस्थ सुख पूरा मिला।

दृष्टि–लग्नस्थ शुक्र की सप्तम भाव पर दृष्टि होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक स्त्री के वशीभूत रहेगा। जातक अति कामी होगा।

निशानी–ऐसा व्यक्ति जीवन में अनेक स्त्रियों का सुख भोगता है। जातक के जीवन का सही विकास विवाह के बाद होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–व्ययेश सूर्य लग्न में शत्रु ग्रह के साथ होने से जातक परस्पर विरोधाभासी निर्णय लेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–लाभेश एवं भाग्येश की लग्न स्थान में युति जातक को भाग्यशाली बनायेगी।

3. **शुक्र + बुध**–बुध उच्च का एवं शुक्र नीच का होने से यहां 'नीचभंग राजयोग' बना। जातक महाधनी तथा राजनैतिक हस्ती होगी।

4. **शुक्र + मंगल**–अष्टमेश मंगल लग्न में होने से, परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक का स्वभाव लड़ाकू होगा।

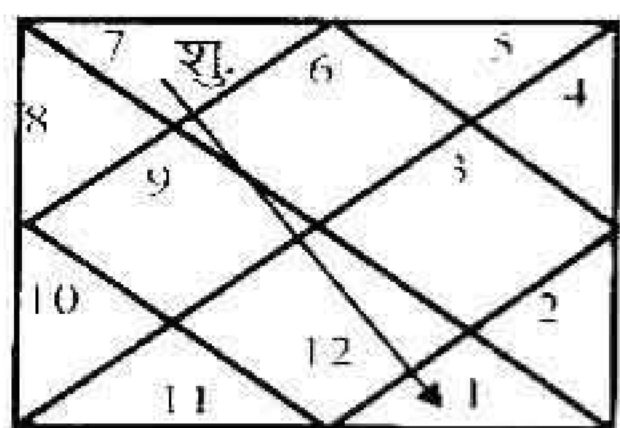
5. **शुक्र + गुरु**–सप्तमेश गुरु लग्न में बैठकर पंचम, सप्तम एवं भाग्य स्थान को देखेगा। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। जातक की पत्नी परम सुन्दर एवं संतति भी सुंदर होगी।

6. **शुक्र + शनि**–लग्न में शनि उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्त्वाकांक्षी होगा। जातक विद्यावान होगा।

7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक विलासी प्रवृत्ति का स्वामी होगा।

8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक के मन में भटकाव ज्यादा होगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां द्वितीय स्थान में शुक्र स्वगृही होगा। धनेश का स्वगृही होना बहुत बड़ी बात है। ऐसा जातक धनवान होगा। जातक की खुद की गाड़ी होगी। जातक अच्छा भोजन करेगा। जातक अच्छी वाणी बोलेगा। जातक विनम्र होगा। जातक की आर्थिक सम्पन्नता प्रथम संतति के बाद विशेष रुप से मुखरित होगी। जातक को पूर्ण गृहस्थ सुख मिलेगा।

दृष्टि–शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (मेष राशि) पर होगी फलत: जातक की उम्र लम्बी होगी।

निशानी–ऐसे जातक को देवी की उपासना ज्यादा फलवती होगी एवं स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा। जातक को धन की विशेष प्राप्ति होगी।

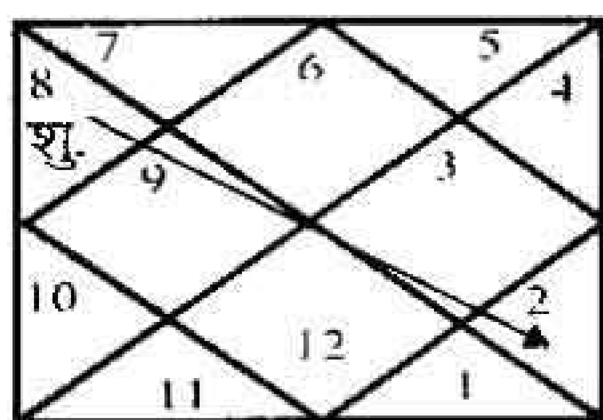
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–यहां सूर्य होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। जातक राजा तुल्य

प्रभावशाली एवं धनी व्यक्ति होगा पर खर्चीले स्वभाव का होगा। पैसा हाथ में टिकेगा नहीं।

2. **शुक्र + चंद्र**–धन स्थान में शुक्र के साथ चंद्रमा होने से जातक महाधनी होगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक के धन का नाश होता रहेगा।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक धार्मिक तथा पराक्रमी होगा।
6. **शुक्र + शनि**–यहां शनि उच्च का होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। जातक अपने नाम से जाना-पहचाना जायेगा।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक के अर्जित धन का नाश होगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से धन का अपव्यय होता रहेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां तीसरे स्थान में शुक्र वृश्चिक राशि में होगा। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'इश्क का परवाना' कहा है। ऐसा जातक पराई स्त्रियों पर डोरे डालता है तथा अनैतिक सम्पर्क साधने की चेष्टा करता है। भाई-बहनों में कम पटती है पर जातक यार-दोस्तों पर ज्यादा रुपया खर्च करता है। जातक फिजूलखर्च होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि अपने ही घर भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। ऐसा व्यक्ति भाग्यशूर होता है तथा थोड़ी मेहनत में उत्तम फलों की प्राप्ति करता है।

निशानी–जातक की प्रगति विवाह के बाद होती है।

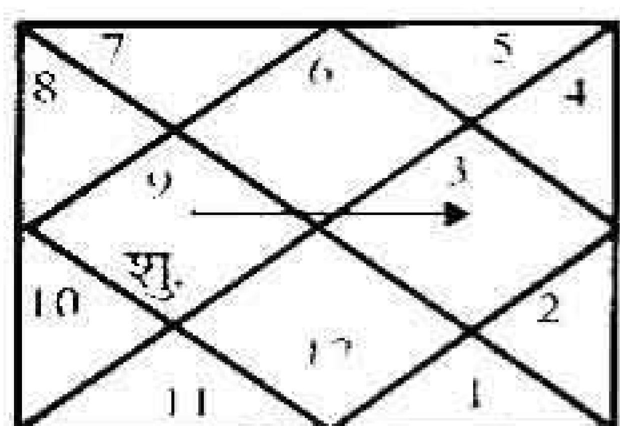
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ता है एवं भाग्योदय होता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक का पराक्रम भंग होगा तथा छोटे भाई की मृत्यु होगी।

2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र होने से जातक की बहनें जरूर होंगी। बहनें सम्पन्न होंगी।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक को मेहनत का फल मिलेगा। जातक के मित्र वफादार होंगे।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल स्वगृही होने से जातक को भाई बहनों का सुख तो प्राप्त होगा पर आपस में विचार नहीं मिलेंगे।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा और जातक पर बड़े भाई की कृपा रहेगी।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक पढ़ा-लिखा होगा। जातक की संतति भी पढ़ी-लिखी होगी।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से भाई बहनों में मनमुटाव रहेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां शुक्र धनु राशि में होगा तथा केन्द्रस्थ होने 'कुलदीपक योग' बनायेगा। जातक के पास उत्तम बंगला, गाड़ी-वाहन, नौकर-चाकर का सुख होगा। ऐसा जातक यदि राजनीति में हो तो राजा का मंत्री होता है। जातक शिक्षित एव सभ्य होगा। जातक को गृहस्थ, स्त्री व संतान का सुख पूर्ण होगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ शुक्र की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक का दबदबा राज्य (सरकार), कोर्ट-कचहरी में रहेगा।

निशानी–जातक अच्छे स्वभाव का स्वामी होगा। जातक का मां के साथ विशेष संबंध होगा।

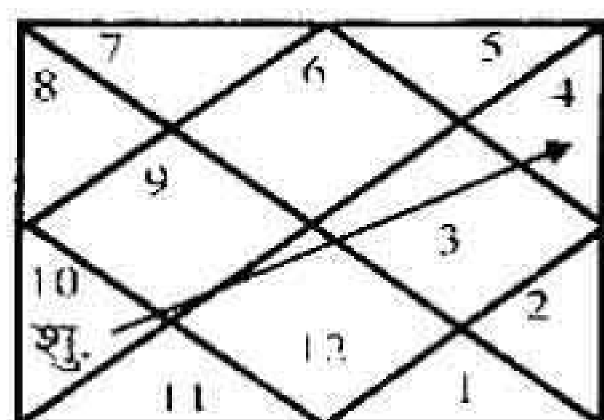
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का भौतिक सुखों व उपलब्धियां की प्राप्ति होगी तथा उसका भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक की माता-बुआ बीमार रहेगी।

2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा होने से जातक को माता एवं बड़ी बहन का सुख मिलेगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ लग्नेश बुध होने से जातक महान उपलब्धियां अर्जित करेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल होने से जातक की विद्या में रुकावट आयेगी।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ यदि बृहस्पति हो तो हंस योग के कारण जातक निश्चय ही राजा के समान प्रभावशाली होती है तथा राजपुरोहित, राजगुरु के पद को प्राप्त करेगा।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ पंचमेश शनि होने से जातक विद्या व्यसनी होगा।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक की माता को कष्ट रहेगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक की मां बीमार रहेगी। जातक को हृदय रोग होने की संभावना रहेगी।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां पंचम स्थान में शुक्र मकर राशि का होगा। ऐसे जातक को अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'बच्चों से भरे घर-परिवार' वाला कहा है। ऐसे जातक को स्त्री-संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक की संतति सुंदर होगी। जातक स्वयं कवि, संगीत प्रेमी, कलाकार, होशियार एवं चालाक होगा। ऐसे जातक को राजा (राज्य सरकार) से सम्मान अवश्य मिलेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक को व्यापार-व्यवसाय एवं लघु उद्योग से यथेष्ट धन की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक प्रजावान होता है तथा उसकी प्राय: चार या छ: कन्याएं होती हैं। जातक को सट्टे तथा शेयर बाजार से लाभ होगा।

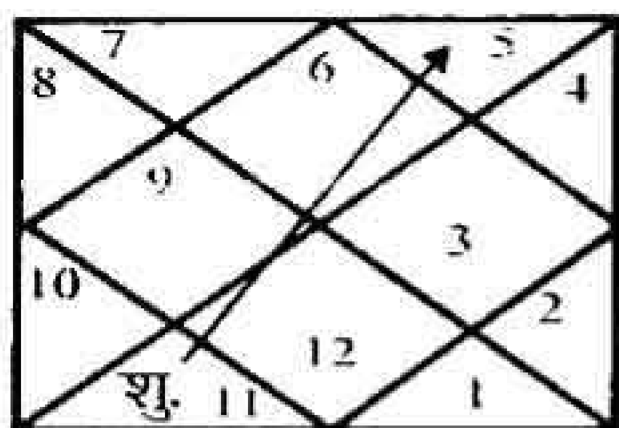
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं उसे उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य होने से संतान प्राप्ति, वांछित विद्या प्राप्ति में दिक्कतें महसूस होंगी।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा कन्या संतति की बाहुल्यता करायेगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ लग्नेश बुध बुद्धि, तेज एवं संतति तेजस्वी करायेगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
4. **शुक्र + मंगल**–
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से जातक को पत्नी पक्ष से लाभ मिलेगा तथा पुत्र संतति की प्राप्ति होगी।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ स्वगृही शनि कन्या संतति में बाहुल्यता एवं पुत्र योग भी देता है।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु की उपस्थिति पुत्र संतति में बाधक है।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु गर्भपात, गर्भस्राव कराता है।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में

कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां छठे स्थान में शुक्र कुम्भ राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति से धनहीन योग एवं भाग्यभंग योग की सृष्टि होती है। ऐसे जातक को धनार्जन एवं भाग्योदय हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। जातक स्त्रियों का अनुग्रह पाने के लिए लालायित रहेगा एवं किसी युवा स्त्री द्वारा भ्रष्ट होगा। जातक का चरित्र व स्वभाव विवादास्पद होगा।



दृष्टि–छठे भावगत शुक्र की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक के पास धन का संग्रह नहीं हो पायेगा।

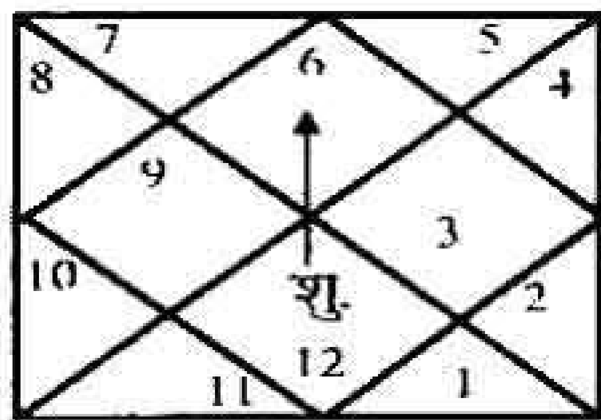
निशानी–कामुक स्वभाव के कारण जातक के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा जातक के लिए कष्टप्रद साबित होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ यदि सूर्य हो तो 'विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। इसे विमल नामक राजयोग कहते हैं।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा नियमित लाभ के अनुपात को तोड़ देगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ बुध 'लग्नभंग योग' करायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ यदि मंगल हो तो 'विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। इसे 'सरल नामक' राजयोग कहते हैं।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ सप्तमेश बृहस्पति विलम्ब विवाह योग या द्विभार्या योग कराता है।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ यहां पर शनि हो तो 'विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। इसे 'हर्ष योग' भी कहते हैं।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु की उपस्थिति राजयोग कारक है। जातक के रोग का नाश होगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के शरीर पर रोग का प्रकोप करायेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। शुक्र यहां अपनी उच्च राशि मीन में होगा। जहां यह 27 अंशों में परमोच्च का कहलाता है। शुक्र की इस स्थिति के कारण 'कुलदीपक योग' एवं 'मालव्य योग' की सृष्टि होगी। जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा। जातक की पत्नी रति के समान सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक को विपरीत सेक्स वालों से लाभ होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक अल्प प्रयत्न से अधिक कमाता है तथा बहुत भाग्यशाली होता है।

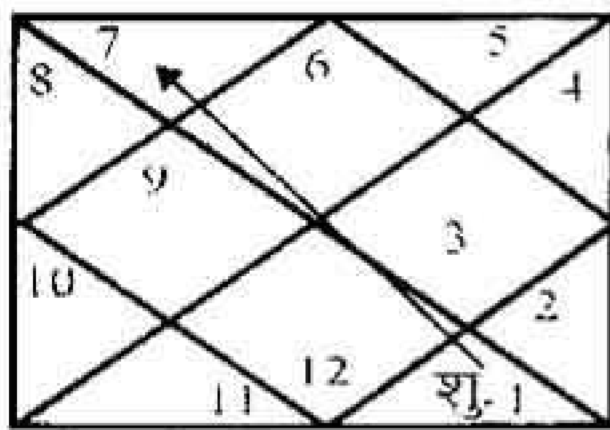
निशानी–ऐसा जातक विदेश में, जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर धन कमाता है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी एवं सर्वांगीण विकास होगा। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य विवाह सुख में कलह करायेगा। जातक की पत्नी लड़ाकू होगी।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा होने से जातक की पत्नी परम सुन्दरी व विनम्र होगी।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी। जातक को ससुराल से धन की प्राप्ति होगी।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल की उपस्थिति विवाह सुख में बाधक है।
5. **शुक्र + गुरु**–बलवान धनेश की सप्तमेश से युति 'कलहमूल धनयोग' बनाती है जातक को ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होगी।
6. **शुक्र + शनि**–षष्ठेश शनि सप्तम स्थान में शुक्र के साथ होने से, जीवन साथी से वैचारिक मतभेद करायेगा।
7. **शुक्र + राहु**–सप्तम स्थान में राहु गृहस्थ सुख में बाधक है।
8. **शुक्र + केतु**–सप्तम स्थान में केतु वैचारिक मतभेद करायेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां अष्टमस्थ शुक्र मेष राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण धनहीन योग एवं भाग्यभंग योग की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को धनार्जन एवं भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी जातक को उच्च श्रेणी की विद्या, वाहन, धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक की माता की आयु कम होगी। अति सेक्स, गुप्त बीमारी का कारण होगा।

दृष्टि–अष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को जीवन में धन की कमी नहीं रहेगी।

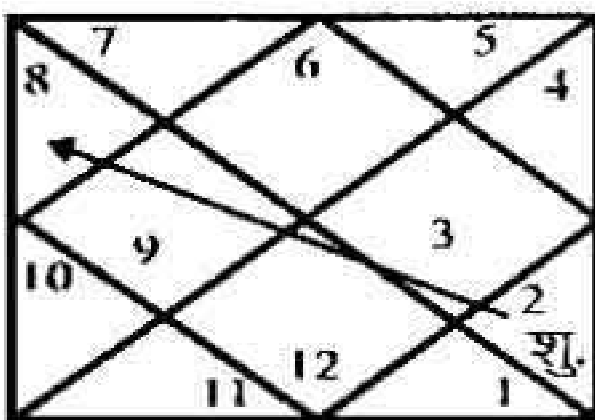
निशानी–जातक यदि अपनी पत्नी को तंग करेगा तो उसके जीवन में परेशानियां बढ़ेंगी। शुक्र का शुभत्व बढ़ाने के लिए दूध का दान करना चाहिए।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य, अष्टम स्थान में होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी एवं वाहन सुख से युक्त होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा अष्टम स्थान में होने से शल्य-चिकित्सा करायेगा। जातक को हरनिया इत्यादि गुप्त रोग हो सकते हैं।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ लग्नेश बुध यहां 'लग्नभंग योग' करायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल, अष्टम स्थान में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग करायेगा। जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से विलम्ब विवाह योग बनेगा। इसमें द्विभार्या योग भी संभव है।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ षष्टेश शनि होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी पराक्रमी एवं वाहन सुख से युक्त होगा।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु का होना गुप्त बीमारी का संकेतक है।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्त रोगों की शल्य चिकित्सा कराता है।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। नवमस्थ शुक्र यहां स्वगृही होगा। यह शुक्र पंचम भाव से पंचम है, पिता की दीर्घायु होगी। जातक जन्म से ही भाग्यशाली होगा। जातक को स्त्री, धन, पुत्र-संतति, विद्या-बुद्धि व सौभाग्य का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। जातक जन्म से भाग्यशाली होता है। जातक को भाई-बहनों का पूर्ण सुख होगा।

दृष्टि–नवमस्थ शुक्र की दृष्टि पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक प्रबल पराक्रमी होगा। जातक का जनसम्पर्क बहुत तेज होगा।

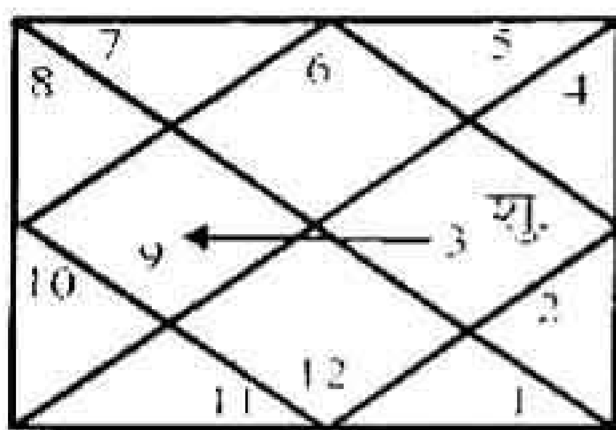
निशानी–ऐसा जातक यदि स्त्रियों का अपमान करेगा तो उसका भाग्य विपरीत होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का चहुंमुखी भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य हो तो जातक बातचीत में कुलीन होगा पर शरीर में कष्ट रहेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा उच्च का होने से '**किम्बहुना योग**' बनायेगा। इसके अधिक और क्या? जातक महाधनी एवं सौभाग्यशाली होगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ दशमेश बुध होने से व्यक्ति महान भाग्यशाली होगा। जातक की नौकरी अच्छी होगी।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक के भाग्य में रुकावट होगी किन्तु जातक का पराक्रम तेज होगा।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति की उपस्थिति विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय कराता है।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक का भाग्योदय विद्या द्वारा होगा।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ उच्च का राहु व्यक्ति को पराक्रमी बनायेगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक के भाग्योदय में बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। दशम भावगत शुक्र यहां मिथुन राशि में होगा। केन्द्रवर्ती शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। जातक को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सफलताओं की प्राप्ति होगी। जातक को जमीन-जायदाद, आर्थिक सम्पदाओं की प्राप्ति होगी। जातक का राजनीति में प्रभाव होगा। यदि बुध की स्थिति अच्छी हो तो राजनैतिक पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होगी।

दृष्टि–दशमस्थ शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को सुन्दर भवन, सुन्दर वाहन का सुख मिलेगा।

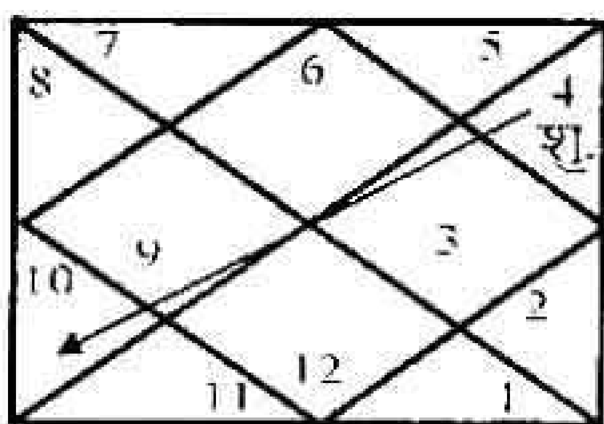
निशानी–जातक के अनेक वाहन व मकान होंगे, जिससे आय की संभावना भी रहेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक को सरकार (कोर्ट-कचहरी) द्वारा नुकसान होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा शुत्रक्षेत्री होगा। जातक को सरकारी नौकरी में लाभ है।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से 'भद्र योग' के कारण जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल राज्य की नौकरी में कष्ट दायक होगा।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ सप्तमेश गुरु विवाह के बाद नौकरी लगवाता है।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ पंचमेश शनि हो तो जातक को विदेश यात्रा से लाभ कराता है।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ स्वगृही राहु जातक को हठी राजा बनाता है।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु, दशम भाव के शुभ फल को तोड़ता है।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। एकादश भावगत शुक्र यहां कर्क राशि में होगा। जातक लोकप्रिय होगा एवं घुमक्कड़ स्वभाव का होगा। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'माया के लिए भ्रमता व्यक्ति' कहा है। जातक को अनेक मित्र होंगे। जातक धनी एवं प्रजावान होगा। जातक की अच्छी शिक्षा-दीक्षा होगी। जातक के पास ऐशो-आराम के अनेक साधन होंगे।

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक विद्यावान होगा तथा उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा।

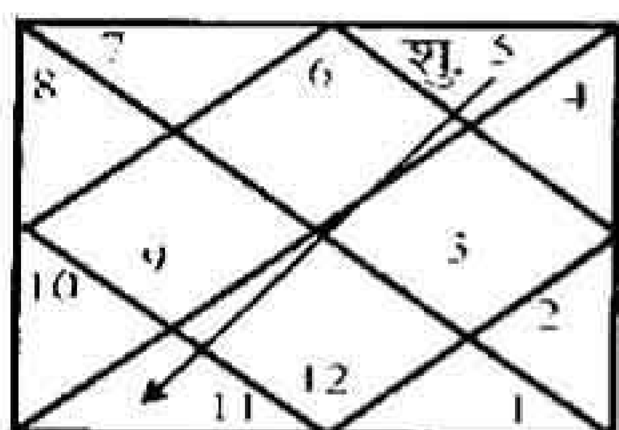
निशानी–स्त्रियां जातक की कमजोरी होंगी। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य, लाभ में कमी कराता है। जातक के उद्योग में विवाद रहेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश स्वगृही चंद्रमा बड़ी बहन, मौसी या बुआ से लाभ दिलवाता है।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ लग्नेश बुध होने से जातक व्यापार से धन कमायेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल होने से मंगल नीच के लाभ के प्रतिशत को तोड़ता है।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति उच्च का होकर विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय करायेगा।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ षष्टेश शनि लाभ के प्रतिशत में गिरावट करायेगा।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु का होना भाग्य में मंदी, लाभ में रुकावट का संकेत देता है।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु उद्योग को बीमार करेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में



कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। द्वादश भावगत शुक्र यहां सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि होगी। फलत: ऐसे जातक को धनार्जन एवं भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को ऋण-रोग व शत्रुओं से परेशानी होती रहेगी। फिर भी जातक धनवान, तेजस्वी एवं यशोवान होगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ शुक्र की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। अंतत: जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–व्यक्ति को ट्रेवलिंग या विदेशी व्यापार से लाभ होगा। जातक संबंधियों से दूर रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक सुखी एवं सम्पन्न होगा।

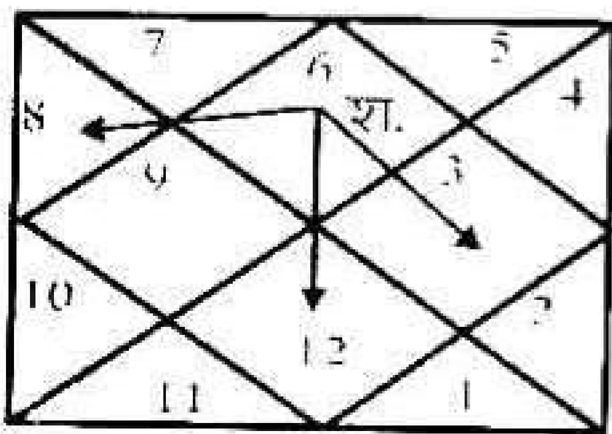
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य स्वगृही होने हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा जातक महान पराक्रमी व धनी होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा जातक की बाईं आंख को कष्ट पहुंचायेगा। नेत्र-पीड़ा के कारण आपरेशन होगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ लग्नेश बुध बारहवें होने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल होने से विपरीत राजयोग बनेगा। कुण्डली मांगलिक होगी। जातक के विवाह में विलम्ब होगा। द्विभार्या योग बनता है।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ सप्तमेश बृहस्पति विवाह में विलम्ब एवं द्विभार्या योग बनाता है।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ षष्टेश शनि विपरीत राजयोग से धन दिलवाता हैं पर जातक को संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु व्यर्थ की यात्रा में धन खर्च कराता है।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु यात्रा में चिंता एवं विलासिता की आपूर्ति में धन खर्च कराता है।

□□□

कन्यालग्न में शनि की स्थिति

कन्यालग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फल योगकर्त्ता है। यहां प्रथम स्थान में शनि कन्या (मित्र) राशि में रहेगा। ऐसा जातक बुद्धिमान एवं गंभीर स्वभाव का होता है। यहां लग्नस्थ शनि उच्चाभिलाषी है फलत: धन-सम्पत्ति, नौकरी-व्यवसाय और स्त्री-संतान का पूर्ण सुख देता है। जातक का शरीर पूर्ण हृष्ट-पुष्ट नहीं होता। जातक के गृहस्थ सुख में कुछ-न-कुछ कमी रहेगी।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि), सप्तम स्थान (मीन राशि) एवं दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा, जातक की विचार धारा पत्नी से कम मिलेगी। राज्य (सरकार) में जातक का दबदबा रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक महत्वकांक्षी होता है परन्तु जातक की किस्मत प्राय: वृद्धावस्था में चमकती है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: पंचमेश षष्टेश शनि की व्ययेश सूर्य के साथ निष्फल युति है। जातक अति महत्वाकांक्षी, चालाक एवं विचलित मन-मस्तिष्क वाला होगा। जातक के शरीर में बीमारी रहेगी।

2. **शनि+चंद्र**–यदि यहां चंद्रमा हो तो जातक अधर्मी होगा। उसे वायु विकार एवं पागलपन की शिकायत हो सकती है।

3. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध का होना व्यक्ति को भद्रयोग के कारण राजातुल्य वैभव देगा।

4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल हो तो जातक जेल यात्रा कर सकता है, जातक हठी स्वभाव का होगा।

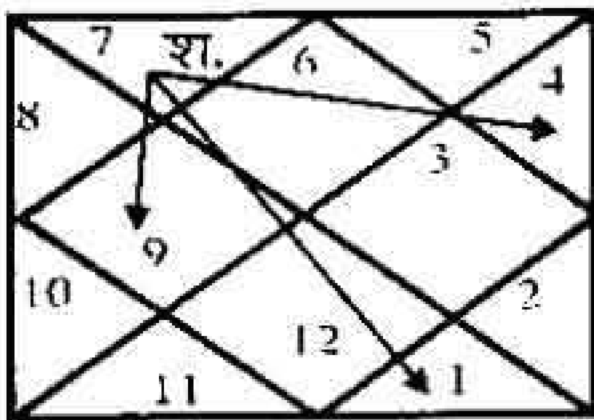
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति जातक को सुन्दर व सभ्य जीवन साथी देगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ भाग्येश शुक्र नीच का होकर भी भाग्य एवं धन में वृद्धि करायेगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से जातक षड्यंत्रकारी एवं कलहप्रिय होगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु हो तो जातक छिन्द्रावेषक दूसरों की कमी ढूंढने वाला होता है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश हैं। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अतः शनि पापी एवं निष्फल योगकर्त्ता है। यहां द्वितीय स्थान में शनि उच्च का होगा। तुला राशि के 20 अंशों में शनि परमोच्च का होगा। ऐसा जातक महाधनी होगा। उसे विद्या, धन, संतान और कुटुम्ब का पूर्ण सुख मिलेगा। ऐसा जातक बाहर से कुछ दिखता है, अंदर से कुछ होता है। जातक वस्तुतः आंतरिक रूप से शक्तिशाली होता है।

दृष्टि–द्वितीय भावगत शनि की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि), अष्टम भाव (मेष राशि) एवं लाभ भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक के पास वाहन होगा। जातक रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा तथा व्यापार-व्यवसाय में अच्छा धन कमायेगा।

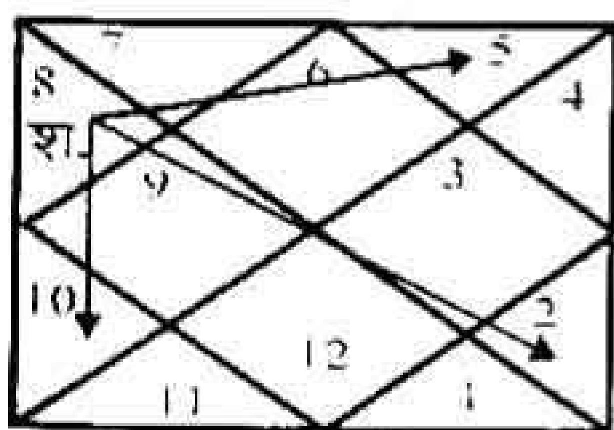
निशानी–प्रायः जातक को धातु, भण्डारण, खनन, श्रमिक-कार्यों से लाभ होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान, विद्यावान एवं यशोवान होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में शनि उच्च का एवं सूर्य नीच का होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर जातक के पास में पैसा टिकेगा नहीं। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनवान होगा। जातक की वाणी अप्रिय होगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा जातक को भरपूर धन प्रदान करेगा। जातक मृदुभाषी होगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक को यथेष्ट परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ प्राप्त होगा। जातक धनी व व्यापारी होगा।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल जातक के धन संग्रह में रुकावट का काम करेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सुखेश गुरु होने से जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल होगा जातक के पुत्र पराक्रमी होंगे।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ भाग्येश शुक्र यहां 'किम्बहुना योग' बनायेगा। इससे अधिक और क्या? जातक करोड़पति होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु धन के घड़े में छेद के समान है। जातक अर्जित धन के सर्वस्व भाग को एकदम अचानक खर्च करने में नहीं हिचकचायेगा।
8. **शनि+केतु**–जातक को धनसंग्रह करने में कष्ट आयेगा।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फलयोग कर्त्ता है। तृतीयस्थ शनि, वृश्चिक (शत्रु) शनि में होगा। ऐसा जातक साहसी, पराक्रमी व दृढ़ निश्चयी होता है। जातक के भाई-बहन होंगे, पर उनसे कम निभेगी। जातक कठोर परिश्रमी होगा। परिवार-कुटुम्ब एवं मित्रों के लिए सब कुछ करते हुए भी उसे वांछित यश नहीं मिलेगा। जातक की उसकी

पीठ पीछे बुराई होगी एवं उसके गुप्त-शत्रु भी बने रहेंगे। जातक मनकी एवं कठोर निर्णय लेने वाला व्यक्ति होगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि), भाग्य स्थान (वृष राशि) तथा व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक प्रजावान, भाग्यशाली, एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–जातक अपने से छोटे भाई-बहनों के सुख में कमी महसूस करेगा। शनि की यह स्थिति जातक के छोटें भाई की आयु के लिए घातक है।

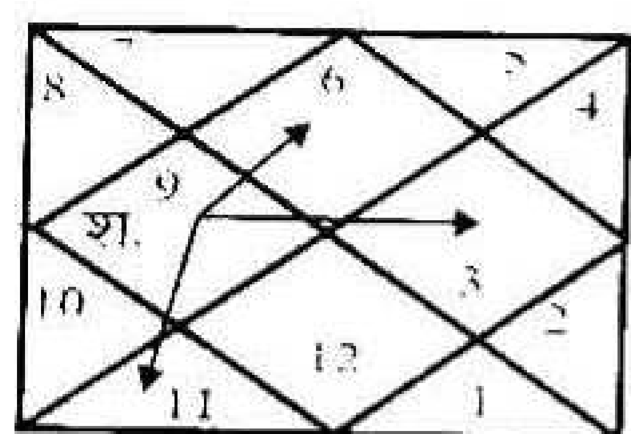
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के तृतीय स्थान में सूर्य+शनि की युति अप्रिय होगी। जातक की छोटे-बड़े किसी भाई से नहीं बनेगी। भाईयों का सुख कमजोर होगी। जातक के मित्र-परिजन भी विश्वास योग्य नहीं होंगे। दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम (मकर राशि), नवम (वृष राशि) एवं व्यय भाव (सिंह राशि) पर होने से संतति योग उत्तम पर संतानों में झगड़ा रहेगा। जातक के भाग्योदय में संघर्ष एवं खर्च की प्राबल्यता रहेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा जातक का पराक्रम बढ़ायेगा, पर बड़े भाई का सुख कमजोर होगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध, भाई-बहनों का सुख देगा। जातक के मित्र मददगार होंगे।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल तीन भाईयों का सुख देगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश गुरु होने से जातक का ससुराल पक्ष पराक्रमी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ भाग्येश शुक्र होने से जातक के मित्र व कुटुम्बीजन भाग्यशाली होंगे।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से भाईयों में बैर रहेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु अपकीर्ति दिलायेगा। जातक कुख्यात होगा।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में

कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फल



योग कर्त्ता है। यहां चतुर्थ स्थान में शनि केन्द्रस्थ होकर धनु राशि में होगा जो इसकी शत्रु राशि है। ऐसा जातक प्राय: क्रोधी व भड़कीले स्वभाव का स्वामी होगा। जातक की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा में रुकावट आ सकती है। जातक की मां बीमार हो सकती है अथवा जातक मां के सुख से वंचित रह सकता है। ऐसे जातक को वाहन या मकान के सुख में बाधा आयेगी। जातक की पैतृक सम्पत्ति विवादास्पद रहेगी।

दृष्टि–चतुर्थस्थ शनि की दृष्टि छठे भाव (कुम्भ राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक शत्रु व रोग का नाश करने में सक्षम होगा। जातक को विलम्ब से ही सही पर परिश्रम का फल जरूर मिलेगा।

निशानी–जातक स्वार्थी प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा, पर भाग्यशाली होगा। पंचमेश का केन्द्रस्थ होना शुभ है। प्रथम संतति के बाद जातक की उन्नति होगी।

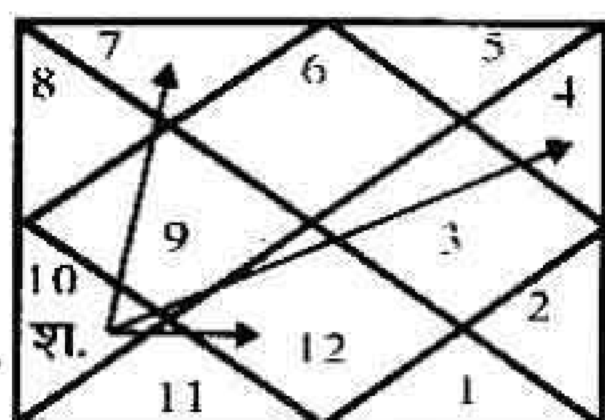
दशा–शनि की दशा- अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न में चतुर्थ स्थान में सूर्य+शनि की युति से जातक की माता बीमार रहेगी। वाहन दुर्घटना होगी। यहां धनु राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं लग्न स्थान (कन्या राशि) पर रहेगी। फलत: जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक अपनी खुद की मेहनत से आगे बढ़ेगा, परन्तु जातक के जीवन का सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक कंजूस होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ सुखेश चंद्रमा जातक को वाहन तथा माता का सुख देगा। परन्तु जातक की माता उद्विग्न या बीमार रहेगी।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध जातक को प्रसिद्ध व्यक्ति बनायेगा।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल, भाईयों में मनमुटाव करायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से हंसयोग बनेगा। जातक अनेक वाहन, अनेक भवनों का स्वामी होगा। उसके अनेक सेवक होंगे।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ धनेश शुक्र होने से जातक को मकान के माध्यम से धन मिलेगा। जातक को पिता-माता की सम्पत्ति मिलेगी।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक की माता की अकाल मृत्यु कराता है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देता है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फल योगकर्त्ता है। यहां पंचमस्थ शनि मकर राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक विद्यावान, प्रजावान तथा दूरदर्शी होगा। प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व आगे-पीछे सोचने वाला, चिंतन-मनन करने वाला, समझदार व्यक्ति होगा। जीवन में गुप्त शत्रु अवश्य होंगे। संबंधियों से झगड़ा रहेगा। जातक को धन-दौलत की कमी नहीं रहेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), एकादश भाव (कर्क राशि) एवं धन भाव (तुला राशि) पर होगी फलत: जातक धनी होगा। स्वतंत्र रोज़गार या व्यापार में धन बढ़ेगा। गृहस्थी भी ठीक-ठाक होगी।

निशानी–जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। यदि परिवार नियोजन का सहारा न लिया तो सात कन्याएं हो सकती हैं।

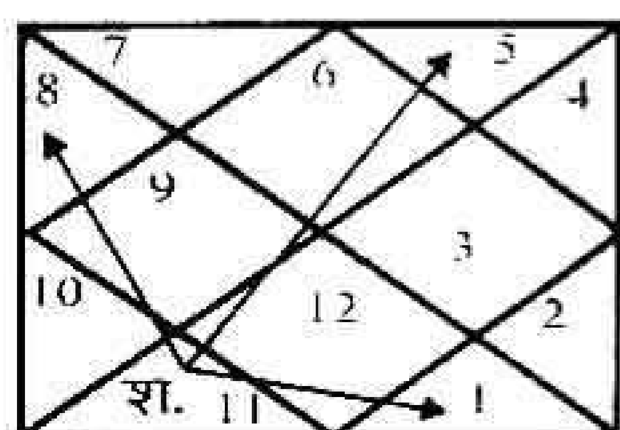
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के पंचम स्थान में शनि स्वगृही होगा एवं सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर उद्विग्न होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (कर्क राशि) एवं धन भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक प्रजावान व धनवान होगा। जातक के शत्रुओं की कमी नहीं होगी। जातक की खुद की संतान ही जातक से वैरभाव रखेगी। प्रारंभिक विद्या में रुकावट आयेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्र, कन्या संतति की वृद्धि करेगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध होने से जातक बुद्धि, बल, विद्या व हुनर से धन कमायेगा।

4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक करोड़पति होगा। जातक की संतति जातक से अधिक धनवान होगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। जातक राजा के सामन वैभवशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु पुत्र संतान की प्राप्ति में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु संतति हेतु शल्य चिकित्सा करायेगा।

कन्यालग्न में की स्थिति शनि षष्टम स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फलयोग कर्त्ता है। यहां छठे स्थान में शनि स्वगृही अपनी मूल त्रिकोण कुंभ राशि में होगा। शनि की यह स्थिति विलम्ब संतति योग बनाती है पर साथ में विपरीत राजयोग भी बनता है। षष्टेश षष्टम स्थान में स्वगृही 'हर्षनामक' राजयोग की सृष्टि करता है। ऐसा जातक अपना भाग्य खुद बनाता है। जातक उत्तम धन-सम्पत्ति का स्वामी होता है तथा उसे गृहस्थ सुख, पत्नी-संतान सुख जीवन में मिलता है। जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम व समर्थ होता है।

दृष्टि–छठे भावगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि), व्यय भाव (सिंह राशि) एवं पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक खर्चीले तथा कलहकारी स्वभाव का होगा। जातक की पीठ पीछे उसकी बुराई होती रहेगी।

निशानी–जातक की गुप्त शत्रु अवश्य होंगे।

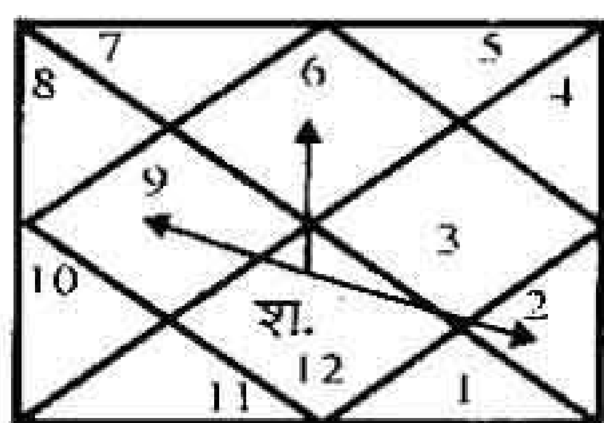
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के छठे स्थान में शनि स्वगृही एवं सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा पर दोनों ही ग्रह यहां विपरीत राजयोग करके बैठेंगे। शनि के कारण हर्ष योग एवं सूर्य के कारण सरल योग बनेगा। जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का सामना करने में सक्षम होगा। जातक उत्तम धन-सम्पति एवं वाहन का स्वामी होगा।

2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा खड्डे में होने से लाभभंग योग बनेगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध होने से लग्नभंग योग बना।
4. **शनि+मंगल**–यदि यहां मंगल हो तो जातक को कोई खतरनाक रोग होगा। जिससे जातक का आपरेशन करना पड़ेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति विलम्ब विवाह योग एवं भौतिक सुख में बाधा उत्पन्न करेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र भाग्यभंग योग एवं धनभंग योग बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
7. **शनि+राहु**–यदि यहां राहु है तो व्यक्ति हिस्टीरिया से पीड़ित होगा।
8. **शनि+केतु**–यहां शनि के साथ केतु होने से जातक उन्मादी प्रवृति का होगा।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फल योगकर्त्ता है। यहां सप्तमस्थ शनि मीन (सम) राशि मे होगा। ऐसे जातक को धन की कमी नहीं रहेगी। जातक का दाम्पत्य-सुख, पत्नी-सुख, संतान सुख ठीक रहेगा। पर प्राय: पत्नी जातक से बड़ी उम्र की होगी। षष्टेश शनि सप्तम में होने के कारण उपरोक्त सभी सुखों में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी। लाल किताब वालों ने इस शनि को विधाता की कलम कहा है। जातक का चरित्र रहस्यमय होता है। जातक अपनी किस्मत खुद बनाता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (वृष राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी फलत: जातक भाग्यशाली होगा। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा संकल्प पूर्वक किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी।

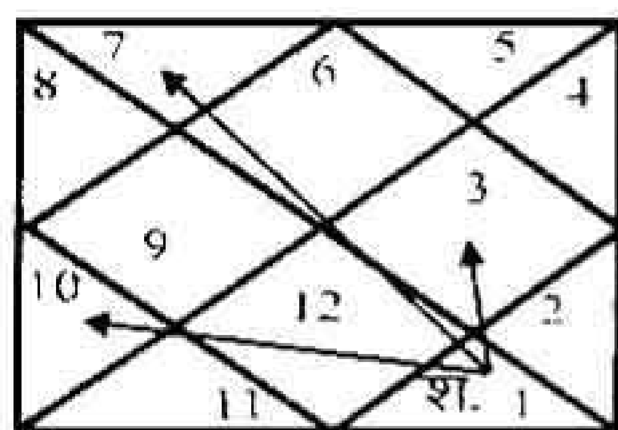
निशानी–प्राय: ऐसे जातक की एकाधिक शादी होगी। विलम्ब विवाह भी संभव है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को मिश्रित फल देगी पर उन्नति भी जरूर करायेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के सप्तम स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री एवं सूर्य मित्रक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलत: जातक का विवाह विलम्ब से होगा। जातक को गृहस्थ सुख में बाधा, भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति में भारी संघर्ष, भाग्योदय में संघर्ष, किसी भी कार्य के प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा सुन्दर पत्नी दिलायेगा। विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध होने से 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक परिश्रम के साथ शीघ्र आगे बढ़ेगा।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल होने से विवाह सुख में बाधा होगी। जातक की कुण्डली डबल मांगलिक हो जायेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ स्वगृही बृहस्पति के कारण 'हंस योग' बनेगा। जातक धनवान होगा। जातक की पत्नी सुन्दर व सभ्य होगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ उच्च का शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। प्रथम संतति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से विवाह-विच्छेद योग बनता है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु गृहस्थ सुख में विवाद कराता है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फल योगकर्त्ता है। यहां अष्टम स्थान में शनि मेष (शत्रु) राशि में होगा। शनि यहां नीच राशि का है तथा 20 अंशों में परम नीच का होगा। शनि की यह स्थिति विलम्ब संतति योग, विद्या भंग योग बनाती है। परन्तु षष्टेश शनि अष्टम स्थान में होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होती है। इसके कारण जातक धनी होगा। वाहन व नौकर सुख भी होगा। परन्तु ऐसा जातक हठी एवं अपने मनमर्जी का मालिक होता है। जातक अभिमानी होता है, प्राय: दूसरों की सलाह मानना पसन्द नहीं करता।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि राज्य स्थान (मिथुन राशि), धन स्थान (तुला राशि) एवं पंचम स्थान (मकर राशि) पर होगी जो कि शनि की स्वराशि है। फलत: जातक का राज्य (सरकार) में रुतबा होगा। जातक धनी, विद्यावान व संतान युक्त होगा।

निशानी–जातक अपनी जाति से बाहर की स्त्रियों में रुचि रखेगा।

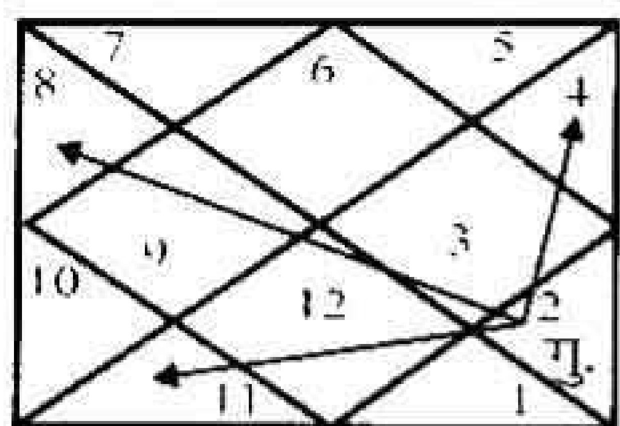
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। वह भौतिक सुखों की प्राप्ति करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के अष्टम स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री, नीच का तो सूर्य उच्च का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। यहां शनि के कारण 'हर्ष योग' एवं सूर्य के कारण सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (मिथुन राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं पंचम भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक पुत्रवान व महाधनी होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं अपने शत्रुओं को समूल नष्ट करने वाला होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ यदि चंद्रमा हो तो जातक को पीलिया, यकृत रोग, उदर रोग, वायु विकार एवं खून की कमी रहेगी।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ मंगल विपरीत राजयोग करता है यहां हर्ष योग एवं विमल योग दोनों योग बनेंगे। जिससे जातक को लाभ होगा।
4. **शनि+मंगल**–जातक को दमे या फेफड़े की बीमारी संभव है। गुप्त रोग होने से शल्य चिकित्सा संभव है।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से द्विभार्या योग बनेगा अथवा एक सगाई होकर छूट जायेगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' बनेगा। जातक को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से लम्बी बीमारी संभव है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु शल्य चिकित्सा योग का संकेत देता है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में

कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फल



योगकर्त्ता है। यहां नवम भावगत शनि वृष (मित्र) राशि में होगा। पंचमेश शनि भाग्य में होने के कारण जातक का बौद्धिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास होगा। जातक आर्थिक रुप से सम्पन्न होगा। लाल किताब वालों ने इस शनि को 'आक के पेड़' की संज्ञा दी है। ऐसा जातक बोली का कड़वा होता है एवं दूसरों का भला नहीं करता। प्राय: अकेला चलने में विश्वास रखता है।

दृष्टि–नवम भावगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं षष्टम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा। उसके शत्रु नष्ट होंगे। जातक व्यापार प्रिय होगा। व्यापार से धन कमायेगा।

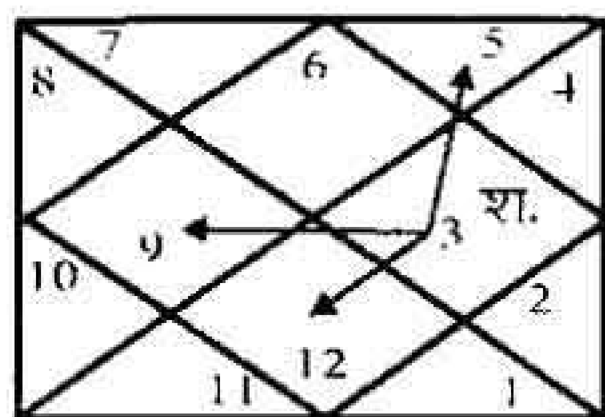
निशानी–ऐसा जातक एकांकी जीवन बितता है। जातक वीरता के लिए विख्यात होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का भौतिक विकास होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के नवम स्थान में शनि मित्र राशि में हो तो सूर्य शत्रु राशि में होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (कर्क राशि) पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं छठे स्थान (कुम्भ राशि) को देखेंगे। ऐसे जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा होने से उच्च का होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक अविश्वासी व धोखेबाज होगा।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल होने से जातक का भाग्योदय में बाधा आयेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र स्वगृही होने से जातक सौभाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के राहु होने से भाग्य में रुकावट महसूस करेंगे।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु भाग्योदय में बाधक है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी है। निष्फल योगकर्त्ता है। यहां दशम स्थान में शनि मिथुन (मित्र) राशि में होगा। जातक धनवान होगा। जातक न्यायप्रिय एवं न्यायाधीश होने की क्षमता रखता है। जातक शासक या मंत्री होता है। राजनीति में जातक उच्च पद तथा प्रसिद्धि को प्राप्त करता है। जातक माता-पिता का भक्त होता है। लाल किताब वालों ने इस शनि को किस्मत जगाने वाला मुसाफिर कहा है। जातक एश्वर्यशाली व तेजस्वी जीवन जीता है।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि), चतुर्थ भाव (धनु राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक को उत्तम वाहन एवं भवन की प्राप्ति होती है। जातक खर्चीले स्वभाव का परोपकारी जीव होता है।

निशानी–जीवन के अंतिम समय में जातक पवित्र नदियों, तीर्थस्थलों पर जाता है एवं संन्यासी हो जाता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का आर्थिक व सामाजिक विकास होता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के दशम स्थान में शनि व सूर्य दोनों ही केन्द्रवर्ती होकर मित्रक्षेत्री होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि), चतुर्थ भाव (धनु राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलत: राज्यपक्ष (सरकार) से विवाद रहेगा। शत्रुनाश एवं कोर्ट-कचहरी को लेकर धन खर्च होगा। जातक की माता एवं पत्नी बीमार रहेगी। पिता से विचारधारा नहीं मिलेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा होने से जातक राज्य में, सरकार में, उचित मान-सम्मान को प्राप्त करेगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ दशमेश बुध स्वगृही होने से 'भद्रयोग' बना। जातक राजा के समान प्रबल पराक्रमी होगा।

4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल होने से राजयोग में बाधा आयेगी।

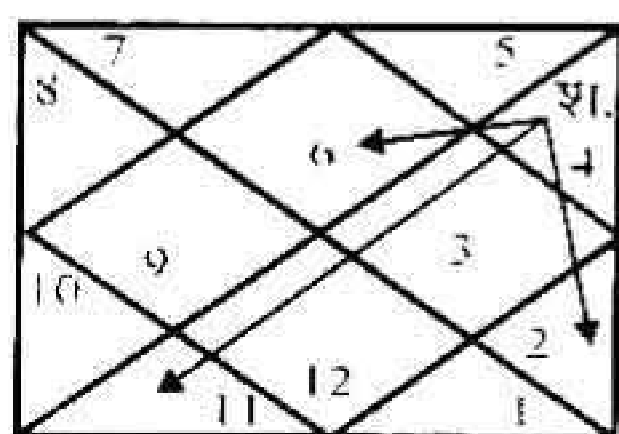
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से जातक धार्मिक नेता एवं राजनीति में प्रमुख व्यक्ति होगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से व्यक्ति भाग्यशाली एवं धनवान होगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ स्वगृही राहु होने से जातक हठी राजा होगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु होने से जातक को सरकारी नौकरी में भटकाव आयेगा।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी है। निष्फल योगकर्त्ता है। यहां एकादश स्थान में शनि कर्क (शत्रु) राशि में होगा। फिर भी जातक को विद्या लाभ, धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। जातक प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा। ऐसा जातक प्राय: उद्योगपति होता है। वह अनेक पुरुष-महिलाओं को रोजगार पर लगाकर धन कमायेगा। लाल किताब वालों ने इस शनि को खुद का विधाता कहा है। जातक अपना भाग्य खुद बनाता है। जातक दीर्घजीवी होता है।

दृष्टि–एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि), पंचम स्थान (मकर राशि) एवं अष्टम स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक विद्यावान होगा। जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सफल होगा।

निशानी–जातक के मित्र बहुत कम होंगे।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक अनेक क्षेत्रों में लाभान्वित होता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के एकादश स्थान में शनि व सूर्य दोनों शत्रुक्षेत्री होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (कन्या राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलत: लाभ में कमी, मन-मस्तिष्क अस्थिर रहेगा। संतान पक्ष से दु:खी होगी। जातक दीर्घायु को प्राप्त होगा।

2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा स्वगृही होने से जातक को व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।

3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक का मन उद्विग्न रहेगा। चित्त परेशान रहेगा।

4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल नीच का होगा। जातक के व्यापार-व्यवसाय में विवाद रहेगा।

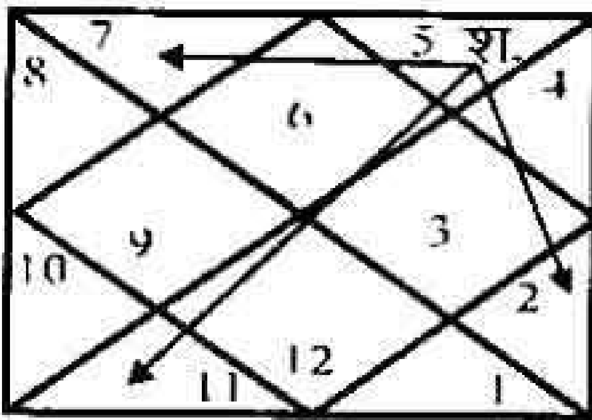
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति उच्च का होगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ भाग्येश शुक्र होने से जातक का भाग्योदय व्यापार में होगा। जातक उद्योगपति होगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से व्यापार में बाधाएं आयेंगी।

8. **शनि+केतु**–शनि के केतु होने से व्यापार में रुकावटें आयेंगी।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में



कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी है। निष्फल योगकर्त्ता है। यहां द्वादश स्थान में शनि सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शनि की यह स्थिति विलम्ब संतति योग, विद्याभंग योग बनाती है। परंतु षष्टेश शनि बारहवें जाने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। फलत: जातक भाग्यशाली धनवान एवं सम्पन्न होगा। यात्राएं अधिक करेगा। जातक यदि सुस्त और आलसी रहा तो एकत्रित धन का नाश होगा। व्यापार में अतिविश्वास के कारण जातक को हानि उठानी पड़ेगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत शनि की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि), छठे स्थान (कुम्भ राशि) एवं भाग्य स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक धनवान एवं भाग्यशाली होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–जातक की आंखें भेंगी होगी या कोई अंग विकृत होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में खर्च बढ़ेगा, पर भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति भी होगी।

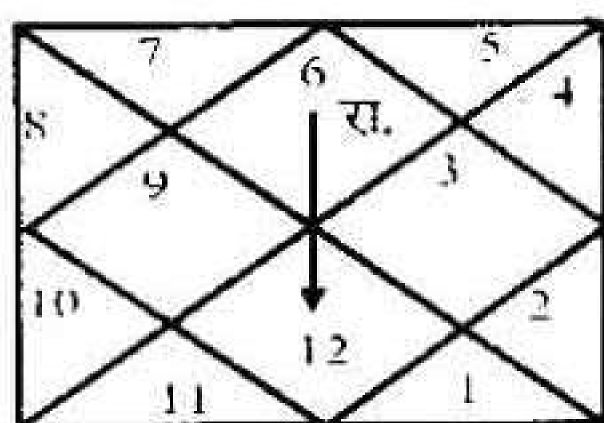
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के द्वादश स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री और सूर्य स्वगृही होगा। जातक को नेत्र पीड़ा होगी। इन दोनों ग्रहों की इस स्थिति से हर्ष योग व सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि धन भाव (तुला राशि), षष्टम भाव (कुम्भ राशि) एवं भाग्य भाव (वृष राशि) पर होगी, फलत: जातक महाधनी, भाग्यशाली तथा ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा होने से जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान होगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध होने से जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलेगा। कोई भी कार्य प्रथम प्रयास में सफल नहीं होगा।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल बारहवें होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी होगा पर डबल मांगलिक होने से जातक के विवाह में विलम्ब या व्यवधान होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से 'द्विभार्या योग' बनता है। जातक की एक सगाई होकर छूट जाएगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ भाग्येश शुक्र होने से भाग्योदय एवं धनोपार्जन में बाधाएं आयेंगी।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से यात्रा में चोरी व धोखा होगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु होने से यात्रा अप्रिय रहेगी। जातक द्वारा उधार दिया हुआ पैसा डूब जायेगा।

❑❑❑

कन्यालग्न में राहु की स्थिति

कन्यालग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न से ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां लग्नस्थ राहु कन्या (मित्र) राशि में ही है। राहु की यह स्थिति राजयोग प्रदायक है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी होता है। उसमें आत्म विश्वास कूट-कूट कर भरा होता है। जातक में आंतरिक विश्वास विलक्षण होता है। जातक प्राय: जादू-टोना व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है। लग्नेश बुध की स्थिति यदि प्रतिकूल हो तो जातक के सभी संबंधी उसके शत्रु हो जायेंगे। जातक निरुद्देश्य घूमता रहेगा।

दृष्टि–राहु की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक के गृहस्थ सुख में कुछ-न-कुछ न्यूनता (कमी) बनी रहेगी।

निशानी–ऐसा जातक जीवन की असफलताओं से आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त करता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक भड़कीले व उग्र स्वभाव का होगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ लाभेश चंद्रमा जातक के लाभ प्राप्ति के कार्यों में बाधक सिद्ध होगा।

3. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा अथवा राजा से कम नहीं होगा।

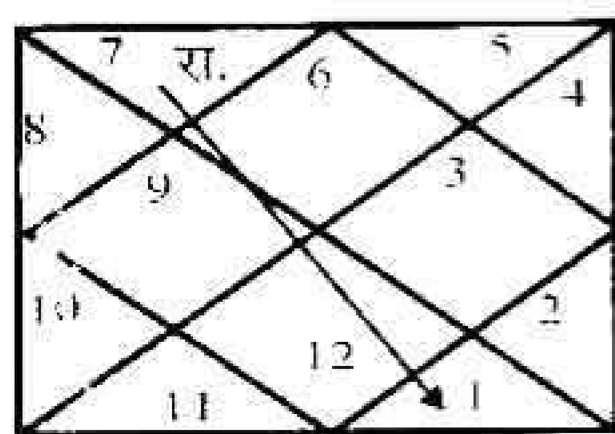
4. **राहु+मंगल**–राहु के साथ अष्टमेश मंगल जातक को पराक्रमी व झगड़ालू बनायेगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह प्रथम स्थान कन्या राशि में होंगे। राहु अपनी मित्र राशि एवं बृहस्पति शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। इस योग के कारण जातक हठी, आध्यात्मिक होते हुए भी कुटिल स्वभाव का होगा। ऐसा जातक प्रायः धार्मिक आडम्बर किया करेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ षष्टेश शनि जातक के शत्रु पैदा करता रहेगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ भाग्येश शुक्र जातक को धनवान एवं भाग्यशाली बनायेगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु के स्वय का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां द्वितीय भाव में राहु तुला (मित्र) राशि का होगा। ऐसे जातक को कष्ट, संघर्ष, आर्थिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। धन का संग्रह नहीं हो पायेगा, पर धन की कमी को लेकर जातक का कोई काम अटका हुआ नहीं रहेगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को राजगुरु का मातहत कहा है। ऐसा जातक राजनेताओं का मार्गदर्शक होता है।

दृष्टि–राहु की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। राहु की यह स्थिति जातक की दीर्घायु में बाधक है।

निशानी–जातक अमीरी-गरीबी की छाया में पलकर बड़ा होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में धनहानि या मानहानि की संभावना बनी रहती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ व्ययेश सूर्य होने से धन की भारी हानि होने की संभावना बनी रहेगी।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ लाभेश चंद्रमा लाभ करायेगा, पर लाभ का काफी प्रतिशत व्यर्थ में चला जायेगा।

3. **राहु+बुध**–राहु के साथ लग्नेश बुध होने से जातक को धनार्जन कठोर परिश्रम से होगा।

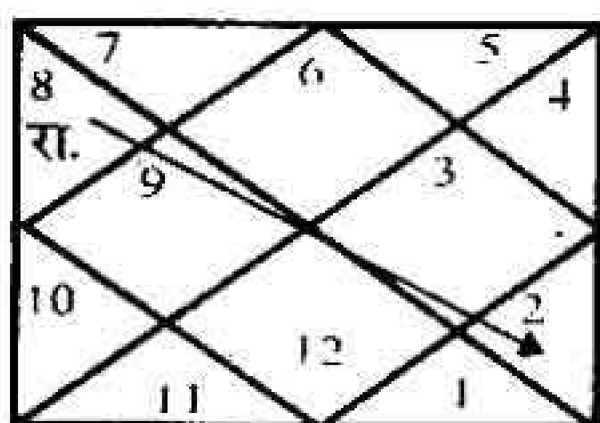
4. **राहु+मंगल**–राहु के साथ अष्टमेश मंगल होने से जातक की वाणी दूषित होगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह द्वितीय स्थान में तुला राशि के होंगे। राहु यहां मित्र राशि में एवं बृहस्पति शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। इस योग के कारण जातक दार्शनिक, सच्चाई का साथ देने वाला परोपकारी होगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ भाग्येश शुक्र होने से जातक धनवान तथा भाग्यशाली होगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ षष्ठेश शनि होने से शत्रुओं से बीच बचाव में जातक का धन खर्च होगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां तीसरे स्थान में राहु वृश्चिक (मीन) राशि का होगा। ऐसा जातक अपनी उन्नति के लिए बुरे से बुरा काम करने के लिए नहीं हिचकिचायेगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को अंगरक्षक कहा है। ऐसा जातक, दूसरों की रक्षा के लिए अपने प्राण दे देगा। राहु की यह स्थिति जातक के भाईयों के लिए साधारणत: ठीक नहीं होती। भाई-कुटुम्बीजनों में मनमुटाव रहेगा। मित्र दगा देंगे।

दृष्टि–तृतीयस्थ राहु की दृष्टि नवम स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक के भाग्य में कुछ-न-कुछ न्यूनता का अनुभव रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति से अपना काम निकालने में माहिर होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में अप्रत्याशित समाचार मिलेंगे तथा विरोधियों का सामना करना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ लाभेश चंद्रमा नीच का होगा। फलत: भाई-बहनों में मनमुटाव होगा।

3. **राहु+बुध**–राहु के साथ लग्नेश तृतीय स्थान में होने से पराक्रम तेज रहेगा।

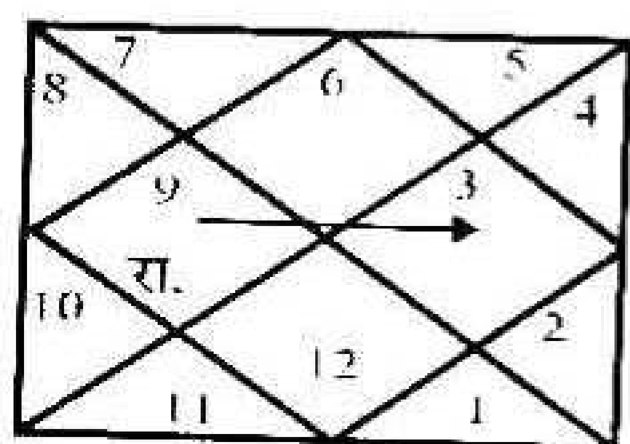
4. **राहु+मंगल**–राहु के साथ अष्टमेश मंगल होने से भाइयों में विरोध रहेगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां बृहस्पति मित्र राशि में तो राहु अपनी नीच (वृश्चिक) राशि में होगा। फलत: 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोता। परिजनों व मित्रों से कभी सहयोग, कभी असहयोग मिलता रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ धनेश, भाग्येश शुक्र होने से जातक को बहनों से लाभ होगा। स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ षष्टेश शनि तृतीय स्थान में होने से बड़े भाई से बैर रहेगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु की स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। चतुर्थ स्थान में राहु धनु (शत्रु) राशि में होगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'धर्मी' कहा है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक व परोपकारी होता है। परन्तु जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। माता-पिता का अल्प सुख मिलता है। वाहन से दुर्घटना संभव है। भूमि-भवन के मामले को लेकर विवाद होगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ राहु की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को राजा (सरकार) द्वारा सम्मान मिलता है।

निशानी–जातक की शिक्षा अधूरी रह जाती है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक कपट कार्य हेतु दोषी ठहराया जायेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति में बाधा आयेगी।

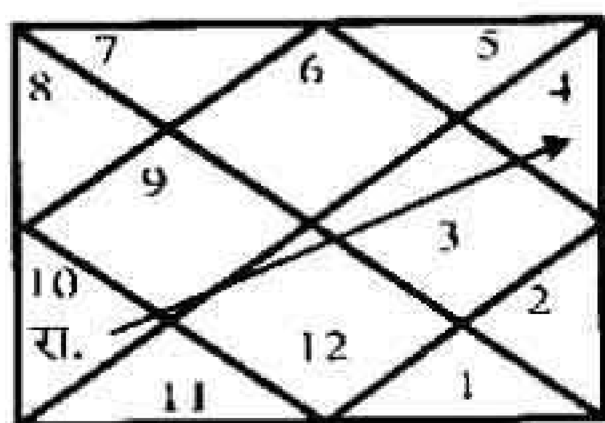
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–चतुर्थ स्थान में राहु के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक की माता बीमार रहेगी।

2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा राहु के साथ होने से जातक की माता को कष्ट, मामा से अनबन संभव है।

3. **राहु+बुध**—लग्नेश बुध राहु के साथ होने से जातक को सुख-संसाधनों में कमी महसूस होगी।
4. **राहु+मंगल**—अष्टमेश मंगल राहु के साथ होने से वाहन से दुर्घटना संभव है।
5. **राहु+गुरु**—यहां बृहस्पति के कारण हंस योग, केसरी योग, कुलदीपक योग बना। राहु यहां शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होते हुए भी माता का सुख प्राप्त नहीं कर पायेगा।
6. **राहु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश शुक्र यदि राहु के साथ हो तो जातक भाग्यशाली एवं धनवान होगा परन्तु जातक की जाति या समाज में प्रतिष्ठा नहीं होगी।
7. **राहु+शनि**—षष्टेश शनि राहु के साथ होने से मामा, ननिहाल व मातृ पक्ष को कष्ट होगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां पंचमस्थ राहु मकर (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक का उदर शूल होगा। जातक अपने मित्रों द्वारा गलत समझा जायेगा। 'लाल किताब' वालों ने इस राहु को 'शरारती' कहा है। ऐसे जातक को पुत्र सुख विलम्ब से मिलता है। जातक प्राय: व्यर्थ के वाद-विवाद में उलझा रहेगा अथवा हृदय रोग से पीड़ित होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ राहु की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत: व्यापार-व्यवसाय में प्रारम्भिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा।

निशानी—जातक के अनेक बच्चों की मृत्यु होगी व गर्भस्थ शिशु का नाश होगा।

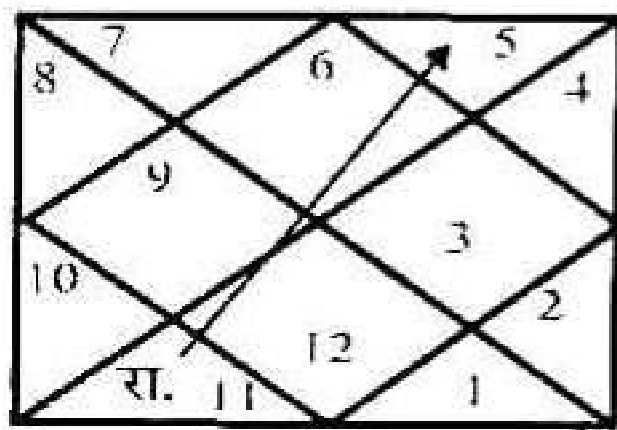
दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य पंचम स्थान में शत्रुक्षेत्री होकर राहु के साथ संतान प्राप्ति में हानि करायेगा तथा बाधक होगा।
2. **राहु+चंद्र**—लाभेश चंद्रमा पंचम स्थान पर राहु के साथ लाभकारी स्थिति का द्योतक है। जातक को संघर्ष के बाद विद्या प्राप्ति में सफलता मिलेगी।

3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध राहु के साथ होने से जातक बुद्धिमान होगा।
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल राहु के साथ होने से विद्या व संतति प्राप्ति में बाधा के योग बनते हैं।
5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति यहां नीच राशि में तथा राहु अपनी मित्र (मकर राशि) में होने से यहां 'चाण्डाल योग' बना। जातक को उच्च विद्या एवं पुत्र संतति प्राप्ति की प्राप्ति में रुकावट संभव है। जातक ब्रह्मज्ञानी होगा।
6. **राहु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र राहु के साथ होने से जातक का भाग्य कुंठित होगा।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि राहु के साथ होने से जातक की संतान रोगी होगी।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति षष्टम् स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। छठे स्थान में यहां राहु कुम्भ (मित्र) राशि में होगा। शास्त्रकारों ने छठे राहु को राजयोग कारक माना है। फलत: ऐसा जातक लम्बी उम्र वाला एवं धनी व्यक्ति होता है। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'फांसी काटने वाला मददगार हाथी कहा' कहा है। ऐसे व्यक्ति को कोई भी बाधा अधिक समय तक पीड़ित नहीं कर सकती। ऐसे जातक को प्रेतों से कष्ट और गुप्तांग में रोग होता है।

दृष्टि–षष्टमस्थ राहु की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक परोपकारी एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–ऐसा जातक भाग्यवादी न होकर कठोर पुरुषार्थ द्वारा भाग्य को बदलने का सामर्थ्य रखता है। जातक के अनेक चचेर भाई होंगे।

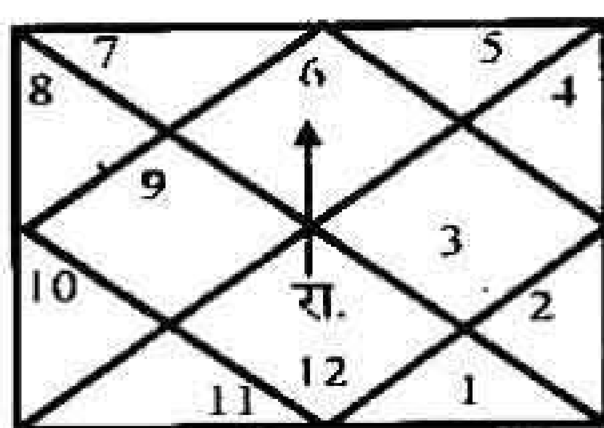
दशा–राहु के दशा-अंतर्दशा में रोगोत्पत्ति संभव है। इसकी दशा में सामाजिक व राजनैतिक संघर्ष संभव है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य छठे स्थान में राहु के साथ विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनी होगा।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा हो तो जातक विक्षिप्त होगा। जातक मनोव्याधि से ग्रसित होगा।
3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध राहु के साथ होने से जातक का परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल राहु के साथ होने से भाईयों में विरोध रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति कुम्भ (शत्रु) राशि एवं राहु मित्र राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है। पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव है। जातक अपनी योग्यता का दुरुपयोग करने से नहीं चूकेगा।
6. **राहु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र राहु के साथ होने से जातक को धन प्राप्ति में बाधा होगी एवं वह भाग्योदय में रुकावट महसूस करेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि हो तो जातक विक्षिप्त अथवा मनोव्याधि से ग्रसित होगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां सप्तमस्थ राहु मीन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक की पत्नी प्रायः रोगग्रस्त रहती है। जातक विजातीय एवं विदेशी स्त्रियों में रुचि रखता है। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'दौलत का धुंआ निकालने वाला चाण्डाल' कहा है। जातक अपने ऐशो-आराम के लिए धन का अपव्यय करेगा। उसे साझेदारी एवं गुप्त व्यापार से नुकसान उठाना पड़ेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी।

निशानी–जातक मधुमेह, प्रेतों एवं अप्राकृतिक वस्तुओं से पीड़ित रहता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य सप्तम स्थान में होने से जातक का विवाह विलम्ब से होगा। जातक को पत्नी का, गृहस्थ जीवन का पूर्ण सुख नहीं मिलेगा।
2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा सप्तम स्थान में होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर उनमें वैचारिक मतभेद रहेंगे।

3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध सप्तम स्थान में राहु के साथ होने से जातक की पत्नी बुद्धिशाली होगी तथा जातक की उन्नति में सहायक होगी।

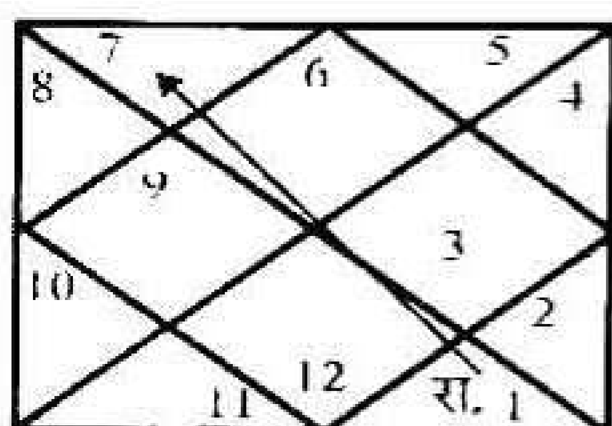
4. **राहु+मंगल**–

5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति स्वगृही होने के कारण कुलदीपक योग, केसरी योग, हंस योग बनायेगा। राहु शत्रुक्षेत्री होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होते हुए भी निम्न हरकत करने वाला, अपने से बड़ी उम्र वाली एवं विधवा स्त्री से सहवास करता है, सम्पर्क रखता है।

6. **राहु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र राहु के साथ होने से जातक की पत्नी सुन्दर पर कामी होगी।

7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि सप्तम स्थान में राहु के साथ होने से जातक के जीवन साथी को गुप्त बीमारी रहेगी।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां अष्टमस्थ राहु मेष (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को गुप्त शत्रु, दैहिक कष्ट व दुर्घटना का भय रहेगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'कड़वा धुआं' कहा है। ऐसा जातक अच्छे परिवार में जन्म लेकर भी गंदी हरकतों के कारण लोकनिंदा से पीड़ित होगा। जातक प्राय: मानसिक तनाव में रहता है अथवा हीनभावना से ग्रसित होता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धन भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को धन की हानि एवं पारिवारिक कष्ट होंगे। जातक बोली का कड़वा होगा।

निशानी–ऐसे जातक सीधे रास्तों पर नहीं चलते, कटंकाकीर्ण मार्ग ही उन्हें पसंद होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक को दैहिक, आर्थिक एवं सामाजिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य अष्टम स्थान में राहु के साथ उच्च का विपरीत राजयोग बना रहा है। जातक धनी एवं महान पराक्रमी होगा।

2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा अष्टम स्थान में राहु के साथ होने से व्यापार में लाभ का प्रतिशत तोड़ेगा। व्यापार में अचानक नुकसान होगा।

3. **राहु+बुध**–लग्नेश आठवें राहु के साथ 'लग्नभंग योग' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

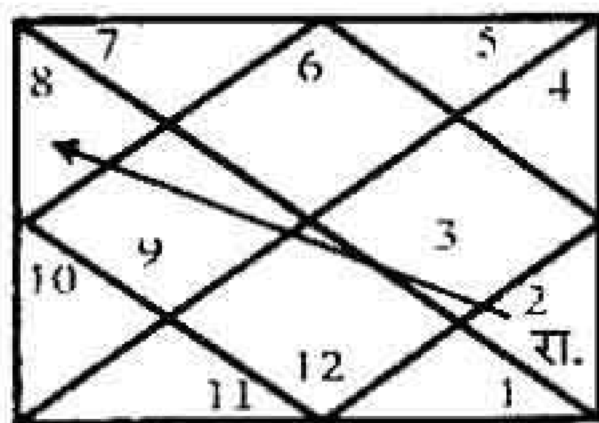
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल स्वगृही होकर अष्टम भाव में राहु के साथ विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनी व पराक्रमी होगा।

5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति के कारण विवाहभंग योग, सुख भंगयोग बनेगा। परंतु राहु यहां शत्रुक्षेत्र में होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक के गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी। प्रत्येक भौतिक उपलब्धि कुछ मुसीबत लेकर आयेगी।

6. **राहु+शुक्र**–धनेश व भाग्येश शुक्र अष्टम भाव में राहु के साथ होने से धनार्जन में रुकावट का संकेत देता है। जातक का भाग्योदय काफी संघर्ष के बाद होगा।

7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि अष्टम स्थान में राहु के साथ हर्षनामक विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति नवम् स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न से ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां नवम भावगत राहु वृष राशि में उच्च का होगा। ऐसे व्यक्ति का राजा तुल्य पराक्रम एवं वैभव होता है। साहस, पराक्रम और वीरता इनमें कूट-कूट कर भर होती है। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'पागलों का सरताज हकीम' कहा है। ऐसा जातक स्व प्रयासों से प्राय: उलझे हुए जटिल मामलों को सुलझा देता है।

दृष्टि–नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक अपने परिवार व कुटुम्ब का चहेता तथा मित्रों का मददगार होता है।

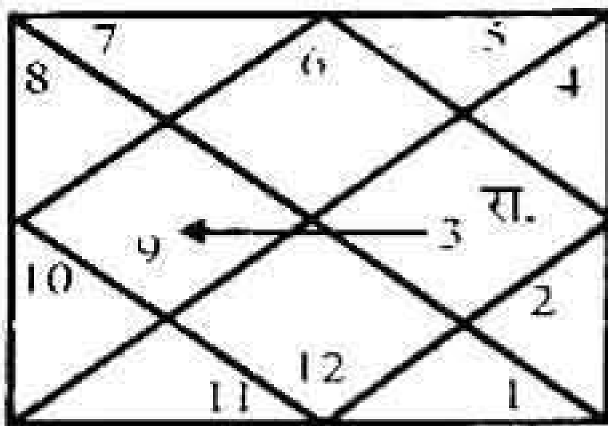
निशानी–जातक की पत्नी निरंकुश और पति को तंग करने वाली होगी।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक धन-सम्पति एवं वैभव की प्राप्ति करता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य नवम भाव में राहु के साथ होने से भाग्य में रुकावट का संकेत देता है।
2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा नवम भाव में उच्च का होकर भाग्य भवन में व्यापार में अचानक लाभ का संकेत देता है।
3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध नवम भाव में राहु के साथ होने से जातक बुद्धिबल से धन कमायेगा।
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल नवम स्थान में राहु के साथ होने से भाग्य में रुकावट का संकेत देता है।
5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है जबकि राहु यहां उच्च (वृष) का होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक को पिता पक्ष, राज्य पक्ष से धोखा होगा।
6. **राहु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र नवम भाव में राहु के साथ अचानक भाग्य में उन्नति दिलायेगा।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि नवम भाव में राहु के साथ होने से भाग्य में बाधक है।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां दशम स्थान में राहु मिथुन राशि में स्वगृही है। दशम भाव में राहु की बड़ी भारी महिमा है। यह राहु राजयोग प्रदाता है। यह राहु जातक को समुचित धन, यश व प्रतिष्ठा दिलायेगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को सांप की मणि कहा है। ऐसा जातक दौलतमंद होता है व खतरों से खेलता है। ऐसा जातक राजनीति में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप रखेगा। जातक दुस्साहसी होगा।

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः ऐसे जातक के पास सुन्दर वाहन एवं भवन होता है।

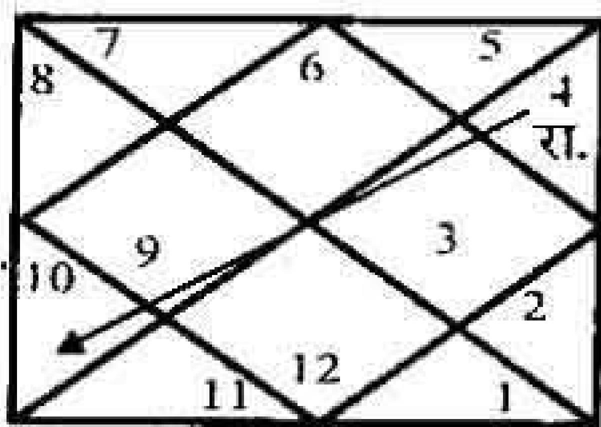
निशानी–ऐसा जातक विधवा स्त्रियों में रुचि रखेगा। उसके बच्चे कम होंगे।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययंश सूर्य दशम भाव में राहु के साथ होने से जातक को सरकार, कोर्ट-कचहरी से धोखा हो सकता है।
2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा दशम भाव में शत्रुक्षेत्र में होने से लाभ का प्रतिशत तोड़ेगा। सरकारी अधिकारी पीठ पीछे से वार करेंगे।
3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध स्वगृही होने से 'भद्र योग' बनेगा। ऐसा जातक राजा होगा पर हठी होगा। जातक राजा से कम नहीं होगा।
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल दशम भाव में राहु के साथ होने से जातक को सरकारी दण्ड मिलेगा।
5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति यहां शत्रु राशि में होगा जबकि राहु स्वगृही (मिथुन राशि में) होगा। फलतः 'चाण्डाल योग' बना। जातक नेता होगा, परन्तु निम्न मनोवृत्ति वाला, स्वार्थी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति होगा।
6. **राहु+शुक्र**–दशम भाव में भाग्येश, धनेश शुक्र राहु के साथ हो तो अचानक लाटरी, सट्टे, शेयर से धन मिलेगा।
7. **राहु+शनि**–दशम भाव में षष्ठेश शनि राहु के साथ हो तो जातक को पुत्र द्वारा कष्ट मिलेगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। एकादश भावगत राहु यहां कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक के जीवन में भौतिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक दिक्कतें आती हैं। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'कष्ट कारक' माना है। ऐसे जातक की वजह से आयु में बड़े भाई-बहनों को कष्ट उठाना पड़ता है। जातक जल-थल सेना में उच्च अधिकारी हो सकता है। जातक कुछ नया करने का जोश रखता है। जातक का मनोबल ऊंचा होता है।

दृष्टि–एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम स्थान (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक की विद्या प्राप्ति में रुकावट संभव है।

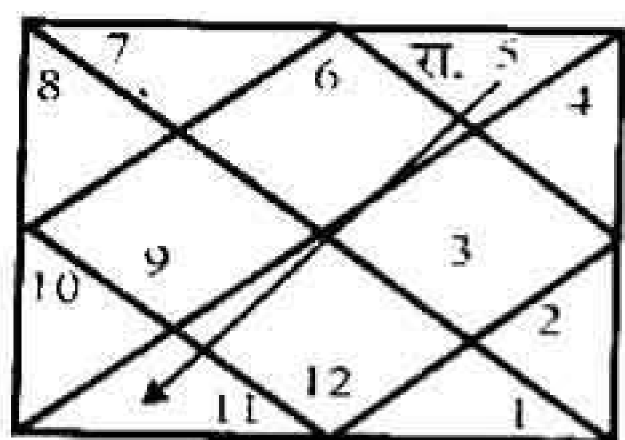
निशानी–जातक को कान की बीमारी होगी। प्राय: जातक को ज्येष्ठ सहोदर के सुख का अभाव होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में संघर्ष की स्थिति व दिक्कतें आयेंगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य लाभ स्थान में राहु के साथ लाभ प्राप्ति में बाधक है।
2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्र लाभ स्थान में स्वगृही होकर राहु के साथ होने से चिंतादायक स्थिति बनायेगा।
3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध एकादश में राहु के साथ परिश्रम में भटकाव लायेगा।
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल लाभ स्थान में नीच का लाभ तोड़ेगा।
5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति यहां उच्च का होगा परन्तु राहु शत्रु (कर्क राशि) का होगा। यहां दोनों की युति से 'चाण्डाल योग' बना। जातक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कीर्ति अर्जित करता हुआ भी बदनाम होगा।
6. **राहु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र एकादश स्थान में राहु के साथ हो तो हल्की रुकावट के बाद धन लाभ होकर भाग्योदय होगा।
7. **राहु+शनि**–षष्ठेश शनि लाभ स्थान में हो तो व्यापार में रुकावट का संकेत देता है।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में



कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। द्वादश भावगत राहु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। जातक घुमक्कड़ एवं खर्चीले स्वभाव का होगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'शेखचिल्ली' कहा है। ऐसा जातक प्राय: बढ़-चढ़कर व्यर्थ की बातें करता है जो सच्चाई से कोसों दूर होती हैं। बिना सोच-समझकर काम करने से कई बार ऐसा जातक मुसीबत में उलझ जाता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ राहु की दृष्टि छठे भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत जातक के गुप्त शत्रु अवश्य होते हैं।

निशानी–जातक की आंखों में कष्ट होगा।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में व्यर्थ की यात्राएं होंगी। जातक के खर्चे फालूत बढ़ जायेंगे।

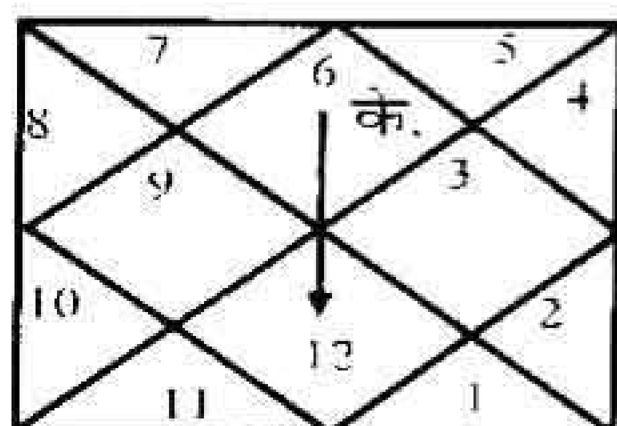
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–जातक की दाईं आंख (Right eye) में पीड़ा होगी।
2. **राहु+चंद्र**–जातक की बाईं (Left eye) आंख में पीड़ा होगी।
3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध व्यय भाव में राहु के साथ होने से परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल व्यय भाव में राहु के साथ अचानक दुर्घटना करायेगा।
5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति यहां मित्र राशि में है परन्तु राहु शत्रु राशि (सिंह) में होगा। फलत: यहां 'चाण्डाल योग' बना। जातक घुमक्कड़, परोपकारी एवं शठ होगा। वह तीर्थ स्थलों में भी गड़बड़ी करने में नहीं चूकेगा।
6. **राहु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश, शुक्र द्वादश भाव में राहु के साथ होने से धन हानि करायेगा।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि व्यय भाव में राहु के साथ हो तो बीमारी में धन खर्च करायेगा।

❑❑❑

कन्यालग्न में केतु की स्थिति

कन्यालग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। केतु यहां प्रथम स्थान में कन्या राशि में स्वगृही (मूलत्रिकोण) में होगा। ऐसे जातक का शरीर पतला या कमजोर रहेगा। प्राय: बीमारी में औषधियां काम नहीं कर पायेंगी। तंत्र-मंत्र से आध्यात्मिक ऊर्जा मिलेगी। यदि सप्तमेश बृहस्पति की स्थिति भी प्रतिकूल हो तो 'द्विभार्या योग' बनेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ केतु की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। वैवाहिक (गृहस्थ) सुख में तनाव रहेगा।

निशानी–अधिक गर्मी के कारण शरीर पर फोड़े-फुंसी होंगे। जातक को उच्च स्थान से गिरने का भय रहेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक संघर्ष के साथ उन्नति करेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–व्ययेश सूर्य लग्न में केतु के साथ होने से जातक गलत निर्णय लेने का अभ्यासी होगा।
2. **केतु+सूर्य**–लाभेश चंद्रमा केतु के साथ शत्रुक्षेत्री होने से लाभ के बारे में गलत भ्रम फैला रहेगा।
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध उच्च के केतु के साथ होने से जातक राजा का कम नहीं होगा तथा बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति होगा।

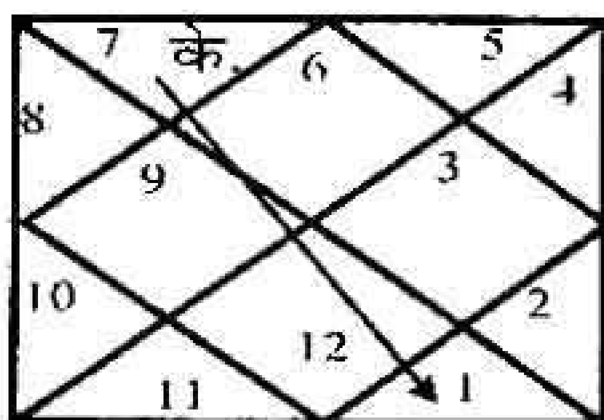
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल लग्न में केतु के साथ होने से जातक लड़ाकू होगा पर लड़ाई-झगड़े में सदैव विजयी होगा।

5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश गुरु लग्न में केतु के साथ से जातक की पत्नी सुन्दर किन्तु तेज स्वभाव की होगी।

6. **केतु+शुक्र**–भाग्येश, धनेश शुक्र लग्न में होने से जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि लग्न में केतु के साथ होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां द्वितीय स्थान में केतु तुला (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक मनोवांछित धन एकत्रित नहीं कर पायेगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को अच्छा हुक्मरान कहा है। ऐसा व्यक्ति वाचाल होता है। दूसरों पर ज्यादा हुक्म चलाता है। कुटुम्ब में भी कड़वाहट रहेगी।

दृष्टि–केतु की दृष्टि अष्टम स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक को गुप्त बीमारी संभव है।

निशानी–यहां केतु धन के धड़े में छेद को बताता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा धन संग्रह में बाधक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–व्ययेश सूर्य धन स्थान में नीच का होकर केतु के साथ होने से धन का अपव्यय होगा।

2 **केतु+सूर्य**–लाभेश चंद्रमा धन स्थान में केतु के साथ होने से धनागमन तो होगा पर बचत नहीं हो पायेगी।

3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध धन स्थान केतु के साथ होने से धन की प्राप्ति पुरुषार्थ द्वारा अवश्य होगी।

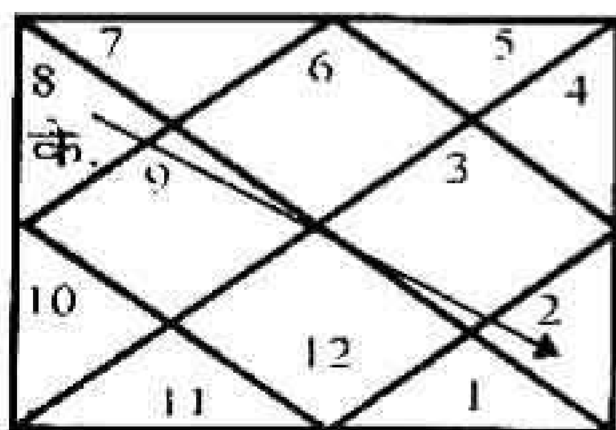
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल धन स्थान में केतु के साथ होने से धन प्राप्ति में बाधा, वाणी में कड़वाहट रहेगी।

5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति धन स्थान में केतु के साथ होने से सुख प्राप्ति में बाधा आयेगी।

6. **केतु+शुक्र**—धनेश व लाभेश शुक्र स्वगृही होकर केतु के साथ जातक को धनी तो बनायेगा पर धन का क्षरण होता रहेगा।

7. **केतु+शनि**—षष्टेश शनि द्वितीय स्थान में केतु के साथ उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनवान होगा एवं गलत तरीके से धन कमायेगा।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां तृतीय स्थान में केतु वृश्चिक (उच्च) राशि में है। तृतीय स्थान में केतु 'कीर्ति पताका' कहलाता है। जातक को समाज में, मित्रों में, कुटुम्ब में यश मिलेगा। लेखनी से यश मिलेगा। जनसंपर्क से लाभ होगा। कीर्ति देश-विदेश में फैलेगी। जातक कुटुम्बी प्रेमी होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ केतु की दृष्टि भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्योदय में हल्की रुकावट महसूस करेगा।

निशानी—जहां समझौते के अन्य उपाय निरर्थक साबित होते हैं वहां यह जातक डांट डपट से काम निकलवाने में सफलता प्राप्त करेगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बल्ध—

1. **केतु+चंद्र**—व्ययेश सूर्य तृतीय स्थान में केतु के साथ मित्रों में मतभेद उत्पन्न करेगा फिर भी जातक कुख्यात व्यक्ति होगा।

2. **केतु+सूर्य**—लाभेश चंद्रमा तृतीय स्थान में नीच का होगा, केतु के साथ होने से विषभोजन का भय रहेगा। फेफड़े का ऑपरेशन हो सकता है।

3. **केतु+मंगल**—लग्नेश बुध तृतीय स्थान में केतु के साथ होने से भाई-बहनों का सुख होगा। परिवार भरा-पूरा होगा।

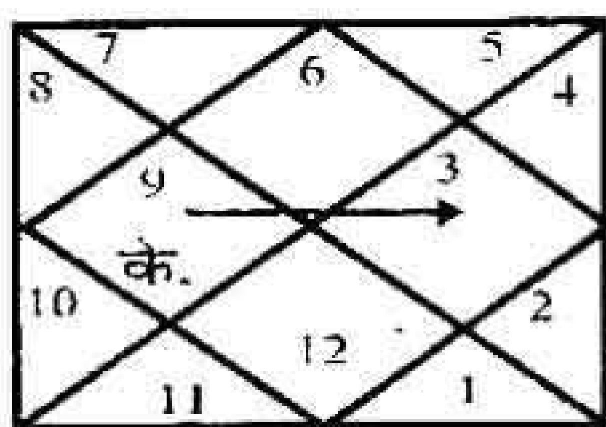
4. **केतु+बुध**—अष्टमेश मंगल तृतीय स्थान में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से तीन से अधिक भाई होंगे। चचेरे भाईयों की भी कमी नहीं होगी।

5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति तृतीय स्थान में स्वगृहाभिलाषी होकर केतु के साथ होने से बड़े भाई का सुख होगा। जातक कीर्तिवान होगा।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र तृतीय स्थान में केतु के साथ हो, तो जातक को बहनों व बुआ का सुख मिलेगा।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि तृतीय स्थान में केतु के साथ हो तो जातक के भाई बीमार रहेंगे।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां चतुर्थ स्थान में केतु धनु राशि में स्वगृही होगा। जातक के पास वाहन अवश्य होगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'डरावना कुत्ता' कहा है। ऐसा कुत्ता जो काटता नहीं है। अशुभ की आशंका बनी रहेगी पर अशुभ होगा नहीं। जातक का घर का मकान होगा। जातक की उन्नति 36 वर्ष की आयु के बाद होगी।

दृष्टि–चतुर्थस्थ केतु की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। राज्य (सरकार) से परेशानी होगी।

निशानी–जातक की मां बीमार रहेगा। माता का सुख कमजोर होगा।

दशा–केतु के दशा-अंतर्दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य चतुर्थ भाव में केतु के साथ होने से वाहन को लेकर अचानक खर्च करायेगा।

2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्र चतुर्थ स्थान में केतु के साथ होने से माता की शल्य चिकित्सा का संकेत देता है।

3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध चतुर्थ भाव में केतु के साथ होने से जातक को यथेष्ट ख्याति देगा।

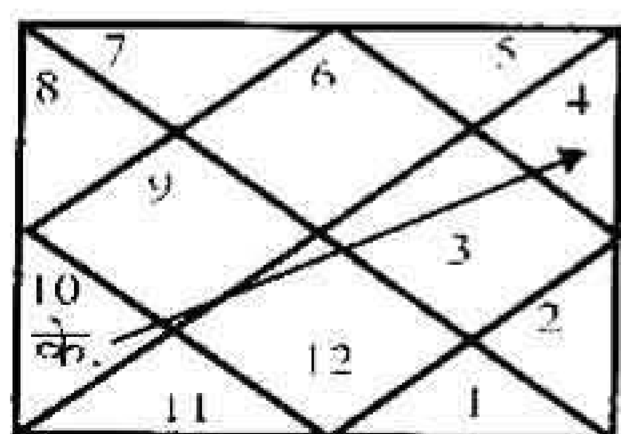
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल चतुर्थ स्थान में केतु के साथ होने से जमीन व मकान को लेकर भारी खर्च करायेगा।

5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति चतुर्थ स्थान के केतु के साथ व्यक्ति को 'हंस योग' के कारण धनी बनायेगा। जातक का ससुराल धनी होगा।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र चतुर्थ भाव में केतु के साथ होने से जातक महाधनी होगा। जातक के पास एकाधिक मकान होंगे।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि चतुर्थ भाव में केतु के साथ होने से वाहन पर खर्च होगा।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां पंचमस्थ केतु मकर (मित्र) राशि में होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता होगी। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'रक्षक' की संज्ञा दी है। उच्च विद्या एवं पुत्र संतति की प्राप्ति हेतु प्रारंभिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा परन्तु धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से, निरन्तर प्रयत्न करने पर उच्च शैक्षणिक उपाधि एवं तेजस्वी संतति की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–पंचमस्थ केतु की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होने के कारण लाभ में रुकावट महसूस होगी।

निशानी–जातक प्रजावान होगा। एकाध संतान हाथ न लगेगी, गर्भस्राव भी होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में संघर्ष के साथ सफलता मिलेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य पंचम भाव में शत्रुक्षेत्री होकर केतु के साथ होने से उत्तम संतति में बाधा का योग है।

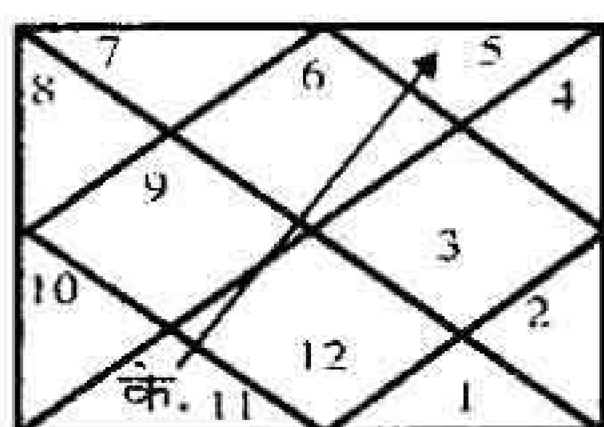
2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा पंचम स्थान में केतु के साथ होने से एकाध गर्भपात एवं दो कन्या संतति देगा।

3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध, पंचम भाव में बुद्धिबल से धनार्जन का संकेत देता है।

4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल पंचम स्थान में उच्च के केतु के साथ होने से एकाध गर्भपात एवं पुत्र संतति भी देगा।

5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति पंचम भाव में नीच का होकर केतु के साथ होने से पुत्र संतति अवश्य होगी।
6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र पंचम भाव में केतु के साथ होने से कन्या संतति की बाहुल्यता करायेगा।
7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि पंचम भाव में स्वगृही होने से पुत्र संतति अवश्य होगी।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति षष्टम् स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां छठे स्थान में केतु कुंभ (मित्र) राशि का होगा। छठे भाव में केतु की स्थिति राजयोगकारक है। लाल किताब वालों ने षष्टमस्थ केतु को शेर के समान खूंखर कुत्ता कहा है। जातक से ईर्ष्या करने वाले अनेक शत्रु होंगे पर जातक अपने शत्रुओं का समूल नाश करने में सक्षम होगा।

दृष्टि–छठे भावगत केतु की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक घुमक्कड़ मनोवृत्ति का होगा, खर्च अधिक करेगा।

निशानी–जातक को गुप्त रोग होने की संभावना है जो औषधियों से ठीक नहीं होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

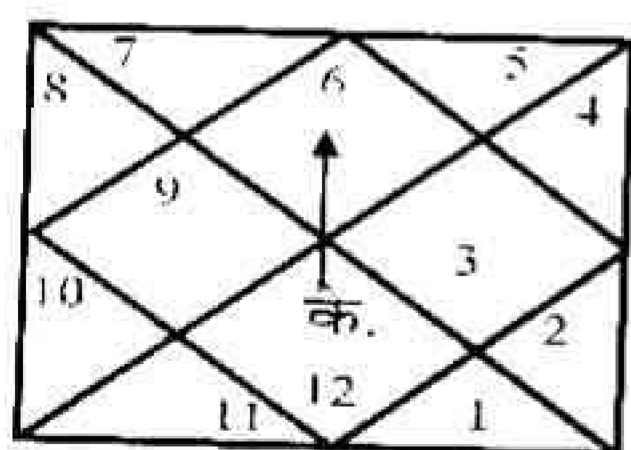
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य छठे स्थान में शत्रुक्षेत्री होकर केतु के साथ होने से विपरीत राजयोग बना। जातक धनी, पराक्रमी एवं तेजस्वी होगा।
2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा खड्डे (6th house) में होने से लाभ में कमी आयेगी। व्यापार-व्यवसाय में ज्यादा लाभ नहीं होगा।
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध छठे स्थान में केतु के साथ होने से परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल छठे स्थान में केतु के साथ होने से विपरीत राजयोग बना। जातक धनी व पराक्रमी होगा।
5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति छठे स्थान में केतु के साथ विलम्ब विवाह योग कराता है।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश, शुक्र छठे केतु के साथ होने से आर्थिक विषमता होगी एवं भाग्योदय में संघर्ष आयेगा।

7. **केतु+शनि**–यदि शनि केतु के साथ हो तो संतान सुख में बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अतः कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां सप्तमस्थ केतु मीन राशि में है जो कि केतु की स्वराशि मानी गई है। जातक अध्यात्म व तंत्र-मंत्र का जानकार होगा। लाल किताब वालों ने सप्तमस्थ केतु को गढ़रिए का पालतू कुत्ता कहा है। ऐसा जातक अपने इर्द-गिर्द रहने वाले का, भाई-कुटुम्बियों व मित्रों का भला चाहता है। जातक यदि अध्यात्म की राह पकड़ ले तो उसके शत्रु अपने आप तबाह व बरबाद हो जायेंगे।

दृष्टि–सप्तमस्थ केतु की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक विचलित मनोवृत्ति वाला होगा। प्रत्येक कार्य को शंका की दृष्टि से देखेगा।

निशानी–ऐसा व्यक्ति अपने से बड़ी उम्र की औरत के साथ संसर्ग करेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य सातवें स्थान में केतु के साथ होने से विवाह सुख में बाधा आयेगी।

2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा सातवें स्थान पर केतु के साथ होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी।

3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध सप्तम स्थान में नीच का होकर केतु के साथ होने से ससुराल से वैमनस्य रहेगा।

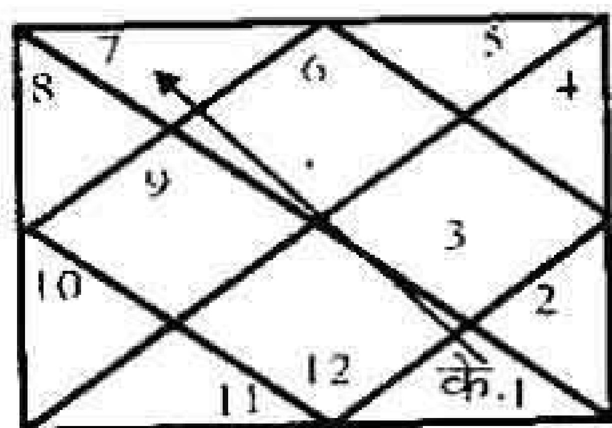
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल सप्तम भाव के केतु के साथ विवाह विच्छेद का संकेत है।

5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति सप्तम भाव में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से जातक की पत्नी वफादार एवं सुसंस्कृत होगी।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र सप्तम में उच्च का होकर केतु के साथ होने से जीवन साथी सुन्दर होगा।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि सप्तम भाव में केतु के साथ होने से गृहस्थ सुख में न्यूनता आयेगी।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां अष्टमस्थ केतु मेष (मित्र) राशि में है। केतु की यह स्थिति गुप्त शत्रुओं में वृद्धिकारक है। लाल किताब वालों ने इस केतु को छत पर रोने वाल कुत्ता कहा है। ऐसे जातक में अशुभ की आशंका कूट-कूट कर भरी होती है। जातक को खराब सपने आयेंगे। जातक की संतति की अकाल मृत्यु होने की संभावना है। जातक की प्रत्येक समस्या का समाधान तंत्र-मंत्र में छिपा होगा।

दृष्टि–अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होगी फलत: धन के स्थाई संकलन में निरंतर बाधा आती रहेगी।

निशानी–जातक प्राय: कड़वी व कटु वाणी बोलेगा। बोलते हुए हकलायेगा। मुंहफट होगा।

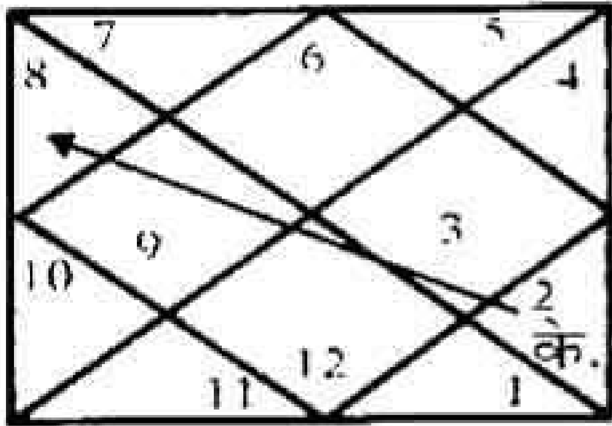
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में अशुभ परिणाम अधिक मिलेंगे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य अष्टम स्थान में केतु के साथ विपरीत राजयोग बना रहा है। जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।
2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा अष्टम स्थान में केतु के साथ होने से लाभ में कमी आयेगी। व्यापार-व्यवसाय में घाटा होगा।
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध आठवें स्थान में केतु के साथ होने से परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल अष्टम भाव में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से विपरीत राजयोग बना. जताक धनवान व पराक्रमी होगा।
5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति आठवें स्थान में केतु के साथ होने से विलम्ब एवं द्विभार्या योग बनता है।
6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र आठवें केतु के साथ होने से व्यक्ति दुर्भाग्यशाली होगा एवं आर्थिक विषमताओं से घिरा रहेगा।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि अष्टम स्थान में केतु के साथ होने से द्विभार्या योग बनता है।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां नवम भावगत केतु वृष (नीच) राशि का होगा। केतु भाग्योदय में बाधा पहुंचाने का कार्य करेगा परन्तु 38 वर्ष की आयु के बाद जातक का भाग्योदय हो जायेगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'बाप का आज्ञाकारी बेटा' कहा है। ऐसा जातक सौभाग्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र के बाद होगा। जातक के मित्र वफादार नहीं होंगे।

दृष्टि–नवमस्थ केतु की दृष्टि तृतीय स्थान (वृश्चिक) राशि पर होगी। फलत: जातक का अपने भाईयों से मनमुटाव रहेगा।

निशानी–जातक को जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों में लाभ होगा। जातक का भाग्योदय प्राय: दूर प्रदेश या विदेशों में होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा पर संघर्ष के साथ भाग्योदय होगा।

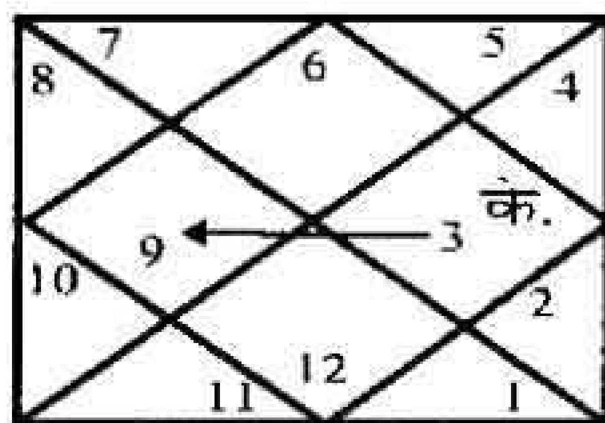
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य नवम स्थान में केतु के साथ होने से भाग्योदय में रुकावटें आयेंगी।
2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा नवम स्थान में उच्च का होकर केतु के साथ होने से जातक को व्यापार में यथेष्ट धनलाभ होगा।
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध नवम स्थान में केतु के साथ भाग्योदय कारक है। जातक बड़ा व्यापारी होगा।
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल नवम भाव में केतु के साथ होने से भाग्योदय में बाधा आयेगी।
5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति नवम भाव में केतु के साथ होने से व्यक्ति की उन्नति धीमी गति से होगी।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र भाग्य स्थान में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से जातक का जबरदस्त भाग्योदय होगा।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि भाग्य स्थान में केतु के साथ भाग्योदय में बाधा कारक है।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। केतु दशम भाव में मिथुन (शत्रु) राशि का होगा। यह केतु नौकरी, व्यापार-व्यवसाय में बाधक है। नौकर धोखा देंगे। कोर्ट-कचहरी में पराजय का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु आपका पराक्रम नष्ट कर सकते हैं। सावधान रहना होगा। शत्रु एवं बाधाओं के नाश हेतु बगुला यंत्र अथवा तांत्रिक अनुष्ठानों का सहारा लेना होगा।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: भौतिक सुखों में बाधा, वाहन पर धन खर्च होगा।

निशानी–जातक की मां बीमार रहेगी। मातृपक्ष से कम बनेगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में परेशानियां बढ़ेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य दशम स्थान में केतु के साथ होने से राज्य पक्ष, सरकार, कोर्ट-कचहरी में अप्रिय समाचार दिलायेगा।

2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा दशम भाव में शत्रुक्षेत्री होकर केतु के साथ बैठने से जातक को व्यापार में लाभ होगा।

3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध दशम में स्वगृही होने से 'भद्र योग' बनेगा। ऐसा जातक राजा से कम नहीं होगा। परन्तु कुख्यात होगा।

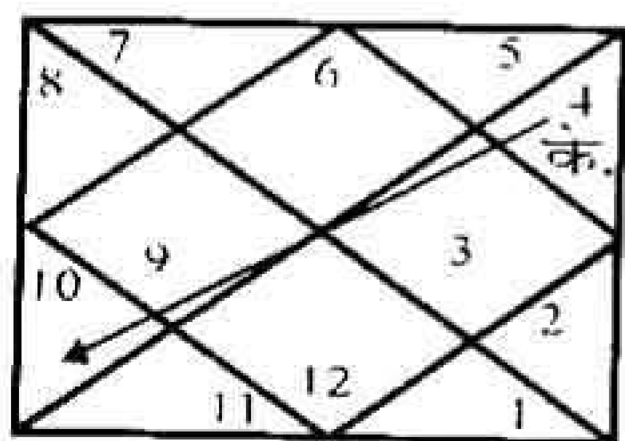
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल दशम भाव में केतु के साथ राजयोग दिलाने में बाधक होगा।

5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति दशम भाव मे केतु के साथ होने से जातक का ससुराल पराक्रमी व राजनैतिक वर्चस्व वाला होगा।

6. **केतु+शुक्र**–षष्टेश शनि दशम भाव में केतु के साथ होने से राजनीति में बदनामी दिलायेगा।

7. **केतु+शनि**–धनेश, भाग्येश शुक्र दशम भाव में केतु के साथ होने से व्यक्ति को राजा से सम्मान दिलायेगा।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में



कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां एकादश भावगत केतु कर्क (शत्रु) राशि में होगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'गीदड़ स्वभाव' का कहा है। ऐसा जातक लड़ाकू होते हुए भी डरपोक स्वभाव का होगा। जल भय बना रहेगा। व्यापार-व्यवसाय में बाधा व उद्योग में रुकावट आयेगी। ऐसा जातक अपने कठोर परिश्रम से अपना भाग्य खुद बनायेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत केतु की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: पुत्र संतति में बाधा का योग है।

निशानी–जातक की विद्या प्राप्ति में प्रारंभिक रुकावटें आयेंगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य एकादश स्थान में केतु के साथ होने से जातक को फैक्ट्री व उद्योग में लाभ नहीं होगा। सरकारी धन की कमी रहेगी।

2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा लाभ स्थान में स्वगृही केतु के साथ होने से उद्योग-फैक्ट्री से धन लाभ होने का संकेत है।

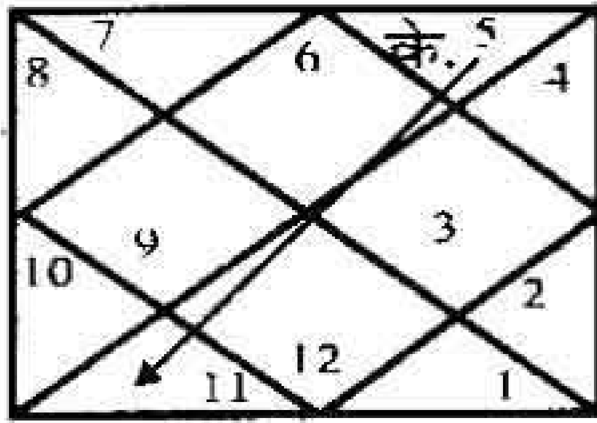
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध एकादश स्थान में शत्रुक्षेत्री होकर केतु के साथ होने से परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल नीच का एकादश स्थान में केतु के साथ होने से चलता उद्योग बीमार पड़ जायेगा।

5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति उच्च का एकादश में केतु के साथ होने से जातक की उन्नति धीमी गति से होगी।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश, शुक्र एकादश स्थान में होने से जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।
7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि एकादश स्थान में केतु के साथ होने से जातक का बड़ा भाई बीमार रहेगा।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति द्वादश स्थान में



कन्यालग्न की केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां द्वादश स्थान में केतु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'शुभ फल' देने वाला कहा है पर यह केतु खर्चीले स्वभाव का है तथा व्यर्थ की यात्राओं में जातक का धन खर्च करायेगा। ऐसा जातक कुछ हठी व क्रोधी स्वभाव का भी होता है। जिद्द पर आकर पैसे खर्च करने की परवाह नहीं करता। अपना सब कुछ फूंक डालता है।

दृष्टि–द्वादश भावगत केतु की दृष्ठि छठे स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–ऐसे जातक को किसी संतानहीन व्यक्ति से कोई वस्तु नहीं खरीदनी चाहिए अन्यथा उसक दुष्परिणाम भोगने होंगे।

दशा–केतु के दशा-अंतर्दशा परेशानी देने वाली साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य व्यय स्थान में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से जातक धनी होगा। यहां हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना।
2. **केतु+चंद्र**–लाभेश बारहवें स्थान में केतु के साथ होने से व्यापार-व्यवसाय में लाभ नहीं होने देगा।
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध बारहवें केतु के साथ होने से परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल केतु के साथ बारहवें स्थान में होने से कुण्डली मांगलिक हुई। जातक की कुण्डली में द्विभार्या योग बनता है।
5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति बारहवें स्थान से केतु के साथ होने से गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी। जातक के द्विभार्या योग बनता है।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र बारहवें केतु के साथ होने के कारण धन प्राप्ति एवं भाग्योदय हेतु जातक को बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **केतु+शनि**–षष्टेश शनि बारहवें केतु के साथ होने से विपरीत राजयोग बना। जातक का पुत्र ही जातक का गुप्त शत्रु होगा।

❑❑❑

बुधवार व्रत कथा

बुध मनुष्य की विद्या, वाक्पटुता व बुद्धि को प्रभावित करता है। बुध को ग्रहों का राजकुमार कहा जाता है। बुध बुद्धि व स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने वाला है। बुध ग्रह की शांति व सुख-समृद्धि के लिए बुधवार का पूजन विशेष लाभकारी होता है। मनोकामनाओं की पूर्ति व शांति हेतु स्त्री-पुरुषों को बुधवार का व्रत रखना चाहिए।

बुध का तांत्रिक मंत्र–ॐ बुं बुधाय नमः।

विधि विधान–बुधवार का उपवास विशाखा नक्षत्र वाले बुधवार से आरंभ करना चाहिए। इस व्रत में सफेद वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए। यह व्रत सात, सत्रह अथवा सत्ताईस बुधवारों को करना चाहिए। दिन में एक ही समय भोजन करना चाहिए। सर्वप्रथम बुधवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर, स्वच्छ स्थान पर पूजन की सामग्री रखें तथा बुध के तांत्रिक मंत्र का जाप इक्कीस बार करें। तत्पश्चात् कथा पढ़ें। कथा के मध्य में न तो उठें, ना ही बीच में बोलें। कथा सुनकर आरती करके प्रसाद ग्रहण करना चाहिए।

व्रत कथा–एक बार एक व्यक्ति जिसकी पत्नी अपने मायके गई हुई थी, वह अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। कुछ दिन वहां रहने के पश्चात् उसने सास-ससुर से जाने के लिए आज्ञा मांगी। किंतु सास-ससुर ने कहा आज बुधवार का दिन है। आज के दिन गमन नहीं करते। उसने किसी की बात नहीं सुनी और अपनी पत्नी को विदा करवाकर अपने नगर के लिए चल पड़ा। मार्ग में उसकी पत्नी को प्यास लगी। वह व्यक्ति गाड़ी से उतरकर पात्र लेकर जल की खोज में चल पड़ा। कुछ देर पश्चात् वह वापस आया तो उसने देखा कि उसके जैसी शक्ल-सूरत, वेशभूषा वाला एक व्यक्ति उसकी पत्नी के पास बैठा है। यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और क्रोध भी आया। वह क्रोध में बोला ''तू कौन है और मेरी पत्नी के निकट क्यों बैठा है?'' दूसरे व्यक्ति ने कहा–''यह मेरी पत्नी है। मैं अभी अपनी ससुराल से इसे विदा कराकर ला रहा हूं।'' दोनों में परस्पर झगड़ा होने लगा। तभी उधर से राज्य के सैनिक जा रहे थे, उन्होंने सारा हाल सुनकर स्त्री से पूछा–''तुम्हारा

पति इन दोनों में से कौन है?'' उसकी पत्नी चुप थी क्योंकि दोनों व्यक्ति बिलकुल एक जैसे थे और उसमें से असली को पहचान पाना मुश्किल था। असली व्यक्ति ने ईश्वर से प्रार्थना की–''हे प्रभु! यह कैसी माया है कि पराया व्यक्ति मेरी पत्नी को अपना बना रहा है।'' तभी आकाशवाणी हुई कि हे मूर्ख, बुधवार के दिन तूने गमन किया, तूने किसी की बात नहीं मानी, अंत: बुध देव की माया से तुझे इस कष्ट का सामना करना पड़ा है।

उसने भगवान बुध देव से क्षमा याचना की। मनुष्य के रूप में आए भगवान बुध देव अंतर्ध्यान हो गए। वह व्यक्ति खुशी-खुशी अपनी पत्नी को लेकर अपने घर आया। इसके पश्चात् पति-पत्नी दोनों नियमपूर्वक बुधवार का उपवास करने लगे। इस प्रकार जो कोई भी बुधवार का उपवास रखता है तथा श्रद्धापूर्वक व्रत कथा को सुनता है उसे बुधवार के दिन गमन करने का दोष नहीं लगता है तथा उसे सर्व प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है और उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

बुध देव की आरती

जय श्री बुध देवा,
स्वामी जय श्री बुध देवा।
छोटे बड़े सभी नर-नारी,
करें तेरी सेवा।। स्वामी जय०।।
सुख करता दु:ख हरता,
जय जय आनन्द दाता।
जो प्रेम भाव से पूजे,
वह सब कुछ है पाता ।।स्वामी जय०।।
सिंह आपका वाहन है,
है ज्योति सबसे न्यारी।
शरणागत प्रतिपालक,
हो भक्तन के हितकारी ।।स्वामी जय०।।
तुम हो दीनदयाल दयानिधि,
भय बंधन हारी।
वेद पुराण बखानत,
तुम हो भय पातक हारी ।।स्वामी जय०।।

सद गृहस्थ हृदय में,
बुधराजा तेरा ध्यान करें।
जग के सब नर-नारी,
व्रत पूजा पाठ करें।।स्वामी जय०।।
विश्व चराचर पालक,
कृपासिन्धु शुभ करता।
सफल मनोरथ पूर्ण करता,
भव बन्धन हरता।।स्वामी जय०।।
श्री बुधदेव की आरती,
जो प्रेम सहित गावे।
सब संकट मिट जाएं,
अतुलित वैभव पावे।।स्वामी जय०।।

बुध के वैदिक, पौराणिक व तांत्रिक मंत्र



ध्यानम्–

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रेद्भवो।
बाणेशनिदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः॥
कन्या युग्मपतिदर्शाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्॥

बुध की उत्पत्ति अत्रि गोत्र में मानी जाती है। बुध चेतना, इच्छा, सदाचार, मानव जीवन में तरक्की और चेतना शक्ति का मुख्य रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐश्वर्य, प्रेम, उदारता, आकांक्षा, आत्मविश्वास आदि के ये संतुलनकर्त्ता हैं। ये पुरातत्ववेत्ता, आविष्कर्त्ता, राजा, मंत्री आदि का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। हृदय, रक्त का संचालन, आंख, कान, हड्डी आदि पर भी बुध अपना अधिक-से-अधिक प्रभाव डालते हैं।

आह्वान्–

बुधोबुद्धिप्रदाता च सौम्यदृष्टिर्महायश:
यजमान-हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम्॥1॥
अहो चंद्र सुत: श्रीमान् मागधायसमुद्भव:।
अत्रिगोत्र: चतुर्बाहु: खड्गखेटक धारक:॥2॥
गदावरदसिंहस्य सुवर्णाभश्समाविश।
कृष्णवर्दि सपत्रे च इदं विष्णु प्रपूजयेत्॥3॥
ॐ इदं विष्णुविचक्रमेवेधानिदधेपदम।
समूढमस्यपा ठं सुरे स्वाहा ॥15/15॥
इशाने बुधं स्थापयामि–

वैदिक मंत्र

विनियोग–ॐ उद्बुध्यस्वेति मंत्रस्य परमेष्ठीऋषि: बृहती छन्द: बुधो देवता। त्वमिष्ठापूर्तेसम् इति बीजं बुधप्रीतये जपे विनियोग:।' ॐ परमेष्ठीऋषये नम: शिरसि' 1 'ॐ बृहतीछन्दसे नम: मुखे 2'

न्यास–'ॐ बुधायै नम: हृदये' 'ॐ त्वमिष्टापूर्तेसम्' इति बीजाय नम: गुह्ये 4 'ॐ बुधप्रीतये जपे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे' 5 इति ऋष्यादिन्यास:। 'ॐ उद्बुद्धयस्वाग्नेप्रतिजागृहि' अङ्गुष्ठाभ्यां नम: 1 'ॐ त्वमिष्ठापूर्तेसम्' तर्जनीभ्यां नम: 2 'ॐ सृजेयामयञ्च' मध्यमाभ्यां नम: 3 'ॐ अस्मिन्त्सध स्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्' अनामिकाभ्यां नम: 4 ॐ विश्वेदेवा' कनिष्ठिकाभ्यां नम: 5 'ॐ यजमानश्चसीदत-करतलकरपृष्ठाभ्यां नम: 6 इति करन्यास:।

हृदयादिन्यास–ॐ त्वमिष्टा पूर्तेसम् इति शिरसे स्वाहा 2 'ॐ सृजेथामयञ्च' इति शिखायै वषट् 3 'ॐ अस्तिन्त्वसधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्' इति कवचाय हुम् 4 'ॐ विश्वेदेवा' नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ यजमानश्च सीदत इति अस्त्राय फट् 6 इति हृदयादिन्यास:।

'ॐ उदबुध्यस्व' इति शिरसि। 'ॐ अग्नेप्रति' इति ललाटं 2 'ॐ जागृहित्वम्'। इति मुखे 3 'ॐ इष्टापूर्तेसम् इति हृदये 4 'ॐ सजेथामयञ्च' इति कध्याम् 6 'ॐ अध्युत्तरस्मिन्' इत्यूर्वो: 7 'ॐ विश्वेदेवा' नाभौ 5 'ॐ अस्मिन्त्सधस्थ' इति जानुनो: 8 'ॐ यजमानश्च' ति पादयो: 9 'ॐ सिदत' इति सर्वाङ्गे 10 एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्–'ॐ पीताम्बर: पीतवायु: किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी।

चर्मासिधृक् सोमसुत: सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो 'बुधयच' 1 इति ध्यात्वाजयं कुर्यात्

जप योग्य वैदिक मंत्र– ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वामिष्टापूर्ते मर्ठ. सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

यह वैदिक मंत्र है। यद्यपि यह उच्चारण की दृष्टि से कठिन होने के कारण सर्व साध्य नहीं है. व्यावहारिक दृष्टि से सरल. उच्चारण में सहज और सर्वसाध्य मंत्र निम्न हैं।

तंत्रोक्त बुध मंत्र–ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:।

पुराणोक्त बुध मंत्र–

ह्रीं प्रियंगु कलिकाश्यामं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

यदि दैनिक पूजा में स्नानोपरांत कोई व्यक्ति इस मंत्र की प्रतिदिन 5-7 माला जपता रहे तो कुछ समय उपरांत वह किसी स्थिति में सुखद परिवर्तन का अनुभव करेगा। यह पौराणिक और अत्यंत सरल मंत्र है। इसके अतिरिक्त वैदिक और तांत्रिक मंत्र भी प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार हैं–

इन तीनों मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नौ हजार जप अवश्य करना चाहिए। जप के प्रभाव से ग्रह पीड़ा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है. जपकर्त्ता 108 दाने की माला से ही जाप करें।

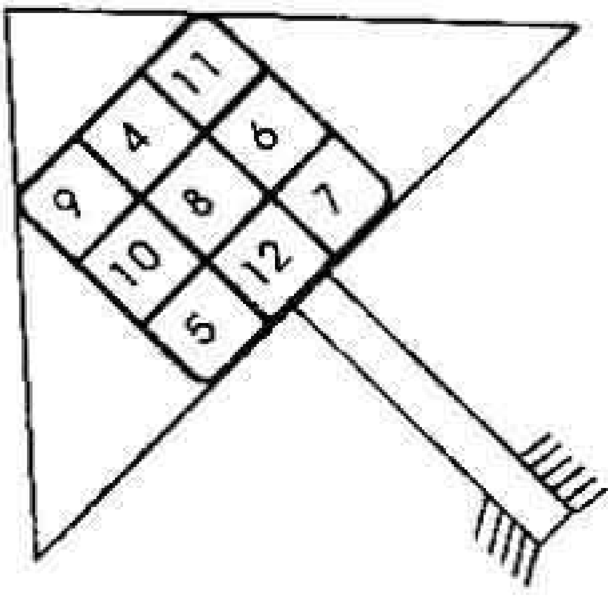
बुध गायत्री मंत्र–

ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्य: प्रचोदयात्।

इस बुध गायत्री मंत्र का जप उनके लिए अत्यधिक आवश्यक है, जिन पर बुध की कठोर दृष्टि है। यदि वे इस मंत्र का जाप नियमित रूप से एवं पवित्रता से करें तो उसके लिए अत्यंत ही लाभकारी होगा। कम-से-कम एक माला प्रतिदिन जपनी चाहिए।

बुध यंत्र–बुध यंत्र को काष्ठ पीठिका पर बिछे श्वेत या हरित वस्त्र खण्ड पर स्थापित करें। गंगाजल अथवा शुद्ध जल छिड़क कर इसे स्नान कराएं। तत्पश्चात् चंदन, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप आदि से पूजन करके किसी मीठी वस्तु का नैवेद्य अर्पित करें। यह समस्त प्रक्रिया पूर्व की ओर मुख करके की जानी चाहिए।

यंत्र की पूजा कर चुकने के पश्चात् यथा-सामर्थ्य 1, 5 या 7 माला बुध मंत्र जपना चाहिए। उपवास भी आवश्यक होता है। इस प्रकार 7, 11 या 12 बुधवारों तक लगातार बुध-यंत्र की नियमित रूप से श्रद्धापूर्वक उपासना करने से अवश्य ही लाभ होता है।



9	4	11
10	8	6
5	12	7

उपरोक्त बताई गई रीति के अनुसार ही यंत्र पूजन कर ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए।

बुधमंत्र-जपसंख्या 400, रत्न-पन्ना, समिधा-अपामार्ग, दान-मूंग, नीलवस्त्र, कांस्य, कस्तूरी, घी, पंचरत्न, हाथी, दासी।

बुध कवच

विनियोग–अस्य श्रीबुधकवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः बुधो देवता-बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधस्तु पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः।
पीताम्बरधरः पातु पीतामाल्यानुलेपत्त॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा।
नेत्र ज्ञानमयः पातु श्रुति पातु निशाप्रियः॥
घ्राणं गंधप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रीं भुजौ पुस्तक भूषणः॥
वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं रोहिणीसुतः।
नाभि पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः॥
जानुनी रोहिणेयश्च पातु जङ्घेऽखिलप्रदः।
पादौ मे बोधनः पातुःपातु सौम्योऽखिलं वपुः॥
एतद्धि कवचं दिव्य सर्वपाप प्रणाशनम्।
सर्वरोग प्रशमनं सर्वदुख निवारणम्॥
आयुरारोग्यशुभदं पुत्रपौत्र प्रवर्धनम्।
यः पठेच्छृणुयाद वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत्॥

उक्त बुध कवच ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित है। कवच का पाठ करने वाला प्राणी यदि नियमित रूप से एकाग्र होकर पूजन करे तो उस पर बुध ग्रह की अवश्य ही कृपा बनी रहेगी तथा दीर्घ आयु, निरोगी, वंश वृद्धि होने के साथ ही दुखों का सर्वनाश होना स्वाभाविक है।

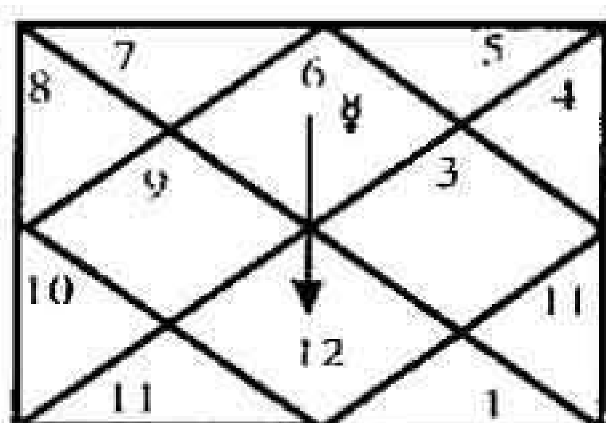
बुधपंचविंशतिनाम स्तोत्र

विनियोग–अस्य श्रीबुधपंचविंशतिनाम स्तोत्रस्य प्रजापति ऋषि: त्रिष्टपछन्द: बुधो देवता, बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोग:।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठों बुद्धिदाता धनप्रद:।
प्रियंगुकलिकाश्याम: कञ्जनेत्रो मनोहर:॥
ग्रहोपमो रोहिणयो नक्षत्रेशो दयाकर:।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धन॥
चंद्रात्मजोविष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायक:।
ग्रहपीडाहरो दार पुत्र धान्य पशुप्रद:।
लोकप्रिय: सौम्यमूर्तिगुणदो गुणिवत्सल:।
पंचविंशतिनामानि बुधस्यैतानि य: पठेत्॥
स्मृत्व बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्॥

❑❑❑

कन्यालग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन



1. **माणिक्य**–कन्यालग्न में सूर्य द्वादश का स्वामी होता है। इस लग्न में जातक को माणिक्य कभी धारण नहीं करना चाहिए। धारण करने से लाभ की अपेक्षा हानि होगी।
2. **मोती**–कन्यालग्न में चंद्र एकादश (लाभ) भाव का स्वामी होता है। चंद्र की महादशा में मोती धारण करने से आर्थिक लाभ, यश प्राप्ति तथा संतान सुख प्राप्त हो सकता है।
3. **मूंगा**–कन्यालग्न में मंगल तृतीय और अष्टम दो अशुभ भावों का स्वामी है। कन्यालग्न के जातक को मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।
4. **पन्ना**–कन्यालग्न के लिए बुध लग्न तथा दशम भाव का स्वामी है। इस लग्न के जातक को सदा पन्ना धारण करना चाहिए। वह शरीर-स्वास्थ्य की रक्षा करता है तथा आयु बढ़ाता है। बुध की दशा में पन्ना विशेष रूप से फलदायक होता है। आपका जीवन रत्न पन्ना है।
5. **पुखराज**–कन्यालग्न के लिए बृहस्पति चतुर्थ एवं सप्तम का स्वामी होता है। अत: यह केन्द्राधिपति दोष से दूषित होता हुआ प्रबल मारकेश है। तब भी यदि बृहस्पति लग्न, द्वितीय चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम या एकादश में स्थित हो तो बृहस्पति की महादशा में इससे संतान-सुख, ज्ञान, विद्या, धन, मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।
6. **हीरा**–कन्यालग्न के लिए हीरा द्वितीय, नवम भाव का स्वामी होने से अत्यन्त शुभ और योगकारक ग्रह माना जाता है। अत: हीरा धारण करने से लग्न के

जातक को हर प्रकार की उन्नति प्राप्ति होगी. यदि हीरा पन्ने के साथ धारण किया जाये तो अति उत्तम होगा।

7. **नीलम**–कन्यालग्न के लिए शनि पंचम और षष्ठम भावों का स्वामी होने के कारण शनि को इस लग्न के लिए अशुभ ग्रह नहीं माना गया है। अतः शनि की महादशा में इसका जातक नीलम धारण करके लाभ उठा सकता है।

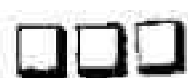
विशिष्ट उद्देश्य पूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–नीलम सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**–पन्ना सवा छः रत्ती, हीरा सवा चार रत्ती।
3. **आरोग्य हेतु**–पन्ना सवा छः रत्ती अकेला बुध यंत्र के साथ सुवर्ण में।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–हीरा सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा पांच रत्ती।

❑❑❑

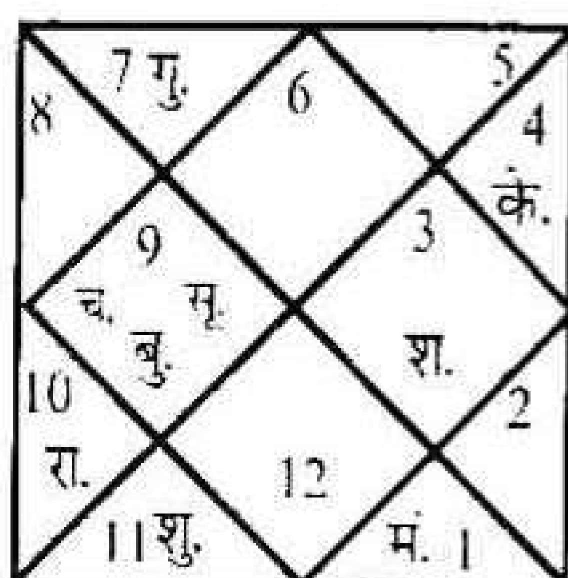
बुध अनिष्ट से बचने हेतु लाल किताब में वर्णित टोटके

1. बुध की अनिष्टता दूर करने के लिए छेद वाला तांबे का सिक्का पानी में प्रवाहित करें।
2. बुध की अनिष्टता दूर करने के लिए कौड़ियों की राख बनाकर उसे समुद्र में प्रवाहित करें।
3. बुध केतु युक्त लग्न को छोड़कर किसी भी स्थान में होने पर अनिष्ट फल देता है। ऐसे जातक को अपनी उम्र के 34वें साल तक आर्थिक कठिनाईयों से जूझना पड़ता है। विवाह में भी काफी विलंब होता है। इस अनिष्टता को दूर कराने के लिए ऐसे जातक अपनी नाक छिदवा लें तथा फिटकरी से अपने दांत साफ करें। मंदिर में केश अर्पण करें तथा पीले रंग का हलवा बालिकाओं को खिलाएं।
4. इस अनिष्ट फल को दूर करने के लिए मंगलवार रात को मूंग की दाल पानी में भिगोकर रखें और बुधवार प्रात: पक्षियों को चुगाएं। 43 दिन तक यही क्रम अपनाएं। हरे मूंग दान में दे।
5. बुध तृतीय स्थान में बैठा हो तो, उसके शत्रु ग्रह चंद्र, केतु या शुक्र छठे या सातवें स्थान में हो तो पैतृक संपत्ति में विघ्न खड़े होते हैं। मामा, मौसी एवं ताऊ का स्वास्थ्य ठीक नहीं रह पाता। ऐसे समय इस कुप्रभाव को दूर करने हेतु जातक अपने दांतों के लिए मंजन के रूप में फिटकरी का प्रयोग करें।
6. सप्तम स्थान में बुध अनिष्ट फल प्रदान करता है। जातक की बहन एवं बुआ को कष्ट रहता है। इस अनिष्टता को दूर करने हेतु हरे मूंग का दान करें।
7. वरधारा वनस्पति ताबीज में डालकर धारण करें।
8. गहुला वनस्पति स्नान के समय पानी में डालकर स्नान करें।
9. मिट्टी के बरतन में पानी पीएं तो बुध ग्रह प्रसन्न रहता है।



दृष्टांत कुण्डलियां

करुणावतार हजरत ईसा मसीह





हजरत ईसा का जन्म विक्रम् सम्वत् 57 पौष कृष्ण 14 सोमवार को रात्रि ठीक 11 बजकर 59 मिनट 38 सैकण्ड को यहूदियों के प्रति "बैथलहम्" नगर में हुआ। उस समय कन्यालग्न 20 अंशों में उदित था। उनके जन्म के समय "पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र समूह" इतने जोर से चमका की, सभी खगोल शास्त्री अचंभित हो गये और उन्हें लगा कि ईश्वरीय शक्ति ने कहीं जन्म लिया है। शायद उस दिन चंद्र-ग्रहण था। जन्म के ठीक 40 दिन बाद यहूदियों के भय से यीशु को "बैथहंलम" से इजिप्ट (मिश्र) में एक सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। वहीं ये बड़े हुए।

12 वर्ष की लघु आयु में यीशु ने "जैसललेम" के चर्च में पहला धार्मिक शास्त्रार्थ जीता और अतुल कीर्ति अर्जित की। उस समय इन्हें शुक्र की महादशा चल रही थी। 25 वर्ष की आयु में उन्हें ईसाई धर्मगुरु के रुप में आचार्य पद की प्राप्ति हुई। चंद्रमा की महादशा में 29 वर्ष की आयु मे ईसा मसीह दीवान पद पर आरूढ़ हुए। तबसे इनका शत्रुपक्ष बढ़ा। "कन्यालग्न" के कारण यीशु के शरीर में स्त्रियोचित कोमलता थी, वे विनम्र, सौम्य और मृदु स्वभाव के थे। अपने जीवन की 32 वर्ष 3 महीने 11 दिन की अवस्था में यहूदियों की कपट सलाह से वह सूली पर चढ़ गये

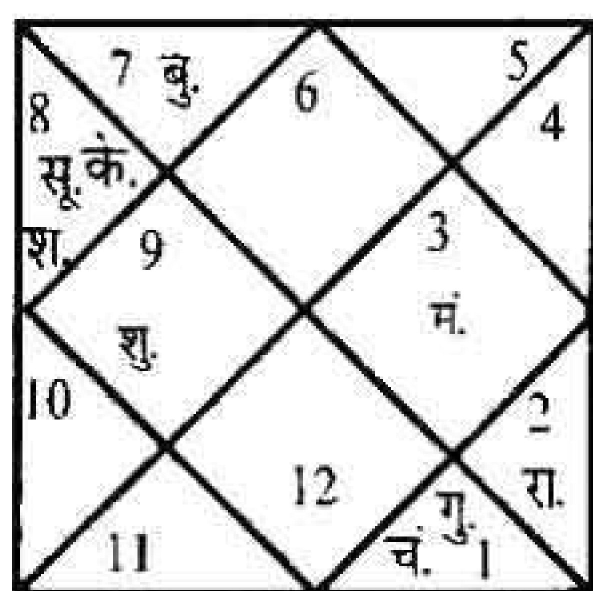
और वहीं उनकी दर्दनाक मृत्यु हुई। उस दिन रात्रि को चंद्र ग्रहण हुआ। ठीक वैसा ही जैसा इनके जन्म समय पर था। इनका विवाह नहीं हुआ था। वे बाल ब्रह्मचारी थे। मृत्यु के ठीक तीसरे दिन वे पुनर्जीवित हो उठे।

उन्होंने कई असाध्य रोगियों को अपने मधुर स्पर्श से ठीक कर दिया था तथा अनेक मृतकों को जिला दिया। इनके द्वारा मृत्युपरान्त किये गये चमत्कारों से ये प्रभु ईसा मसीह बन गये। इन्होंने सबसे पहले अपने शत्रुओं, ईर्ष्यालु, अलपज्ञ व नासमझ लोगों को क्षमा दान दिया। इन्होंने समग्र विश्व को मानवता, प्रेम, दया, करुणा व परोपकार का संदेश दिया और इतिहास में अमर हो गये। जिस क्रास पर इन्हें सूली चढ़ाया गया, वही क्रास का चिह्न ईसाई धर्म का परम पवित्र चिह्न हो गया।

क्लज स्थित एस्ट्रोनॉमिक ऑब्जरवेटरी इंस्टीट्यूट के दो खगोल शास्त्रियों ने अपनी गणना के आधार पर ईसा मसीह की मृत्यु 3 अप्रैल 33 ए.डी. को दोपहर के बाद 3 बजे हुई थी और उस दिन शुक्रवार था। रविवार 5 अप्रैल, 33 ए.डी. को वे फिर से जीवित हो उठे थे। इन खगोल शास्त्रियों का कहना है कि इस खोज के लिए इन्होंने बाइबल के संदर्भो और खगोल शास्त्रीय गणनाओं का सहारा लिया है। न्यू टेस्टामेंट में यह कहा गया है कि ईसा मसीह की मृत्यु, पूर्ण चंद्रमा वाली रात के अगले दिन हुई थी। इस आधार पर वैज्ञानिक ने 26 से 35 ए.डी. के बीच के 9 सालों के कैलेंडर की जांच-पड़ताल की। इस तरह बाइबिल में यह भी कहा गया है कि उस साल ''यरूशलम'' मे सूर्य ग्रहण हुआ था।

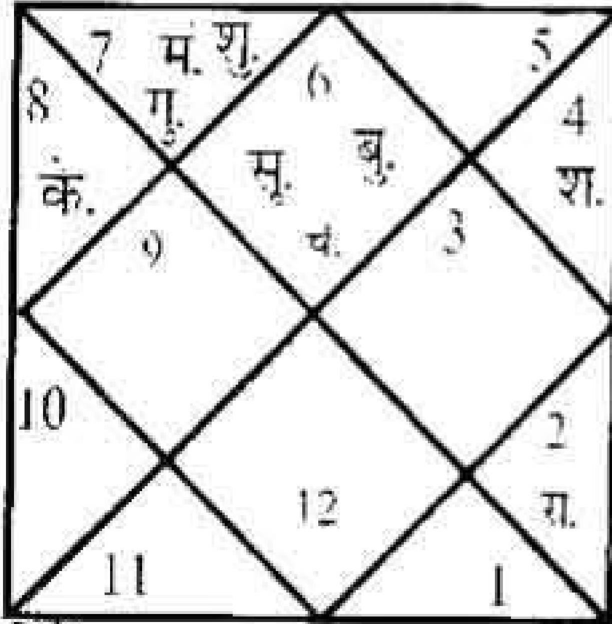
इस महान आत्मा की याद में आज भी समग्र विश्व में 25 दिसम्बर का दिन ''क्रिसमिस डे'' के रूप में मनाया जाता है। ईसा मसीह परम दयालु एवं परोपकारी संत थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को अंहिसा व शांति का पाठ पढ़ाया एवं सन्मार्ग पर चलना सिखाया। इनकी मृत्यु के बाद लोगों ने इन्हें ईश्वर का साक्षात् अवतार माना और ''प्रभु'' कहकर पश्चाताप किया। ईसाईयों के सबसे पवित्र ग्रंथ ''बाइबिल'' में प्रभु ईसा के उपदेश भरे पड़े हैं।

पं. लेखराज द्विवेदी



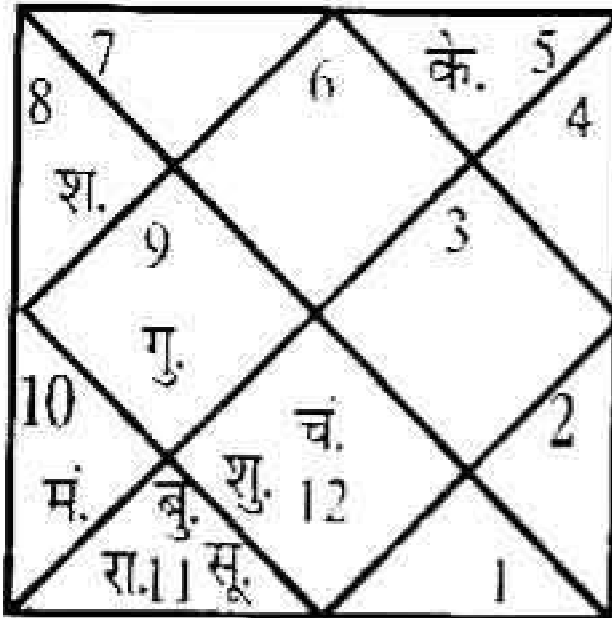
जन्म तिथि–26.11.1928, जन्म समय–4.00 बजे प्रात, जन्म स्थान-जोधपुर। कर्मकाण्ड, ज्योतिष संस्कृत के महान विद्वान पं. लेखराज द्विवेदी पुस्तक लेखक के सहोदर ज्येष्ठ भ्राता हैं। इनकी कुण्डली में अष्टकन्या योग एवं एक पुत्र योग स्पष्ट हैं। इनकी सशक्त लेखनी से अनेक पुस्तकों का प्रादुर्भाव हुआ है। ये राजस्थान संस्कृत अकादमी से पुरस्कृत विद्वान हैं।

श्री मोरारी बापू



जन्म तिथि–25.9.1946, जन्म समय–6.00 बजे प्रात:, जन्म स्थान–महू (सौराष्ट्र)

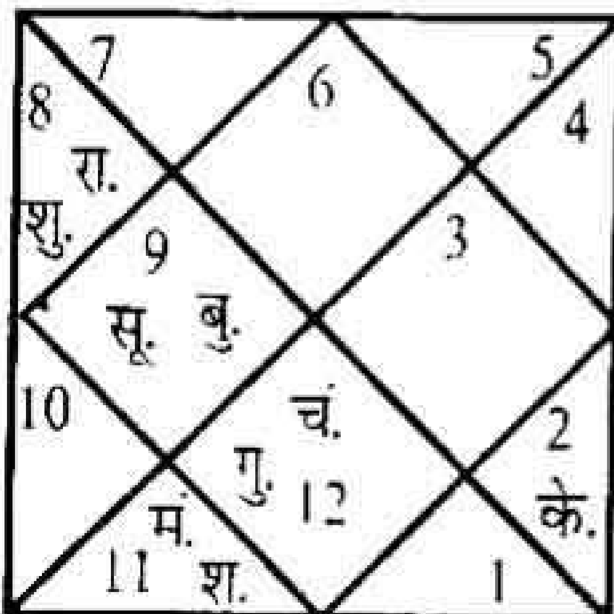
चैतन्य महाप्रभु





जन्म तिथि–18.2.1486, जन्म समय–8.54 बजे रात्रि, जन्म स्थान–नडियाद

महात्मा गौतम बुद्ध





श्री गुरु गोविन्द सिंह

8 7 च. 6 5 4
9 के. सू. 3 रा.
10 बु. गु. 2
म.श. 12
शु. 11 1



श्री सुकुमार वर्मा

8 7 6 सू. गु. 5 4
रा. बु.
श. 9 3
शु.
10 2
म. 12 चं. के.
11 1

जन्म तिथि–30.8.1956, जन्म समय–8.45 बजे प्रातः, जन्म स्थान- जोधपुर. प्रसिद्ध पत्रकार राजस्थान पत्रिका

प्रो. बेजान दारुवाला

8 7 6 मं. 5 4
के. गु. बु.
9 3
श. शु. सू.
10 रा. 2
12 चं.
11 1



प्रसिद्ध अंकशास्त्री एवं भविष्य- वक्ता, जातक वाक्पटु है। गणपति का भक्त है। पारसी होते हुए भी गणपति महाराजा के उच्चारण बिना ज्योतिष की बात नहीं करता।

डॉ. हरिकृष्ण छंगाणी (ज्योतिषशास्त्र मर्मज्ञ)

7 मं. 6 5
8 4
च. श. रा.
9 गु. 3
10 सू. कें. 2
बु. शु. 12
11 1

ज्योतिषशास्त्र एवं हिन्दी के प्रख्यात अध्यापक डॉ. हरिकृष्ण छंगाणी का नाम फलौदी में बहुत ही सम्मान व आदर के साथ लिया जाता हैं। पंचम भाव में स्थित त्रिग्रह युति से वे अनेक पुस्तकों के यशस्वी लेखक एवं ज्योतिष अनुसंधान पत्रिका के सम्पादक हैं।

सम्राट शाहजहां

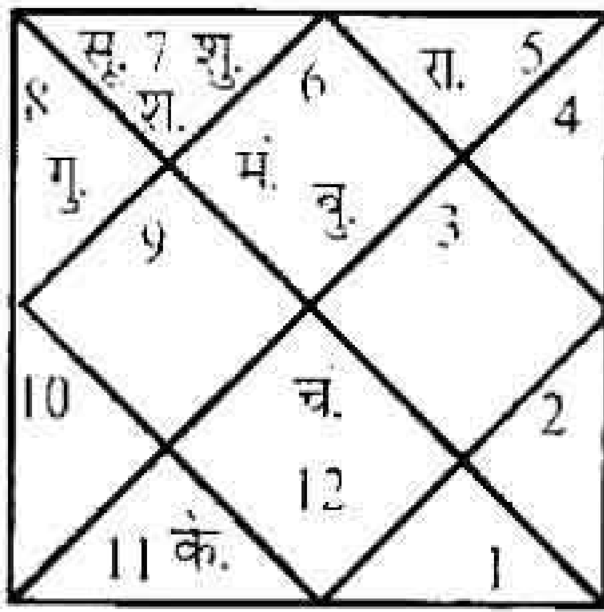
7 6 च. सू. 5
8 बु. 4
मं. शु.
9 3
रा. कें.
10 गु. श. 2
12
11 1



जन्म स्थान-18.8.1583, जन्म समय-8.00 प्रात:, जन्म स्थान-दिल्ली, सम्राट अकबर का पुत्र था जहांगीर, जहांगीर का पुत्र का नाम शाहजहां था। इनका शासनकाल (1627-1659) रहा। दिल्ली स्थित लालकिला स्थित दीवाने-आम, दीवाने-खास, जामा मस्जिद, मोती मस्जिद इनका बनाया हुआ है। आगरा का प्रसिद्ध ताजमहल भी शाहजहां के प्रेम की निशानी है।

श्री भैरोसिंह शेखावत (उपराष्ट्रपति, भारत सरकार)

जन्म स्थान-23.10.1923, जन्म समय-4.30, जन्म स्थान-खारचियाबास (सीकर) राजस्थान।

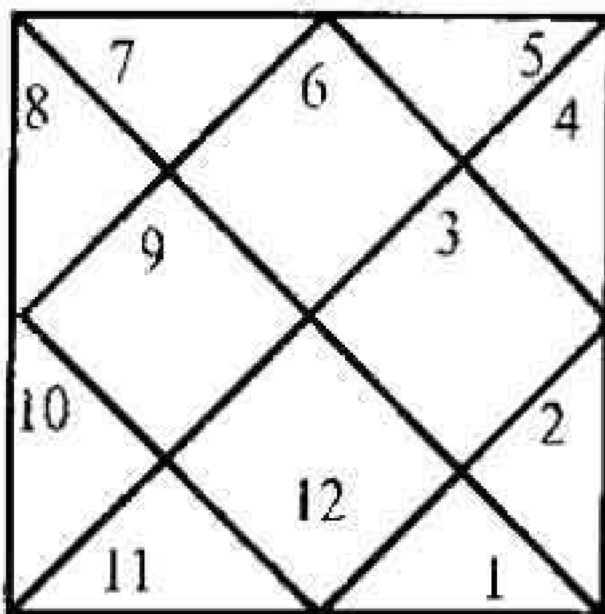




- श्री भैरोंसिंह 1974 से 1977 के बीच राज्यसभा के सदस्य रहे। आपातकाल में दौरान बारहवें राहु के कारण वे 19 महीने तक जेल में रहे।
- 22 जून 1977 को वे राज्यस्थान राज्य में पहली बार गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री बने।
- सातवीं व आठवीं विधानसभा में वे प्रतिपक्ष के नेता रहे।
- 4 मार्च 1990 को दूसरी बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा वर्तमान वर्ष 2003 में वे भारत सरकार के उपराष्ट्रपति पद पर आरुढ़ हुए।

इनकी जन्म कुण्डली में 'भद्रनामक' महान राजयोग लग्न में है। 'किम्बहुना' नामक राजयोग धन स्थान में है। चंद्र+मंगल, लक्ष्मी योग, नीचभंग राजयोग वगैरह महत्वपूर्ण योग कुण्डली में स्थित होने से कन्यालग्न की यह कुण्डली हर दृष्टि से संग्रहणीय है।

श्री मदनलाल खुराना



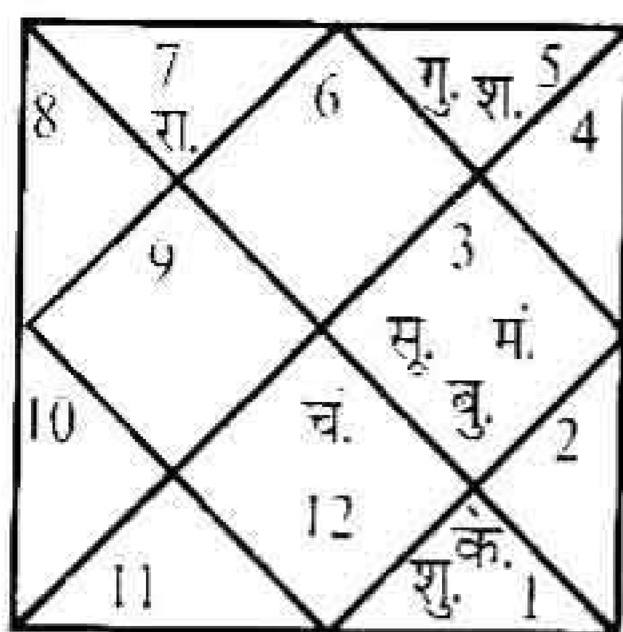


जन्म स्थान-15.10.1936, जन्म समय-6.10 प्रातः, जन्म स्थान-लायलपुर (पाकिस्तान)। श्री मदनलाल खुराना का जन्म 15 अक्टूबर 1936 को पाकिस्तान के लायलपुर में सुबह 6 बजकर 10 मिनट पर हुआ। वर्तमान में उन्हें बुध की महादशा में, चंद्रमा के अंतर व राहु के प्रत्यंतर में चल रहे हैं। उनकी कुंडली में दशमेश बुध उच्च का होकर लग्न में स्थित है। इस प्रकार उनकी कुंडली में ''भद्रनामक'' महान

राजयोग बना। इसके अलावा तृतीय भाव को, मंगल चतुर्थ दृष्टि में शनि दशम दृष्टि से देख रहा है। तृतीय भाव में ही बृहस्पति भी स्थित है। यह स्थिति उन्हें कुशल वक्ता, साहसी व महत्वाकांक्षी राजनेता बना रही है। षष्ठेश शनि की तृतीय भाव पर दृष्टि जातक को मेहनती, बार-बार प्रयास करने वाला, हार न मानने वाला बनाती है। राहु-केतु का चतुर्थ-दशम भाव से संबंध होना, जातक के जीवन को पानी की लहर की भांति उपर नीचे होते रहने का संकेत देता है।

वर्तमान में उनके जीवन में बुध की महादशा चल रही है, जो उनकी कुंडली में लग्नेश होकर उच्च का है तथा दशमेश है और लग्न व दशम से भी संबंधित है। बुध महान राजयोग कारक है। उनकी कुंडली में बुध की महादशा में चंद्रमा का अंतर चल रहा है। चंद्रमा उनकी कुंडली में एकादशेश है तथा लग्न में स्थित है और दशमेश से भी संबंध बना रहा है। नवांश में चंद्रमा चतुर्थ भाव में, मित्र की राशि में स्थित है। इसके अलावा उनके जीवन मे बुध की महादशा में राहु का प्रत्यंतर चल रहा है और राहु चतुर्थ भाव में बुध की राशि में स्वयं ही है। इस स्थिति में वे सत्ता को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री नरसिम्हा राव (पूर्व प्रधानमंत्री भारत)

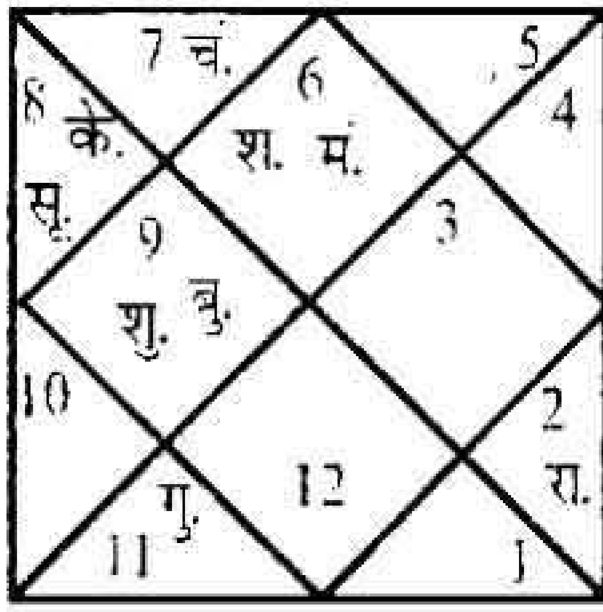




प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश बुध दशम में स्थित होने से "पद्मसिंहासन योग" बना। बुध स्वगृही होने के कारण "भद्र योग" भी बना जो कि पंचमहापुरुष योगों में से एक है। बुध-बुधादित्य योग के कारण बलवान राजयोग की सृष्टि कर रहा है। मंगल दशम भाव में दिक्‌बली होकर प्रबल राजयोग बना रहा है। केवल बुध और मंगल के कारण श्री नरसिम्हा राव संसद में तीन बार अविश्वास प्रस्ताव आने के बाद भी प्रधानमंत्री पद पर बराबर आरूढ़ रहे।

राजबहादुर श्री फतेहसिंह भोंसले

जन्म स्थान-27.11.1891, जन्म समय-2.00 रात्रि, जन्म स्थान-जयपुर (राजस्थान)। प्रस्तुत कुंडली नागपुर के प्रसिद्ध महाराजा राजबहादुर फतेहसिंह राव भोंसले की है।



लग्नेश बुध केंद्र में है। शास्त्र कहता है--

लग्नाधिपतिः केंद्रे बलपरिपूर्णः करोति नृपतुल्यम्।
गोपालकुलेऽपि जातं किं पुनरिह नृपतिसंभूतम्।

—मानसागरी श्लोक 79/पृ. 230

बलवान होकर लग्न का स्वामी केंद्र में स्थित हो तो राजयोग होता है। चाहे भले ही जातक का जन्म ग्वालिए के घर में ही हुआ हो। यहां लग्नेश बुध राजयोग कारक व भाग्येश शुक्र के साथ केंद्रस्थ है। तथा 'पद्मसिंहासन योग' की सृष्टि कर रहा है। शनि राजयोगकारक योग लग्न मे बैठा है तथा उच्चाभिलाषी है। उच्चाभिलाषी गृह उच्च से भी बलवान होते हैं। इस बात की साक्षी यह कुंडली प्रत्यक्ष रूप से दे रही है।

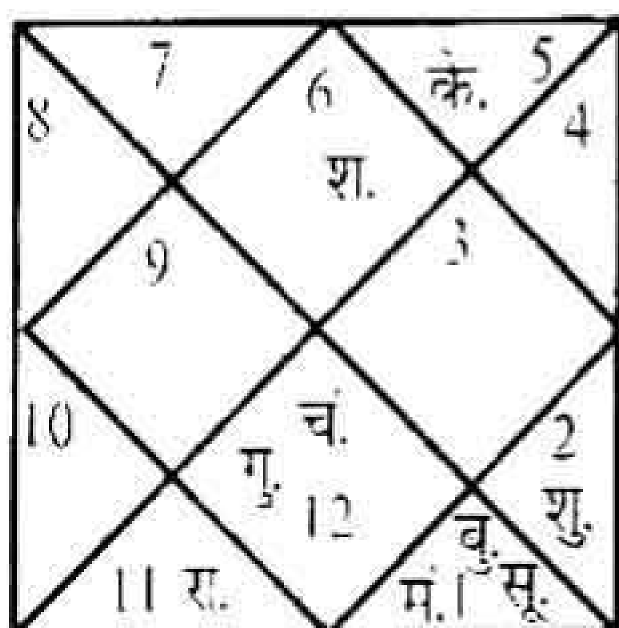
राजस्थान में महासंग्राम,
अशोक गलहोत बनाम वसुन्धरा राजे

इस बार चुनावी रंगत जोरों पर है। मुख्यमंत्री अशोक गलहोत ने जोधपुर की सरदारपुरा सीट से चुनाव लड़ा, जबकि वसुन्धरा राजे भी झालावाड़ से चुनाव लड़ने का मन बना चुकी थीं, दोनों ही मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार अपनी-अपनी जीत के प्रति आश्वस्त थे, अखबारों के सर्वेक्षण प्राय: पार्टी द्वारा आयोजित होते हैं, जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। ऐसे में जन्मकुंडली ही एक मात्र आधार है जिसके शास्त्रीय विवेचन पर विश्वास किया जा सकता है।

- ❑ अशोक गलहोत राजस्थान के पुन: मुख्यमंत्री नहीं बन पायेंगे।
- ❑ राजस्थान में इस बार तीसरी शक्ति का उदय होगा।
- ❑ नई सरकार के गठन में बसपा, सामाजिक न्याय मंच, इनेलो एवं निर्दलीय व्यक्तियों का हाथ होगा।

- सोनिया गांधी कभी भी भारत के प्रधानमंत्री पद पर नहीं पहुंच पायेंगी।
- राजस्थान विधानसभा चुनावों में इस बार कांग्रेस अपनी पिछली स्थिति, प्रतिष्ठा (151 सीटों को नहीं बचा पायेगी।
- भाजपा की सीटों में निश्चित रूप से बढ़ोतरी होगी।

अशोक गहलोत

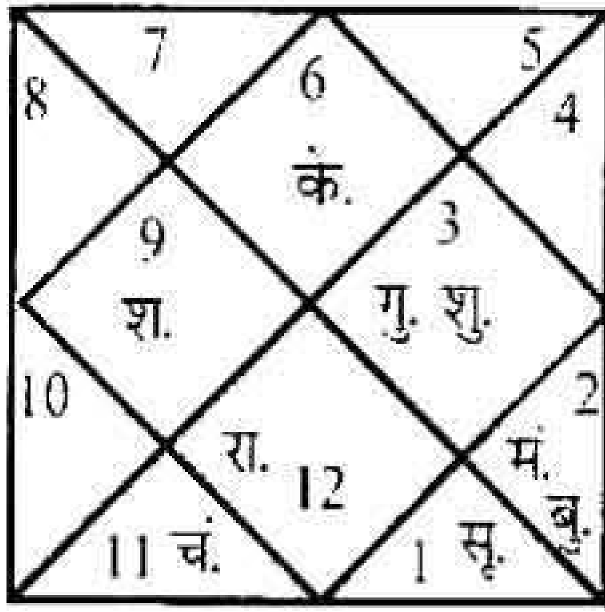




जन्म स्थान-3.5.1956, जन्म समय-16.00 सायं, जन्म स्थान-जोधपुर। श्री अशोक गहलोत की कुण्डली में 1. कुलदीपक योग, 2. गजकेसरी योग, 3. हंस योग, 4. किम्बहुना योग, 5. विमल नामक विपरीत राजयोग बना है। 6. उभयचारी योग, 7. मीन के नवमांश में है। जहां शनि स्वगृही, मंगल स्वगृही, बृहस्पति के शुक्र केन्द्रवर्ती होने से बलवान है। श्री अशोक गलहोत को इस समय चंद्रमा की महादशा में शनि का अंतर चल रहा है। चंद्रमा लाभेश होकर केन्द्र में है। शनि पंचमेश व षष्टमेश होकर लग्न में है। अत: मिश्रित फलकारी है जो कि 10.8.2002 से 11.3.2004 तक चलेगा। इसमें बुध का प्रत्यन्तर 10.11.2002 से लगेगा जो कि 31.1.2004 तक चलेगा तथा लग्नेश राज्येश होकर खड्डे आठवें स्थान में जाने से लग्नभंग योग एव राज्यभंग योग बना है। उपरोक्त कुण्डली मुझे स्व. बाबू लक्ष्मण सिंह गहलोत के माध्यम से प्राप्त हुई है। जिसमें सूर्योदयात् इष्ट घटी 24/56/07 दी गई है। जबकि श्री अशोक की मिथुनलग्न वाली कुण्डली ज्यादा प्रचलित है जिस पर चर्चा जयपुर में आयोजित एक ज्योतिष सम्मेलन पर विशेष रूप से हुई थी। इस प्रकार दैनिक भास्कर में श्री अशोक गहलोत की मीनलग्न वाली कुण्डली प्रकाशित हुई है। यदि कन्यालग्न वाली कुण्डली सही है तो इस बार अशोक गहलोत अपना नेतृत्व नहीं बचा पायेंगे।

वसुन्धरा राजे

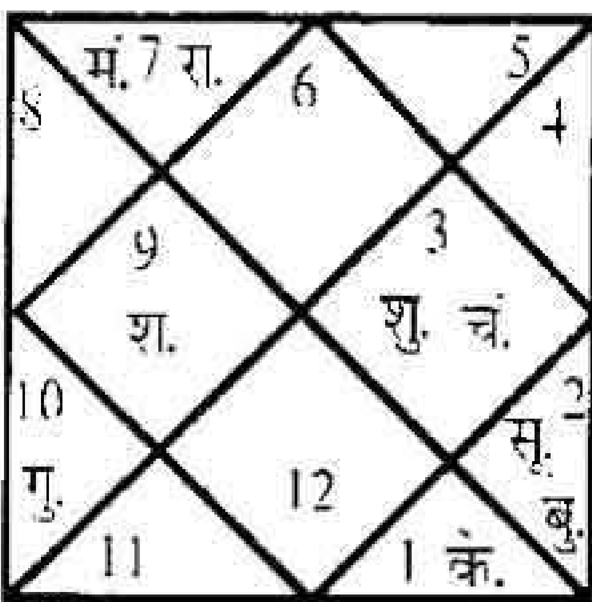
जन्म स्थान-9.3.1953, जन्म समय-16.45 रात्रि, जन्म स्थान-मुम्बई। श्रीमति वसुन्धरा राजे की कुण्डली में 1. कुलदीपक योग, 2. शशनामक राजयोग, 3. केसरी





योग, 4. आसमुद्रात नामक राजयोग, 5. उभयचारी योग बना। श्री वसुन्धरा राजे की नवमांश कुण्डली भी मीनलग्न वाली है जहां बुध उच्च का, चंद्रमा उच्च का, शुक्र स्वगृही होने से किम्बहुना नामक राजयोग बना। इसके साथ शनि वर्गोत्तमी होने से महाबलशाली है। श्रीमति वसुन्धरा राजे को इस समय राहु की महादशा में गुरु का अंतर चल रहा है। राहु सप्तम स्थान में मित्र राशि में है। जबकि बृहस्पति षष्टमेश व भाग्येश होकर केन्द्र में है जो 12.10.2003 से 6.3.2006 तक रहेगा। निश्चय ही दशा उन्हें उत्कर्ष की ओर ले जा रही है। इस समय बृहस्पति की अंतर दशा में बृहस्पति का प्रत्यंतर चल रहा है जो कि 12.10.2003 से 6.2.2004 तक चलेगा। बृहस्पति सुखेश व राज्येश शुक्र के साथ युति करके बैठा है, यदि उपलब्ध जन्मकुंडली सही है वो भाग्येश बृहस्पति वसुन्धरा राजे का भाग्योदय करायेगा और परिवर्तन की जो लहर उन्होंने अपने एजेन्डा में चलाई है उसमें उन्हें काफी कुछ सफलता मिलेगी। गोचर का बृहस्पति श्री वसुन्धरा राजे की कुण्डली में जन्म के बृहस्पति को देख रहा है। फलतः यह स्थिति बहुत ही अनुकूल है जबकि अशोक गहलोत की कुंडली में बृहस्पति का बारहवें होना ज्यादा शुभद नहीं है।

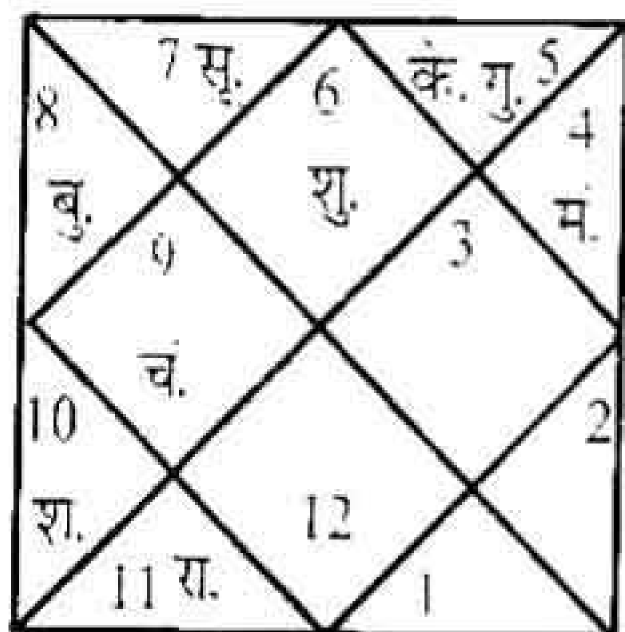
शेख मुजीबर्रहमान (प्रधानमंत्री-बंगलादेश)





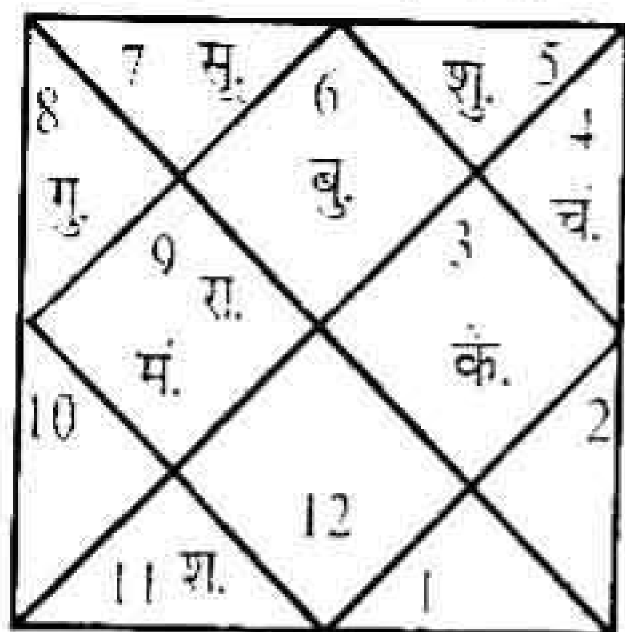
शेख मुजीबर्रहमान बंगलादेश के क्रांतिकारी नेता 'बंगबंधु' के नाम से विश्व में पहचाने जाते थे। उनके परिवार की निर्मम हत्या पाकिस्तान के सैनिक आक्रमण से हुई। जिसके लिए अष्टमेश मंगल एवं राहु जिम्मेदार रहे।

श्री गोपीचंद अग्रवाल (मुख्य कमिश्नर आयकर)



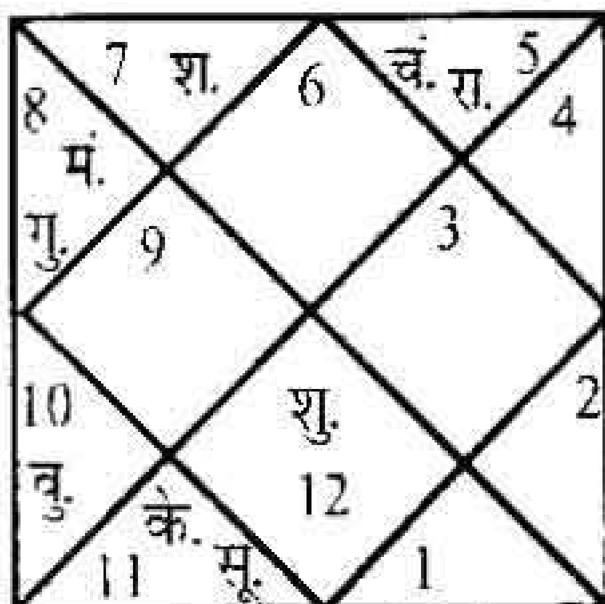
वि.स. 1989, कार्तिक कृष्ण-4, जन्म स्थान- कानपुर, इष्ट 56/1। श्री गोपीचंद्र जी अग्रवाल धार्मिक मनोवृत्ति वाले, सात्विक स्वभाव के उच्च पदाधिकारी हैं। वे ट्रिबीनल के सदस्य भी रहे एवं आयकर विभाग के उच्चस्थ पदों को सुशोभित करते रहे। उनके राजयोग में शनि की भूमिका प्रबल रही है।

श्री रामसिंह विश्नोई (कृषि मंत्री, राजस्थान सरकार)



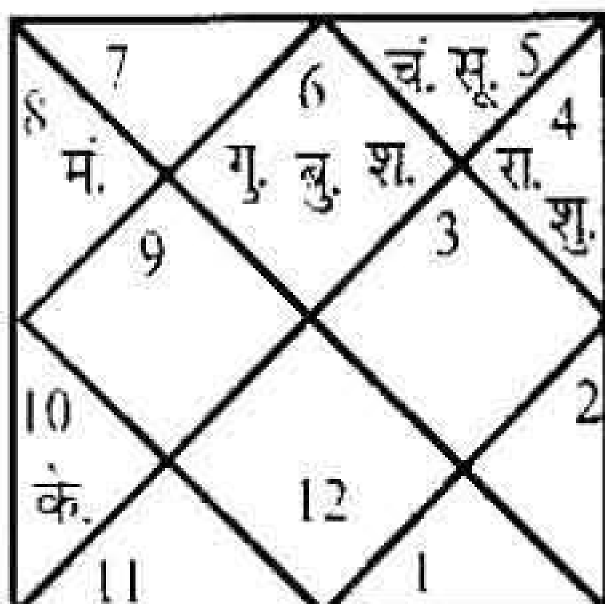
जन्म तिथि-20.10.1935, जन्म समय-4.36 बजे प्रात:, जन्म स्थान तिलवासनी। लूणी विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण अंचल से श्री रामसिंह विश्नोई छ: बार से अधिक विधायक पद पर चुने गये हैं। वे कांग्रेस के कद्दावर एवं दिग्गज नेता हैं जो जमीन से जुड़े हुए हैं। पंचमेश शनि खड्डे (6th house) में जाने के कारण, अपनी संतान के कारण दो बार उन्हें मंत्री पद से त्याग-पत्र देना पड़ा। वर्तमान में उन्हें चंद्रमा की महादशा में सूर्य का अंतर चल रहा है। चंद्रमा स्वगृही है परन्तु सूर्य व्ययेश होकर नीच का है फलत: दशा अत्यधिक संघर्षमय है।

श्री पूनमचन्द विश्नोई (पूर्व मंत्री, विधानसभा अध्यक्ष)



शुक्र उच्च का केन्द्र में होने के कारण 'मालव्य' नामक महान राजयोग बना। जिसके कारण उन्होंने कई वर्षों तक सत्ता सुख को भोगा।

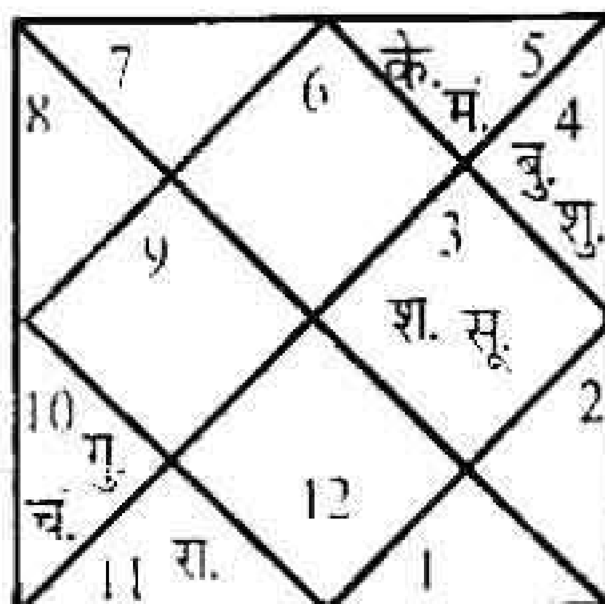
डॉ. राधाकृष्ण (पूर्व राष्ट्रपति)





जन्म तिथि–5.9.1888, जन्म समय–8.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान– तिरुतनी (मद्रास)।

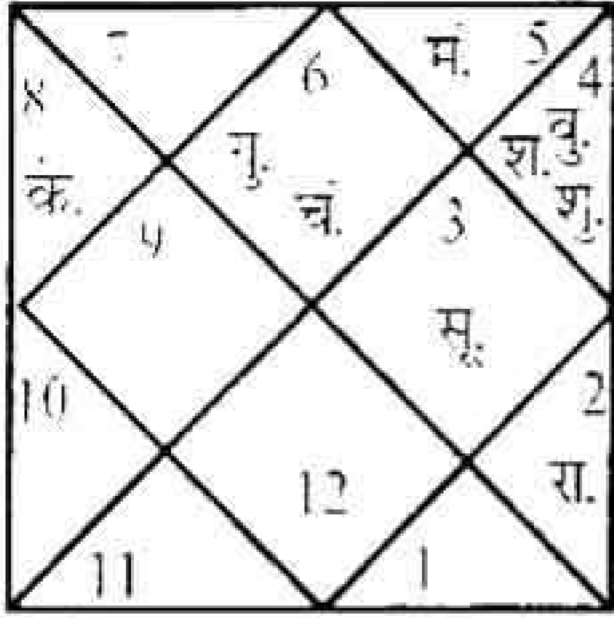
ज्योति बसु (पूर्व मुख्यमंत्री) पं. बंगाल





जन्म तिथि–8.7.1914, जन्म समय– 11.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान- कलकत्ता।

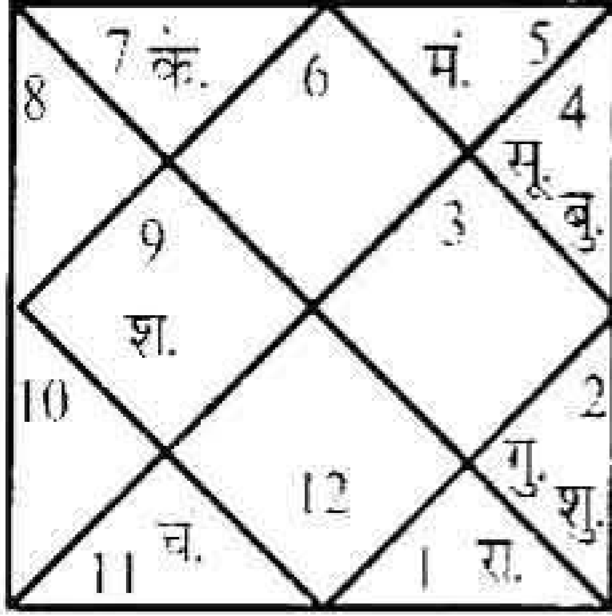
श्री रामविलास पामवान





जन्म तिथि- 5.7.1946, जन्म समय-12.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान- मधुबनी (बिहार)।

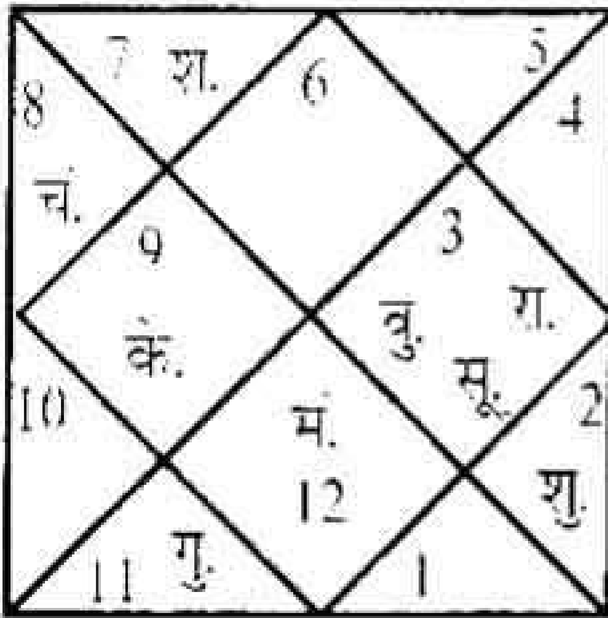
श्री सिद्धार्थ शंकर रे





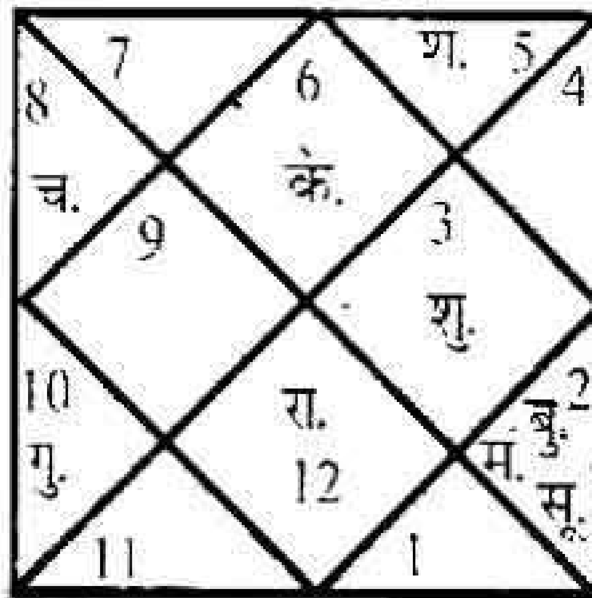
जन्म तिथि-25.7.1929, जन्म समय-9.31 बजे प्रातः, जन्म स्थान- कलकत्ता।

श्री परसराम मदेरणा



जन्म तिथि-23.6.1926, जन्म समय-12.30 बजे प्रातः, जन्म स्थान- चांदी (जोधपुर), वरिष्ठ कांग्रेस नेता।

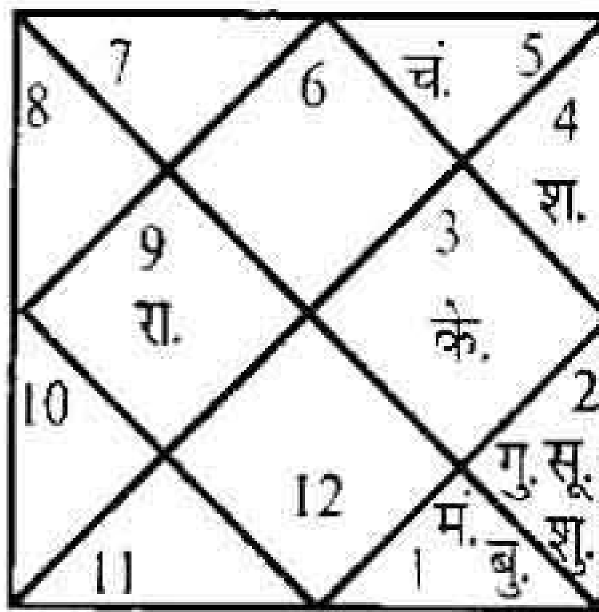
श्रीमति किरण बेदी (D.G.)





जन्म तिथि–9.6.1949, जन्म समय–14.10 बजे , जन्म स्थान–अमृतसर।

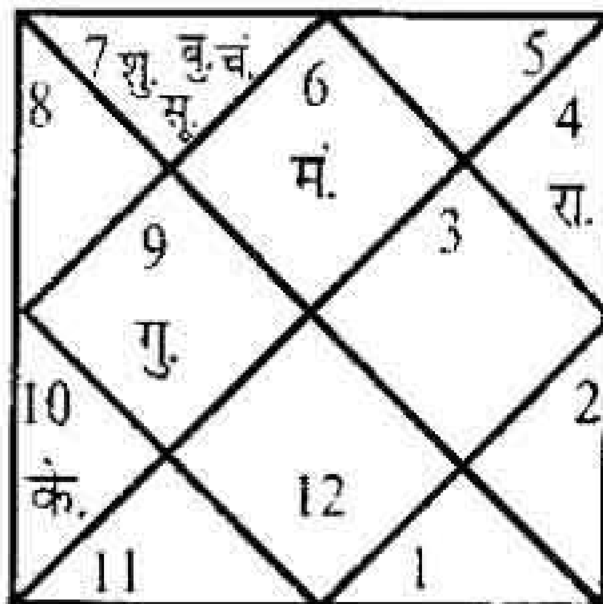
श्री जार्ज कैनेडी





पूर्व राष्ट्रपति, अमेरिका।

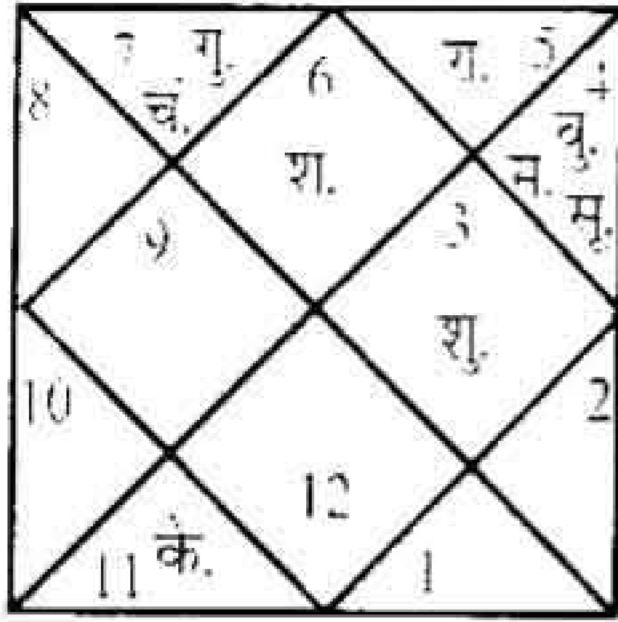
श्री नारायणदत्त तिवारी





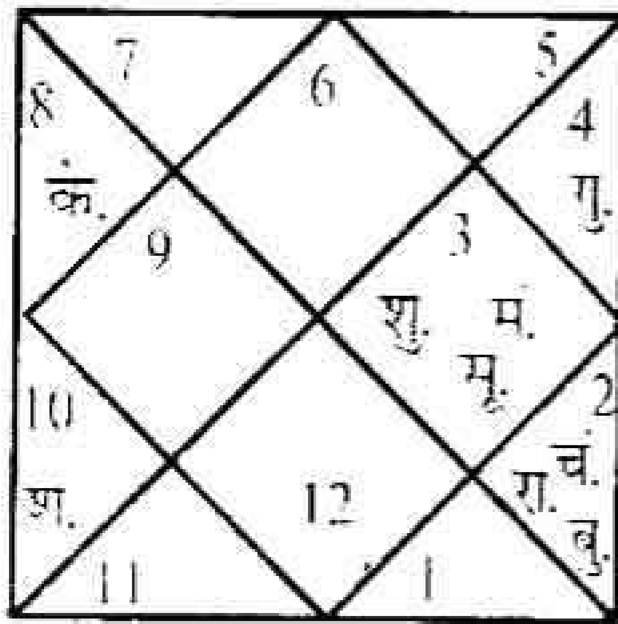
जन्म तिथि–18.10.1925, जन्म समय–5.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान- उत्तर प्रदेश (मुख्यमंत्री. उत्तरांचल)।

पार्श्व गायक मुकेश



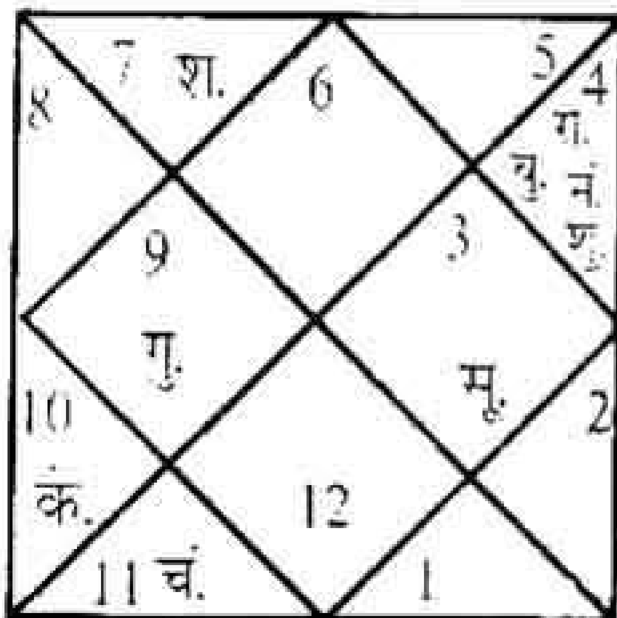


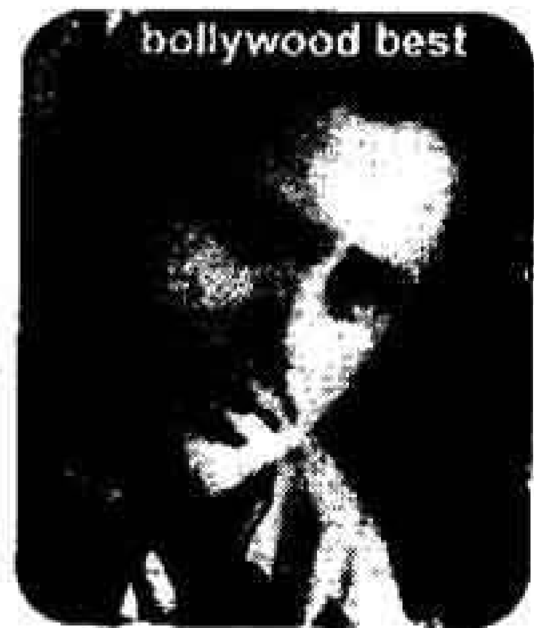
मल्लिका सुरैया (ईरान)





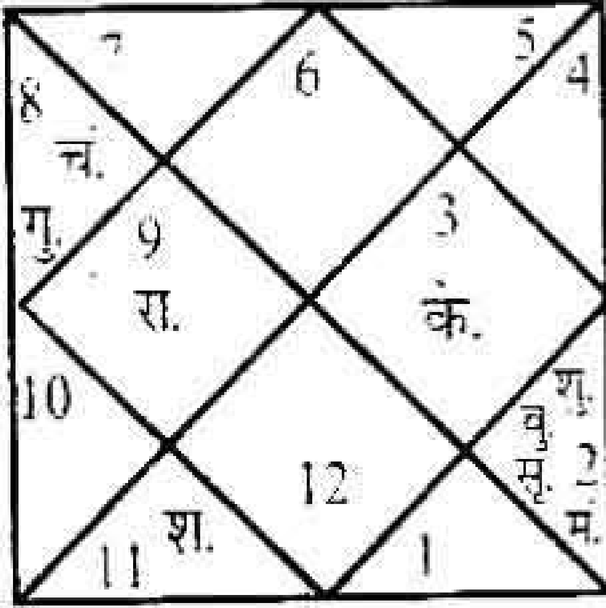
फिल्म अभिनेता स्व. गुरुदत्त





जन्म तिथि–19.7.1925, जन्म समय–12.00 बजे, जन्म स्थान–बंगलौर

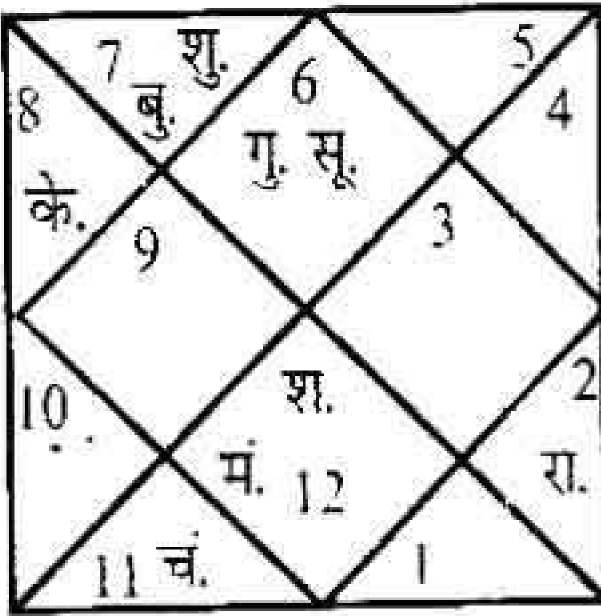
अभिनेत्री नूतन





जन्म तिथि–4.6.1936, जन्म समय–14.15 बजे प्रातः, जन्म स्थान– मुम्बई।

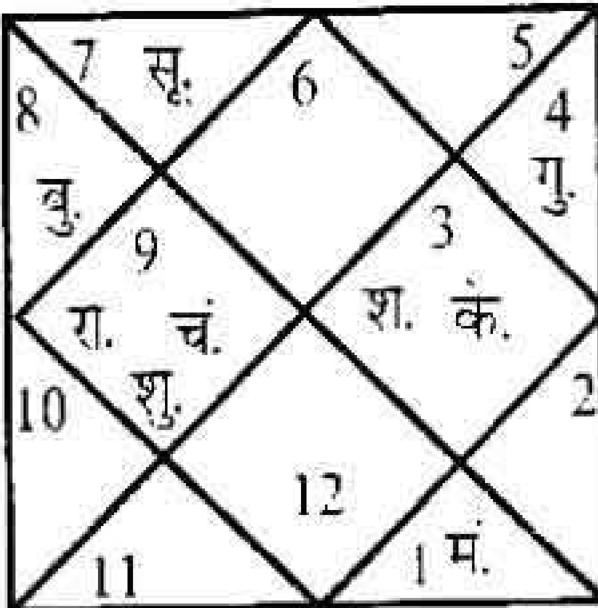
अभिनेता जयराज





लम्बी उम्र के अभिनेता। जन्म तिथि–28.9.1909, जन्म समय–6.30

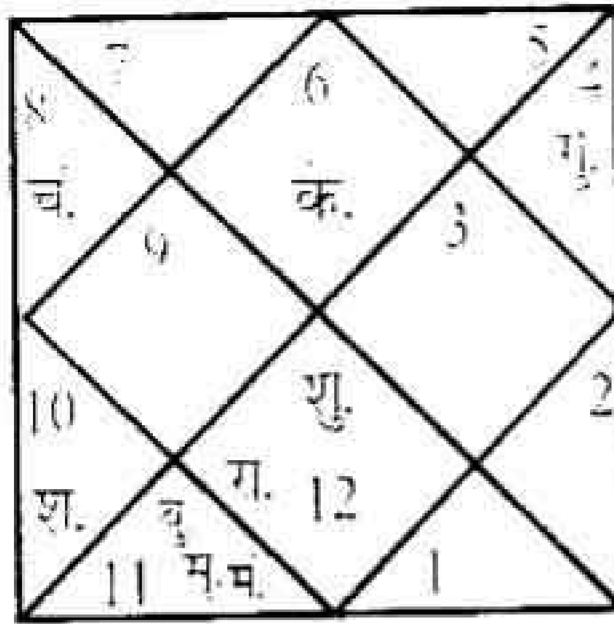
भारत सुन्दरी, अभिनेत्री ऐश्वर्या राय





जन्म तिथि–1.11.1973, जन्म समय–4.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान–मंगलोर (कर्नाटक)।

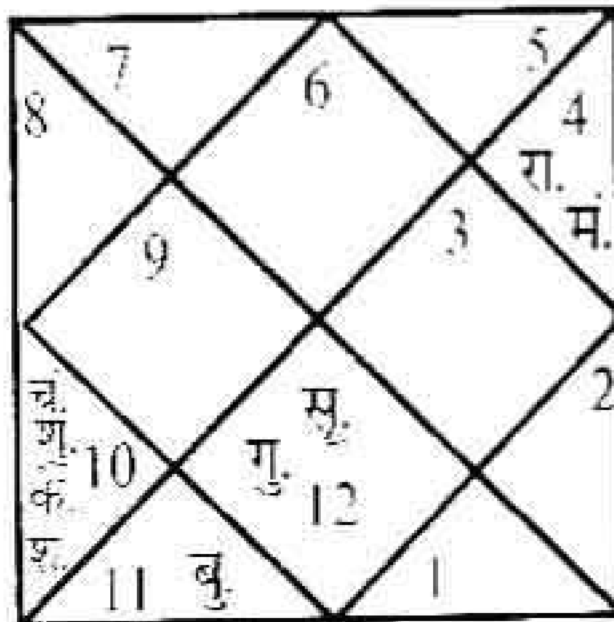
ऐलिजाबेथ टेलर





जन्म तिथि -27.2.1932, जन्म समय - 9.00 बजे।

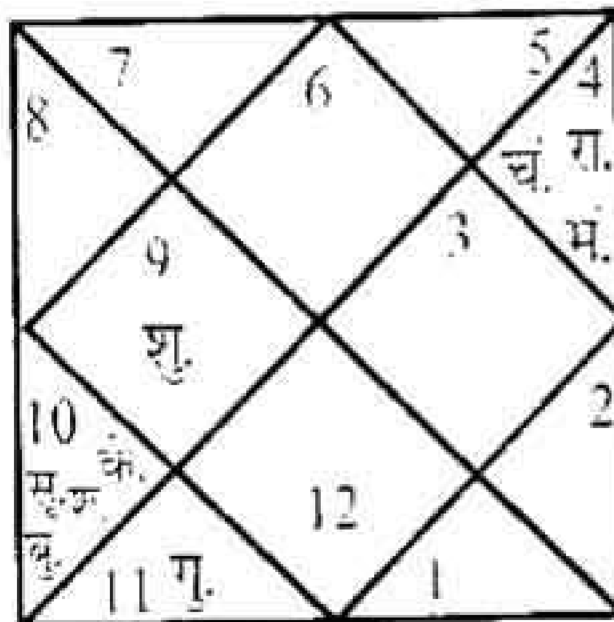
अल्का याज्ञिक





जन्म तिथि–20.3.1963, जन्म समय -19.02 बजे सायं, जन्म स्थान- कलकत्ता (बंगाल)। बृहस्पति के कारण इस कुण्डली में बना हंसयोग। सूर्य और गुरु ने इन्हें सौन्दर्य दिया तथा शुक्र+चंद्र की युति ने दी बेपनाह खूबसूरती।

मोहम्मद अजहर





जन्म तिथि–8.2.1963, जन्म समय–10.40 रात्रि, जन्म स्थान- हैदराबाद।

सचिन तेंदुलकर

8 7 6 5 4
9 3
चं. रा. कें.
10 बु.
मं. श. 2
गु. 12 1
11 सू. शु.



जन्म तिथि–21.4.1973, जन्म समय -18.00 बजे, जन्म स्थान-मुम्बई।

शान पोलक

8 7 6 5 4
सू. बु.
9 3 शु.
रा. श. कें.
10 मं. 2
गु. चं. 12
11 1



कप्तान दक्षिण अफ्रीका। जन्म तिथि–16.6.1966, जन्म नक्षत्र–श्रवण, जन्म स्थान–डरबन।

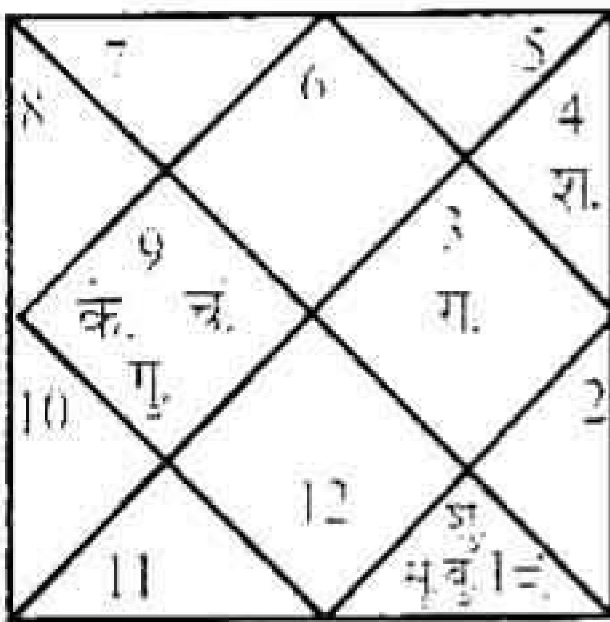
कार्ल हूपर

8 7 कें. 6 5 4
बु. मं. गु.
सू. 9 3
10 शु. 2
12
11 श. 1 रा.



कप्तान वेस्ट इंडीज, जन्म तिथि– 15.12.1966, **जन्म समय**–4 बजे, जन्म स्थान–गयाना।

विश्व का क्रूर तानाशाह एलोल्फ हिटलर





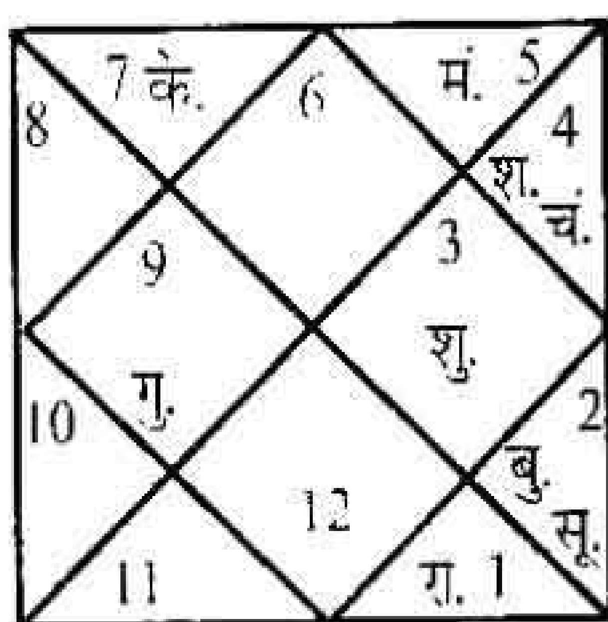
जन्म तिथि 20.4.1889, जन्म समय-5.30 बजे सायं:, जन्म स्थान-जर्मन। हिटलर का जन्म एक कस्टम अधिकारी की तीसरी बीवी से, तीसरे पुत्र के रूप में 20 अप्रैल 1889 को बेवेरिया के एस्ट्रो-जर्मन फ्रंटियर के पास गेस्नोफ जम पासर नामक कस्बे में हुआ। उसका जन्म केतु-शनि की दशा में तब हुआ था, जब पूर्व क्षितिज पर कन्यालग्न अपने अंतिम चरण में था। उसके अष्टम भाव (दुष्ट स्थान) से जुड़े केतु के इन्द्र (मस्तिष्क) पर तीव्र प्रभाव पूर्व जन्मों की दुष्ट प्रवृत्तियों का संकेत देता है। लग्न का अष्टमेश मंगल के नक्षत्र में तथा लग्नेश बुध का अष्टम में होना भी इस प्रवृत्ति की पुष्टि करता है। केतु की छाया में कर्म स्थान को देखता हुआ गजकेसरी योग प्रतिशोधयुक्त आत्म सम्मान एवं नवांश का केतु तथा मंगल (क्रूरता) व मारक शुक्र के साथ पराक्रम स्थान में होना जातक के खूनी पराक्रम को दर्शा रहा है।

उसकी कुण्डली में सबसे विस्फोटक योग है अष्टमेश मंगल व षष्टेश शनि का आपस में दृष्ट होना। ये दोनों योग तानाशाही, नेतृत्व की ताकत के साथ ही साथ अकाल मृत्यु की ओर भी संकेत करते हैं। यही कारण है कि 1894 के मारक तत्त्व लिए शुक्र की दशा में हिटलर की जिंदगी तनावपूर्ण एवं झटकों से भरी रही। 1895 में फशल्हम गांव व लिंज के स्कूल में पढ़े हिटलर को छाती के रोग के कारण कई साल तक घर बैठना पड़ा। शुक्र-राहु की दशा में (1903) में पिता की मृत्यु के बाद तो उस पर जैसे मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा।

फ्रांस की चाल की मोहरा बनी बावेरियन सरकार के साए में 1913 तक हिटलर दर-दर की ठोकरें खाता रहा। 1914 से 1920 तक उच्च के द्वादशेश सूर्य की दशा ने उसके क्रूर मस्तिष्क में फ्रांसीसियों के प्रति नफरत को और प्रचंड कर दिया। 1920 से 1930 तक चंद्र की दशा में (गजकेसरी योग) बावेरियन सरकार के खिलाफ हिटलर की बगावत सामने आ गई। 26 जनवरी 1924 को चंद्र-गुरु (गजकेसरी योग) की दशा में बगावत के जुर्म में स्थानीय "पीपल्स कोर्ट" ने उसे

जेल की सजा सुनाई। उसके बाद तो हिटलर के बागी तेवर पर जर्मन प्रभाव हावी होता गया। 1930 से 1937 तक मंगल (पराक्रम) की दशा ने अपना रंग दिखाया और हिटलर ने बागी तेवर से जर्मन के तमाम प्रांतों को मिलाकर उस नाजी हसरत को जन्म दिया, जिसने 1937 से शुरू हुई राहु की दशा में हिटलर के क्रूर प्रकोप ने पूरे संसार को हिलाकर रख दिया। इस विश्व युद्ध में हजारों लोगों की बलि चढ़ी और लाखों घर बर्बाद हुए। 1942 से शुरू हुए शनि की अंतर ने हिटलर के अंतर्मन को इतना प्रचंड कर दिया कि खुद हिटलर भी उसमें समा गया। शनि- मंगल के दुष्पप्रभाव से ग्रस्त यह दशा हिटलर के लिए आखिरकार घातक सिद्ध हुई।

इजराइल राष्ट्र की कुण्डली

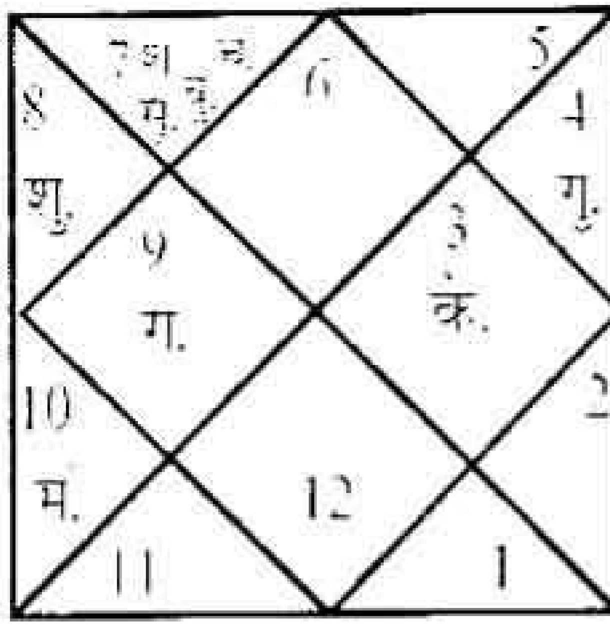




जन्म तिथि-14.5.1948, जन्म समय-15.50 बजे, जन्म स्थान-तेलहबीब इजराइल। इजराल के जन्म की कहानी बड़ी रोमाचंक है। विश्व का प्राचीनतम धर्म यहूदी धर्म है। किन्तु ईसाई और इस्लाम धर्मों के उद्भव के बाद यहूदियों को अपना जन्म स्थान (मातृभूमि) छोड़कर भागना पड़ा। फिलीस्तीन, तेल अबीब, येरूशलम् यहूदियों की जन्मभूमि है। प्रथम महायुद्ध समाप्त होने पर अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने यहूदियों को उनकी जन्मभूमि वापस सौंपने का फैसला 'बाल्फर डिक्लेरेशन' में किया। इसके बाद 14 मई 1948 को इजराइल का जन्म कन्यालग्न में दोपहर 3.50 को हुई। कर्क के शनि ने इजराइल को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिर भी यहूदियों व पड़ोसी राष्ट्र मुस्लिम देशों के मध्य विस्फोट धार्मिक उन्माद इजराइल की सम्प्रभुता के लिए खतरा बन चुका है।

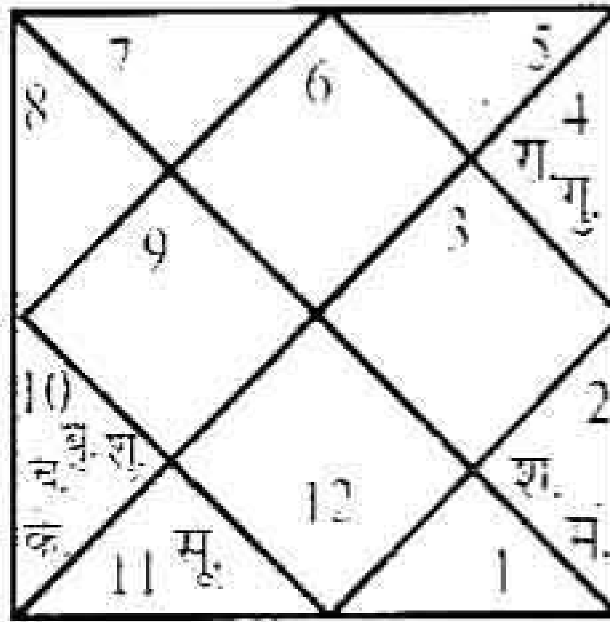
वकील तेजप्रकाश

जन्म तिथि-28.10.1951, जन्म समय-4.52 बजे प्रातः, जन्म स्थान-अमरावती। जातक का पंचमेश शनि उच्च का है। पंचम स्थान में मंगल उच्च का, बृहस्पति उच्च



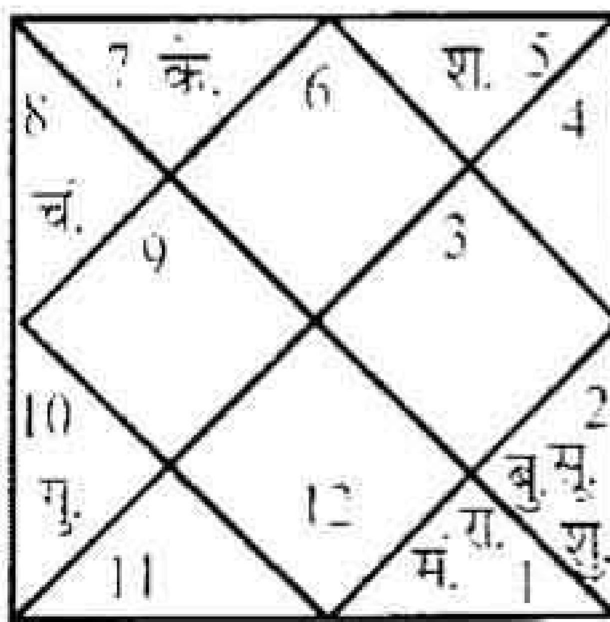
का है। परस्पर नीच दृष्टि संबंध है। जातक की पुत्र संतति नहीं है। एक कन्या है। आर्थिक स्थिति अत्यन्त श्रेष्ठ है।

भंवरलाल धींगरा



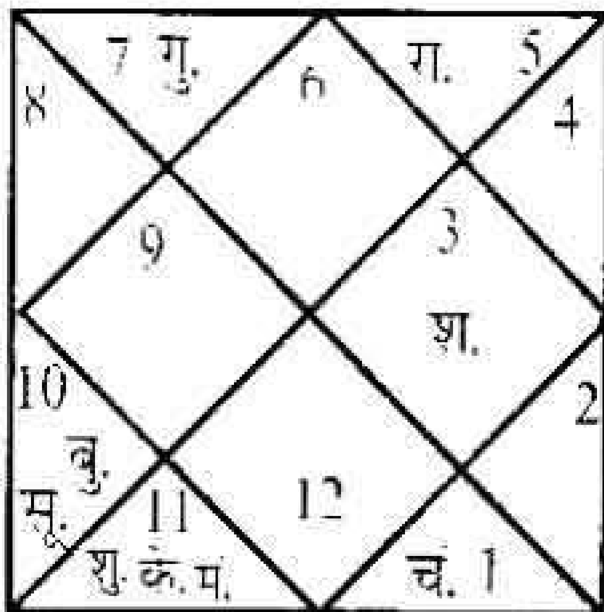
जन्म तिथि-22.2.1944, जन्म समय-22.40 बजे, जन्म स्थान-भीनमाल। जातक के छ: कन्याएं हैं कोई पुत्र नहीं है। पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा पंचम स्थान में चारों ग्रह स्त्रीकारक हैं।

श्री राजेन्द्र अरोड़ा



जन्म तिथि-16.5.1949, जन्म समय-16.30 बजे, जन्म स्थान-दिल्ली। जातक के 'द्विभार्या योग' है। पहली पत्नी की मृत्यु भंयकर दुर्घटना में 9.10.1991 को हुई। दूसरी पत्नी मानसिक विक्षिप्त रहती है। प्रथम कन्या संतति हुई। फिर एक पुत्र है। द्विभार्या योग राहु+मंगल आठवें होने से बना।

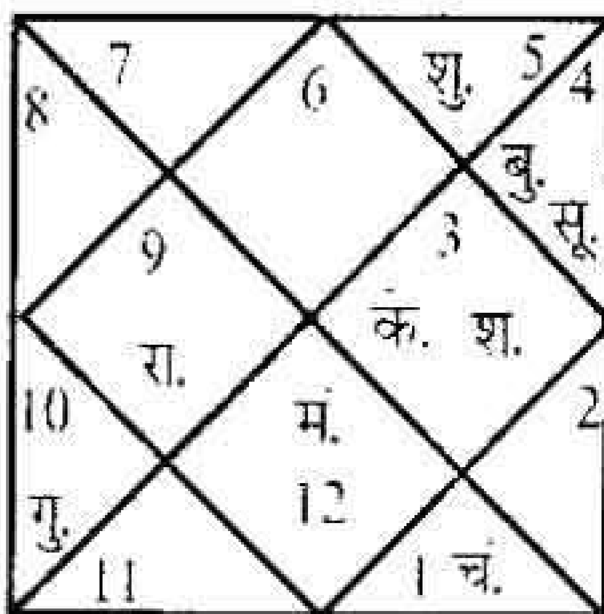
चार्ल्स ई. ओ. कार्टर





जन्म तिथि-31.1.1887, जन्म समय-22.55 बजे प्रात:, जन्म स्थान-दिल्ली। जातक महान धनी व्यक्ति है। दिमाग से सनकी है। यद्यपि धनेश शुक्र खड्डे (6th house) में है। परन्तु अष्टमेश मंगल छठे जाने से विपरीत राजयोग बना। जिससे जातक अरब-खरबपति है।

मोनिका लेविंस्की





जन्म तिथि-23.7.1973, जन्म समय-11.00 बजे, जन्म स्थान-सेन फ्रांसिस्को।

❑❑❑